RNI NO.UPHIN/2010/36547
वर्ष 14 अंक 176
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 18 अप्रैल, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
लखनऊ
नगर संस्करण

लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पायनियर

मोदी लहर है
मोदी लहर
रहेगी
राष्ट्रीय-10

www.dailypioneer.com

पांच सदी बाद हुआ रामलला का सूर्यतिलक

बिस्वजीत बनर्जी। अयोध्या

एक अभूतपूर्व घटना में बुधवार सुबह ठीक 11.58 बजे दिव्य सूर्य की रोशनी राम लला के माथे पर पड़ी, जो सूर्य अभिषेक अनुष्ठान की शुरुआत की प्रतीक थी। पवित्र शहर अयोध्या में हर्षोल्लास के बीच चार मिनटों तक यह मनमोहक और दिव्य दृश्य चला। अयोध्या में रामलला का सूर्य तिलक दर्पण और लेंस से युक्त एक विस्तृत तंत्र के माध्यम से किया गया। मंदिर के प्रमुख पुजारी पंडित सत्येन्द्र दास ने कहा, यह भगवान राम के सभी भक्तों के लिए एक असाधारण क्षण है। सूर्य अभिषेक सदियों की लालसा के बाद भगवान राम की जन्मभूमि पर बरसाए गए दिव्य आशीर्वाद का प्रतीक है। सूर्य तिलक, राम लला के माथे पर सुशोभित एक दीप्तिमान चिह्न, भगवान राम के जन्म और गहन आध्यात्मिक आकांक्षा की प्राप्ति के एक मनमोहक प्रतीक के रूप में कार्य करता है।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)-केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रूड़की के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक के अनुसार, तिलक का नियोजित आकार 58 मिमी था। उन्होंने बताया कि माथे के केंद्र पर तिलक की सटीक अवधि लगभग तीन से साढ़े तीन मिनट थी, जिसमें दो मिनट की पूर्ण रोशनी थी। अत्याधुनिक वैज्ञानिक विशेषज्ञता का उपयोग करते हुए, रामलला के माथे पर 5.8 सेंटीमीटर प्रकाश की किरण निर्देशित की गई। इस उल्लेखनीय घटना को क्रियान्वित करने के लिए एक विशेष उपकरण सावधानीपूर्वक तैयार किया गया था। राम मंदिर में तैनात दस प्रतिष्ठित भारतीय वैज्ञानिकों की एक टीम ने सावधानीपूर्वक राम नवमी पर इस शुभ आयोजन की सफलता सुनिश्चित की। लगभग 3 से 3.5 मिनट तक दोपहर 12 बजे से ठीक पहले दर्पण और लेंस के संयोजन का उपयोग करके सूरज की रोशनी को मूर्ति के माथे पर सटीक रूप से केंद्रित किया गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव अभय करंदीकर ने कहा, राम नवमी पर अयोध्या में राम लला की मूर्ति के माथे को सूर्य तिलक से सजाने की यह परंपरा अब एक वार्षिक अनुष्ठान बन जाएगी। हालांकि, मंदिर के चल रहे निर्माण के कारण, सूर्य तिलक बनाने के लिए जिम्मेदार ऑप्टिकल तंत्र के डिजाइन में समायोजन की आवश्यकता होगी।

इस घटना से पूरे देश में हर्षोल्लास फैल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में साझा किया, मेरी नलबाड़ी रैली के बाद मैंने राम लला पर सूर्य तिलक देखा। लाखों भारतीयों की तरह, यह मेरे लिए एक गहरा भावनात्मक क्षण है। अयोध्या में भव्य राम नवमी उत्सव ऐतिहासिक है। यह सूर्य तिलक हमारे जीवन को ऊर्जा से भर दे और हमारे राष्ट्र को गौरव की (शेष पेज 9)

पहले चरण के लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार की अवधि समाप्त

राजेश कुमार। नई दिल्ली

21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) की 102 संसदीय सीटों पर पहले चरण के मतदान के लिए प्रचार अभियान, जहां 19 अप्रैल को मतदान होगा, बुधवार शाम 5 बजे समाप्त हो गया। अंतिम दिन चुनाव प्रचार में तेजी रही और पार्टियां मतदाताओं को लुभाने के लिए अंतिम क्षण में भी प्रयास किया। लू की स्थिति और गरज और बिजली के साथ असमय बारिश ने इस चरण में चुनाव प्रचार को प्रभावित किया था। प्रधानमंत्री ने पिछले कुछ दिनों में विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों का तूफानी दौरा किया, रैलियों को संबोधित किया और रोड शो किए तथा इस बात पर जोर दिया कि वह 2014 में आशा, 2019 में विश्वास और 2024 में गारंटी के साथ लोगों के पास गए। कई बार उन्होंने कहा पूरे देश में मोदी की गारंटी है और मैं इन सभी गारंटी को पूरा करने की गारंटी दे रहा हूं। मोदी ने असम के नलबाड़ी और त्रिपुरा के अगरतला में दो चुनावी रैलियां कीं और पूर्वोत्तर राज्यों में चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि पार्टी ने पूर्व को लूटो नीति अपनाई है जबकि भाजपा ने (शेष पेज 9)

राज्य या केंद्र शासित प्रदेश	लोकसभा क्षेत्र
अंडमान निकोबार द्वीप	अंडमान निकोबार द्वीप
अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश ईस्ट, अरुणाचल प्रदेश वेस्ट
असम	डिब्रूगढ़, जोरहाट, काजीरंगा, लखीमपुर, सोनितपुर
बिहार	औरंगाबाद, गया, जमुई, नवादा
छत्तीसगढ़	बस्तर
जम्मू और कश्मीर	उधमपुर
मध्य प्रदेश	छिंदवाड़ा, बालाघाट, जबलपुर, मंडला, सीधी, शहडोल
महाराष्ट्र	नागपुर, चंद्रपुर, भंडारा–गोंदिया, गढ़चिरौली–चिमूर, रामटेक
मणिपुर	भीतरी मणिपुर, बाहरी मणिपुर
मेघालय	शिलांग, तुरा
मिजोरम	मिजोरम
नगालैंड	नगालैंड
पुडुचेरी	पुडुचेरी
राजस्थान	गंगानगर, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर, जयपुर
सिक्किम	सिक्किम
तमिलनाडु	तिरुवल्लुर, चेन्नई उत्तर, चेन्नई दक्षिण, चेन्नई सेंट्रल, श्रीपेरुम्बुदूर, कांचीपुरम, अराक्कोनम, वेल्लोर, कृष्णागिरी, धर्मपुरी, तिरुवन्नमलाई, अरणी, विलुप्पुरम, कल्लाकुरिची, सलेम, नामक्कल, इरोड, तिरुप्पुर, नीलगिरी, कोयंबटूर, पोलाची, डिंडीगुल, करूर, तिरुचिरापल्ली, पेरम्बलुर, कुड्डालोर, चिदम्बरम, मयिलादुथुराई, नागपट्टिनम, तंजावुर, शिवगंगा, मदुरै, थेनी, विरुधुनगर , रामनाथपुरम, थूथुकुडी, तेनकासी, तिरुनेलवेली, कन्नियाकुमारी
त्रिपुरा	त्रिपुरा पश्चिम
उत्तराखंड	टेहरी गढ़वाल, गढ़वाल, अल्मोडा, नैनीताल–उधमसिंह नगर, हरिद्वार
उत्तर प्रदेश	पीलीभीत, सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, बिजनोर, नगीना, मोरादाबाद, रामपुर
पश्चिम बंगाल	कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी

भारी बारिश से दुबई में सब ठप

दुबई में भारी बारिश के बाद अधिकांश मुख्य सड़कें बाढ़ के पानी में डूब गईं। बहुत से लोगों को अपने वाहनों को छोड़ना पड़ा।

एपी/पीटीआई। दुबई

रेगिस्तानी देश संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में मंगलवार को रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई, जिससे अधिकतर क्षेत्रों में लोगों को भारी जलभराव का सामना करना पड़ा। भारी बारिश के चलते दुबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे में बाढ़ जैसे हालात बनने से बड़े पैमाने पर उड़ानें प्रभावित हुईं।

सरकारी समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएम की खबर के मुताबिक, मंगलवार को हुई बारिश एक ऐतिहासिक मौसमी घटना है, जो 1949 में डेटा संग्रह की शुरुआत के बाद से दर्ज की गई सबसे अधिक वर्षा है। बहरीन, ओमान, कतर और सऊदी अरब में भी बारिश हुई। हालांकि, पूरे संयुक्त अरब अमीरात में तेज बारिश देखी गई। माना जा रहा है कि क्लाउड सीडिंग भारी बारिश का कारण बनी क्योंकि सरकार ने कृत्रिम बारिश के प्रयास के तहत छोटे विमान तैनात किए थे। कई रिपोर्ट में राष्ट्रीय मौसम विज्ञान केंद्र के मौसम विज्ञानियों के हवाले से कहा गया है कि बारिश से पहले छह या सात क्लाउड सीडिंग उड़ानें भरी गई थीं। यूएई अपने घटते, सीमित भूजल को बढ़ाने के लिए क्लाउड सीडिंग का सहारा लेता है। दुबई अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एकत्र किए गए मौसम संबंधी आंकड़ों के अनुसार, बारिश सोमवार देर रात से शुरू हुई जिसके बाद लगभग 20 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। भारी बारिश के कारण दुबई की सड़कों पर जलभराव हो गया। इसके बाद मंगलवार को स्थानीय समयानुसार सुबह नौ बजे के आसपास तेज आंधी आई और फिर ए पूरे दिन जारी रही। इसके साथ ही भारी बारिश और ओलावृष्टि हुई, जिससे आम जनजीवन प्रभावित हुआ। मंगलवार के अंत तक, 24 घंटों में 142 मिलीमीटर से अधिक बारिश ने दुबई में बाढ़ जैसे हालात बना दिए।

एक दंपति ने नाम न जाहिर करने की शर्त पर बुधवार को बताया कि हवाई अड्डे पर स्थिति बेहद खराब है। उन्होंने कहा, आपको टैक्सी नहीं मिल सकती। मेट्रो स्टेशन पर लोग सो रहे हैं। हवाई अड्डे पर लोग सो रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी से टकराव की ओर ममता बनर्जी

–टीएमसी का घोषणापत्र–

सौगर सेनगुप्ता। कोलकाता

छिटक रहे अल्पसंख्यक मतदाताओं को अपने पाले में फिर खींचने की मंशा से बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बुधवार को तृणमूल कांग्रेस के घोषणापत्र के माध्यम से वादा किया कि अगर विपक्षी गठबंधन इंडिया सत्ता में आता है तो संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) और राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) को खत्म कर दिया जाएगा। टीएमसी के चुनाव घोषणापत्र को जारी करते हुए वरिष्ठ नेता और बंगाल के पूर्व वित्त मंत्री अमित मित्रा ने दीदी के शपथ (वादों) का हवाला देते हुए कहा, अगर टीएमसी इंडिया गठबंधन के हिस्से के रूप में सत्ता में आती है तो वह सीएए को रद्द कर देगी, एनआरसी को खत्म कर देगी।

सिलचर, असम में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के चार उम्मीदवारों के समर्थन में यहां एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने दावा किया कि अगर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटते हैं तो देश में लोकतंत्र नहीं बचेगा और चुनाव नहीं होंगे। बनर्जी ने दावा किया कि जब वह एनआरसी को लेकर दोनों राज्यों (असम-पश्चिम बंगाल) के बंगाली लोगों के समर्थन में पश्चिम बंगाल में आंदोलन कर रही थीं तो असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने पुलिस में कई मामले दर्ज कराए। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनकी पार्टी टीएमसी सभी धर्मों से प्यार करती है और नहीं चाहती कि धार्मिक आधार पर लोगों के बीच भेदभाव हो।

कोलकाता में बुधवार को पार्टी के घोषणापत्र को जारी करते टीएमसी नेता अमित मित्रा. डेरेक ओ ब्रायन और चंद्रिमा भट्टाचार्य।

बनर्जी ने रैली में कहा, अगर इंडिया गठबंधन जीतता है, तो एनआरसी, सीएए और समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू नहीं होगी। हम सभी भेदभावपूर्ण कानूनों को रद्द कर देंगे। रैली में बनर्जी ने कहा, अगर मोदी दोबारा जीते, तो लोकतंत्र नहीं रहेगा और कोई चुनाव नहीं होगा। पूरा देश बेच दिया जाएगा। उन्होंने लोगों से लोकसभा चुनाव में असम में टीएमसी के सभी चार उम्मीदवारों के लिए वोट करने की अपील की और घोषणा की कि उनकी पार्टी 2026 के राज्य विधानसभा चुनाव में सभी 126 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। बनर्जी ने कहा, यह सिर्फ एक ट्रेलर है...फाइनल अभी बाकी है। मैं फिर आऊंगी। सिलचर निर्वाचन क्षेत्र में राधाश्याम विश्वास के अलावा, टीएमसी ने कोकराझार, बारपेटा और लखीमपुर से क्रमश: गौरी शंकर सरनिया, अबुल कलाम आजाद और घाना कांता चुटिया को उम्मीदवार बनाया है। उन्होंने नवरात्र के दौरान मांसाहारी व्यंजन खाने वालों को निशाना बनाने के लिए भी भाजपा की आलोचना की और कहा कि किसी व्यक्ति का निर्णय है कि वह क्या पसंद करता है।

टीएमसी सुप्रीमो ने मणिपुर में जातीय हिंसा का भी जिक्र किया। उन्होंने दावा किया कि पश्चिम बंगाल में टीएमसी अकेले ही भाजपा से लड़ रही है। बनर्जी ने कहा, कांग्रेस और माकपा बंगाल में भाजपा का समर्थन कर रही हैं। लेकिन हम देश के बाकी हिस्सों में इंडिया गठबंधन के साथ हैं... वे (भाजपा) हमें डराने की कोशिश करेंगे, पैसे का लालच देंगे। भाजपा के 400 लोकसभा सीटें जीतने के लक्ष्य का उपहास उड़ाते हुए बनर्जी ने कहा, पहले आप 200 सीटें जीतने का प्रयास करें...मुझे लगता है कि वे बुरी तरह हारेंगे।

तृणमूल ने लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों को गिराने के लिए भाजपा की आलोचना करते हुए कहा, हम दलबदल विरोधी कानून के प्रावधानों को अधिक स्पष्ट और तत्काल लागू करने के लिए संविधान की 10वीं अनुसूची में संशोधन करेंगे। घोषणापत्र में यह भी जिक्र किया गया है कि भारत में 2011 के बाद जनगणना नहीं हुई है और अगले दौर की जनगणना कराई जाएगी। घोषणापत्र में यह सुनिश्चित करने का वादा किया गया है कि देश की न्यायपालिका राजनीतिक दबावों या प्रलोभनों से मुक्त रहे। पार्टी ने रेल बजट को केंद्रीय बजट से अलग करने और देश की कुल जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) का पांच प्रतिशत शिक्षा के लिए आवंटित करने का वादा किया। पार्टी ने गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) परिवारों के लिए घर पर राशन और 10 मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध कराने का भी वादा किया।

बिहार में एनडीए व इंडिया गुट ही नहीं नीतीश के लिए भी परीक्षा है लोस चुनाव

दीपक कुमार झा। पटना

सभी चुनावों की तरह 2024 का लोकसभा चुनाव अतीत की तुलना में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, लेकिन इस बार बिहार की 40 संसदीय सीटों के लिए सात चरण का मतदान न केवल एनडीए या इंडिया गठबंधन का फैसला करेगा, बल्कि गठबंधनों से इतर सबसे लंबे समय से बिहार की सत्ता में शीर्ष पर चल रहे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के भविष्य की राजनीति को भी तय करेगा। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और राजद के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन के बीच सीधा मुकाबला है, नीतीश बिहार के लोगों के रडार पर हैं तो क्या वह अपने प्रमुख गठबंधन सहयोगी भाजपा के लिए कड़ी परीक्षा का समय है जो राज्य में लंबे समय से खुद को स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रही है। कई राजनेताओं और पार्टियों के अनुमान के अनुसार और चुनावी पकड़ के बीच यह समझ में आता है कि भाजपा और राजद एकदूसरे को कड़ी टक्कर देंगे, जबकि 4 जून के चुनाव परिणाम जदयू के साथ गठबंधन करने में भाजपा की राजनीतिक गलती, यदि कोई हो को उजागर कर सकते हैं। क्योंकि उसके सबसे बड़े नेता का पतन हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा के नाम पर ही नीतीश अपनी खाल कुछ हद तक बचा पाएंगे।

पूर्व प्रोफेसर और प्रतिष्ठित टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) के अध्यक्ष, पटना केंद्र और अब बिहार के समाज और राजनीति के एक शोधकर्ता के रूप में पूर्णकालिक काम कर रहे पुष्पेंद्र कुमार ने बिहार में बिहार में आम चुनावों के इर्द-गिर्द घूमती स्थिति के बारे में पायनियर को जानकारी दी। उन्होंने कहा, मुझे यकीन है कि न केवल नीतीश कुमार बल्कि उनकी पार्टी जेडीयू भी, ललन सिंह युग से पहले और बाद में गंभीर आंतरिक गुटबाजी के कारण प्रभावित हुई है। भारतीय राजनीति के इतिहास में किसी मौजूदा मुख्यमंत्री द्वारा बार-बार पलटी मारने की एकमात्र घटना के कारण कैडर को बिहार के मतदाताओं को समझाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। बिहारियों को पलटू के रूप में टैग किया जाना पसंद नहीं है, जो पुराने आया राम, गया राम से अधिक अपमानजनक शब्द है। लेकिन मुझे फीडबैक मिला है कि उनके बार-बार पाला बदलने से दुनिया भर के लोगों को समझाने में दिक्कत हो रही है। नीतीश कुमार लालू राज पर सवार हुए और लोगों ने जाति और धर्म से परे जाकर उन्हें भारी वोट दिया, लेकिन अब चीजें अलग हैं।

ऐसा लगता है कि पिछले दो कार्यकालों के लिए उनके पास अच्छे विचार खत्म हो गए हैं। तेजस्वी यादव की राजद के साथ उनके आखिरी गठबंधन ने रोजगार के मोर्चे पर कुछ उम्मीद जगाई। लेकिन ऐसा लगता है कि इस तरह के जन-उन्मुख विकास को पीछे छोड़ दिया गया है, जबकि जाति- और धर्म आधारित राजनीति वापस आ गई है। (शेष पेज 9)

चुनावों के दौरान आमतौर पर गहमागहमी वाले पटना स्थित जनता दल (यू) के मुख्य कार्यालय के बाहर बुधवार को ऐसा नजारा था।

आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए तैनात रहेगी एयर एंबुलेंस व हेलीकॉप्टर

प्रदेश में प्रत्येक चरण के लिए विभिन्न स्थानों पर की गई एयर एंबुलेंस और हेलीकॉप्टर की तैनाती

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर प्रदेश मे सात चरणो में होने वाले लोकसभा आम चुनावों में किसी भी आपदा से निपटने के लिए उत्तर प्रदेश शासन की ओर से एयर एंबुलेंस एवं हेलिकॉप्टर की व्यवस्था की गई है। इस एयर एंबुलेंस और हेलिकॉप्टर की मदद से किसी भी आकस्मिकता की स्थिति में न सिर्फ मदद पहुंचाई जा सकेगी, बल्कि अर्द्धसैनिक बलों, पुलिस बलों के व्यवस्थापन के साथ ही मेडिकल सहायता पहुंचाने में भी मदद मिलेगी। इन एयर एंबुलेंस और हेलिकॉप्टर को चरणो के हिसाब से अलग-अलग लोकेशंस पर डेप्लॉय किया गया है। ये एयर एंबुलेंस और हेलिकॉप्टर हरियाणा के गुरुग्राम स्थित एक निजी एविएशन कंपनी से लीज पर लिया गया है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा आम चुनाव सभी सात चरणो में होना है। इसके लिए किसी भी संकट की स्थिति का सामना करने के लिए इन एयर एंबुलेंस और हेलिकॉप्टर को हायर किया गया है।

प्रत्येक चरण में चुनावों की लोकेशन के आधार पर एयर एंबुलेंस और हेलिकॉप्टर को डेप्लॉय किया गया है। उदाहरण के रूप में 19 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव के पहले चरण में यूपी के पश्चिम क्षेत्र

की सीटों पर मतदान होना है। इसके लिए हेलिकॉप्टर को 18 अप्रैल एवं 19 अप्रैल को मुरादाबाद में तैनात किया गया है, जबकि एयर एंबुलेंस को 19 अप्रैल को बरेली में डेप्लॉय किया गया है। इसी तरह दूसरे चरण यानी 26 अप्रैल को हेलिकॉप्टर अलीगढ़ में (25 और 26 अप्रैल) और एयर एंबुलेंस को मेरठ में (26 अप्रैल) तैनात किया गया है। 7 मई को तीसरे चरण में हेलिकॉप्टर आगरा (6 व 7 मई को) एवं एयर एंबुलेंस को बरेली (7 मई को) में लोकेट किया गया है। 13 मई को चौथे चरण में हेलिकॉप्टर 12 व 13 मई को कानपुर और एयर एंबुलेंस 13 मई को लखनऊ में तैनात रहेगा। इसी प्रकार पांचवें चरण यानी 20 मई को हेलिकॉप्टर झांसी में और एयर एंबुलेंस लखनऊ में तो छठे चरण में हेलिकॉप्टर अयोध्या और एयर एंबुलेंस प्रयागराज में तैनात रहेगी। अंतिम चरण यानि एक जून को हेलिकॉप्टर गोरखपुर और एयर एंबुलेंस वाराणसी में तैनात होंगे।

आकस्मिक परिस्थितियों में मेडिकल सहायता उपलब्ध कराने के साथ ही फोर्सेज को लाने व ले जाने में यह हेलिकॉप्टर और एयर एंबुलेंस मददगार साबित होंगे। इसके माध्यम से प्रभावित स्थान तक तत्काल सहायता उपलब्ध कराई जा सकेगी। इस कदम को एहतियात के रूप में उठाया गया है, ताकि किसी आपात स्थिति में बड़ी दुर्घटना को रोका जा सके। गुरुग्राम की जेट सर्व एविएशन प्रा. लि. से 5.60 लाख रुपए के न्यूनतम उपयोग (2 घंटे प्रतिदिन) के लिए लीज पर लिया गया है। 7 दिन के हिसाब से इस पर कुल 39.20 लाख रुपए का खर्च आएगा। प्रदेश शासन की ओर से इसकी वित्तीय स्वीकृति भी दी जा चुकी है। इस भुगतान एवं जीएसटी के साथ नियमानुसार गणना का दायित्व उत्तर प्रदेश नागरिक उड्डयन विभाग एवं उत्तर प्रदेश पुलिस मुख्यालय, लखनऊ का होगा। खर्च के बाद भी यदि कोई धनराशि शेष बचती है तो उसे नियमानुसार राजकोष में जमा कराया जाएगा।

वोटर आईडी कार्ड के अतिरिक्त 12 वैकल्पिक फोटो पहचान पत्रों में से किसी एक को प्रस्तुत कर डाल सकतें हैं वोट

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन के दौरान प्रथम चरण की 08 लोकसभा सीटों के लिए 19 अप्रैल 2024 (शुक्रवार) को मतदान होगा। मतदान के समय ऐसे मतदाता जिनके पास अपना मतदाता फोटो पहचान पत्र न हो, वे 12 अन्य वैकल्पिक फोटो पहचान पत्रों में से किसी एक को प्रस्तुत कर मतदान कर सकते हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतदान के दौरान मतदाता पहचान पत्र के अलावा 12 अन्य वैकल्पिक पहचान पत्रों में आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, बैंको/डाकघरों द्वारा जारी किए गए फोटोयुक्त पासबुक, श्रम मंत्रालय की योजना के अन्तर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, ड्राइविंग लाइसेन्स, पैन कार्ड, एनपीआर के अन्तर्गत आरजीआई द्वारा जारी किये गये स्मार्ट कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, केन्द्र/ राज्य सरकार/ लोक उपक्रम/ पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, सांसदों/ विधायकों/ विधान परिषद सदस्यों को जारी किये गये सरकारी पहचान पत्र और यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडीआईडी) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्गत कार्ड मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथ) पर मतदाताओं की पहचान के लिए अनुमन्य होंगे। रिणवा ने यह भी स्पष्ट किया कि बीएलओ द्वारा वितरित मतदाता सूचना पर्ची को पहचान दस्तावेज के रूप में मान्य नहीं किया जाएगा। मतदाताओं को अपनी पहचान सिद्ध करने के लिए उपर्युक्त में से कोई एक वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेज लाना अनिवार्य होगा। इसके अलावा, प्रवासी निर्वाचकों को केवल उनके मूल पासपोर्ट के आधार पर ही पहचाना जाएगा। उन्होंने बताया कि मतदाता, मतदाता सूची में अपना नाम चेक करने एवं पोलिंग बूथ जानने के लिए भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट के साथ वोटर हेल्पलाइन एप का उपयोग कर सकते हैं।

पहले चरण की आठ सीटों पर थमा चुनाव प्रचार, कल डाले जाएंगे वोट

● आज रवाना होंगी पोलिंग पार्टियां, सभी मतदान कर्मियों को हीट स्ट्रोक और स्वास्थ्य के दृष्टिगत मेडिकल किट होगी उपलब्ध

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में वेस्ट यूपी की आठ लोकसभा सीटों पर बुधवार की शाम प्रचार का शोर थम गया। इन सीटों पर शुक्रवार 19 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे। यूपी में पहले चरण में सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, नगीना (सु.), मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत लोकसभा क्षेत्रों में वोटिंग होनी है। इंडिया की तरफ से आठ में से सात सीटों पर सपा और एक सीट पर कांग्रेस का प्रत्याशी उतरा है। इसी तरह एनडीए की तरफ से सात सीटों पर भाजपा और एक सीट पर रालोद का प्रत्याशी है। बसपा ने सभी आठ सीटों पर प्रत्याशी उतारे हैं। पहले चरण की इन सभी लोकसभा सीटों के लिए 80 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। इसमें 73 पुरुष और 7 महिला उम्मीदवार हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि अब मतदान की समाप्ति तक किसी भी प्रकार की चुनाव प्रचार संबंधी गतिविधियॉं संचालित नहीं होगी। सभी राजनैतिक दलों के बाहरी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों की निर्वाचन क्षेत्र में मौजूदगी प्रतिबंधित रहेगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रथम चरण की आठ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 19 अप्रैल को मतदान होना है। इसके लिए मतदान समाप्त होने से 48 घंटे पहले यानी 17 अप्रैल शाम छह बजे तक ही प्रचार का समय निर्धारित किया गया था। चुनाव प्रचार अभियान की समाप्ति के बाद निर्वाचन क्षेत्र के सभी जिला निर्वाचन अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि ऐसे सभी बाहरी राजनैतिक पदाधिकारी व कार्यकर्ता इस दौरान निर्वाचन क्षेत्र छोड़ दें और इसके लिए मतदान से पहले चुनाव प्रचार पर रोक संबंधी आयोग का निर्देश सभी राजनैतिक दलों, चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों और उनके एजेंटों के ध्यान में लाएं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि उत्तर प्रदेश में लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के प्रथम चरण की 8 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 19 अप्रैल को होने वाले मतदान को सकुशल, निष्पक्ष व शान्तिपूर्ण ढ़ंग से सम्पन्न कराने के लिए 18 अप्रैल बृहस्पतिवार को मतदेय स्थलों के लिए पोलिंग पार्टियां रवाना होंगी। इसके लिए प्रथम चरण के सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को समय से पोलिंग पार्टियों को रवाना करने के निर्देश दिये गये है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रथम चरण में प्रदेश की 08 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 1-सहारनपुर, 2-कैराना, 3-मुजफ्फरनगर, 4-बिजनौर, 5-नगीना, 6-मुरादाबाद, 7-रामपुर, 26-पीलीभीत लोकसभा सीट प्रदेश के 09 जनपदों में सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत व बरेली के अन्तर्गत आते है।

उन्होंने बताया कि प्रथम चरण के लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों से सम्बन्धित सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को मतदान केन्द्रों एवं मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथ) पर मतदाताओं एवं मतदान कर्मियों के लिए जरूरी सुविधाएं मुहैय्या कराने के निर्देश दिये गये है। पोलिंग पार्टियों के रवाना होने से पहले सभी मतदान कर्मियों को हीट स्ट्रोक से बचने और स्वास्थ्य के दृष्टिगत मेडिकल किट उपलब्ध करायी जायेगी, जिससे आवश्यकता पड़ने पर उपयोग की जा सके।

भाजपा की नीयत ठीक नहीं है: राजेन्द्र चौधरी

लखनऊ। सपा के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने कहा है कि भाजपा सरकार लोकतंत्र और संविधान पर लगातार हमला कर रही है। भाजपा की नीयत ठीक नहीं है। भाजपा की बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बनाये संविधान को बदल कर पिछड़े, दलितों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों और महिलाओं के दिए गए अधिकारों को छीनने की कोशिश है। समाजवादी पार्टी भाजपा की संविधान और लोकतंत्र विरोधी नीतियों के खिलाफ लगातार लड़ाई लड़ती रही है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव को लेकर देश की जनता के नाम घोषित जनता का मांग पत्र हमारा अधिकार में देश से वादा किया है कि उसके संवैधानिक अधिकार को सुरक्षित और मजबूत करेंगे। समाजवादी पार्टी लोकतंत्र की रक्षा करेगी। मीडिया को आजादी का अधिकार देगी। लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्वतंत्रता व स्वायत्तता बहाल करेगी। सभी को न्याय और समानता का अधिकार देगी। उन्होंने कहा कि देश आज जिन हालात से गुजर रहा है उसमें संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों पर भी संकट मंडरा रहा है। अभिव्यक्ति की आजादी कुचलने की हरचंद कोशिशें हो रही है।

लोकसभा सामान्य निर्वाचन चतुर्थ चरण: नामांकन आज से, 13 मई को होगा मतदान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के चतुर्थ चरण में 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा 136-दद्रौल विधानसभा उप निर्वाचन-2024 के लिए 18 अप्रैल बृहस्पतिवार को निर्वाचन की अधिसूचना जारी होगी। इसके साथ ही इन निर्वाचन क्षेत्रों में नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। नामांकन पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न 03 बजे के मध्य किये जा सकेंगे। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रदेश में चतुर्थ चरण के अंतर्गत 13 लोकसभा सीटों में 27-शाहजहॉंपुर, 28-खीरी, 29-धौरहरा, 30-सीतापुर, 31-हरदोई,

32-मिश्रिख, 33-उन्नाव, 40-फर्रूखाबाद, 41-इटावा, 42-कन्नौज, 43-कानपुर, 44-अकबरपुर, 56-बहराइच लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए तथा 136-दद्रौल विधान सभा के उप निर्वाचन-2024 हेतु चुनाव सम्पन्न किया जाना है। चतुर्थ चरण की 13 लोकसभा सीटों में 08 सीटें सामान्य श्रेणी की हैं और 05 सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। चतुर्थ चरण के 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र प्रदेश के शाहजहॉंपुर, खीरी, सीतापुर, हरदोई, कानपुर नगर, उन्नाव, फर्रूखाबाद, एटा, इटावा, औरैया, कानपुर देहात, कन्नौज, बहराइच सहित 13 जिलों के अंतर्गत आते हैं। 136-दद्रौल विधानसभा उप निर्वाचन क्षेत्र शाहजहांपुर जनपद में आता है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रदेश में लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 के चतुर्थ चरण की 13 लोकसभा सीटों के लिए नामांकन भरने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल बृहस्पतिवार निर्धारित है। नामांकन पत्रों की जांच 26 अप्रैल (शुक्रवार) को की जायेगी। 29 अप्रैल, 2024 (सोमवार) को अपराह्न 03 बजे तक नाम वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित है। इसके उपरान्त इन निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की सूची अन्तिम हो जायेगी। चतुर्थ चरण का मतदान 13 मई, 2024 (सोमवार) को सम्पन्न होगा। उत्तर प्रदेश के सभी निर्वाचन क्षेत्रों की 04 जून, 2024 (मंगलवार) को मतगणना की जायेगी। उन्होंने बताया कि चतुर्थ चरण के 13 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 2.46 करोड़ मतदाता हैं, जिसमें 1.31 करोड़ पुरुष मतदाता, 1.15 करोड़ महिला मतदाता हैं। इन निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 16334 मतदान केन्द्र तथा 26588 मतदेय स्थल (पोलिंग बूथ) हैं तथा 136-दद्रौल विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में कुल 3.72 लाख मतदाता है, जिसमें 1.99 लाख पुरुष मतदाता तथा 1.72 लाख महिला मतदाता है। उन्होंने कहा कि नामांकन के दौरान सुरक्षा की व्यापक व्यवस्था की गयी है।

सम्पूर्ण नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी करायी जा रही है। सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों, उप जिला निर्वाचन अधिकारियों तथा सुरक्षा हेतु तैनात पुलिस अधिकारियों को विशेष सतर्कता बरतने के भी निर्देश दिये गये है।

श्रीराम धर्म के साक्षात प्रतीक और मर्यादा के आदर्श परम पुरुष: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्श हजारों वर्षों बाद आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने त्रेतायुग में थे। श्रीराम धर्म के साक्षात प्रतीक हैं। मर्यादा के आदर्श हैं। परमात्मा स्वरूप परमपुरुष हैं। हर क्षेत्र में उनके द्वारा स्थापित आदर्श हम सभी को पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्यों के निर्वहन की प्रेरणा देते हैं।

गोरखनाथ मंदिर में बुधवार को कन्या पूजन के बाद प्रदेशवासियों को वासंतिक नवरात्र व श्रीरामनवमी की शुभकामनाएं देते हुए सीएम योगी ने कहा कि वासंतिक नवरात्र में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी की तिथि तक आदिशक्ति मां भगवती के अलग अलग स्वरूपों का अनुष्ठान आज नवदुर्गा स्वरूपा कुंवारी कन्याओं के पूजन के साथ संपन्न हुआ है। नवरात्र प्रकृति और परमात्मा से जुड़ाव की अद्भुत परंपरा है। उन्होंने आदिशक्ति मां भगवती से चराचर जगत के कल्याण की कामना की। सीएम योगी ने कहा कि वासंतिक नवरात्र की महत्वपूर्ण नवमी तिथि समाज को मर्यादा के मार्ग पर ले जाने वाले व मानवीय जीवन मूल्यों का उच्च आदर्श प्रस्तुत करने वाले प्रभु श्रीराम के जन्मदिन की भी तिथि होती है। हजारों वर्षों पूर्व अयोध्या के महाराजा दशरथ के पुत्र के रूप में सृष्टि के पालक भगवान विष्णु ने धर्म, सत्य और न्याय की स्थापना के लिए अवतार लिया था। आज भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव देश दुनिया में सनातन धर्मावलंबियों द्वारा हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है।

भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में इस बार श्रीरामनवमी बेहद उमंग और आस्था के साथ मनाई जा रही है। 500 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद श्रीरामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं और इसका अलग ही उल्लास आज वहां के श्रीरामजन्मोत्सव में देखने को मिल रहा है। सीएम योगी ने कहा कि प्रभु श्रीराम के आदर्शों का अनुसरण कर हम सभी समाज और देश के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन करें, यही भगवान के प्रति सच्ची श्रद्धा का प्रतीक होगा।

योगी ने कन्या पूजन कर की मातृ शक्ति की आराधना

● वासंतिक नवरात्रि की नवमी तिथि को नौ दुर्गा स्वरूपा कुंवारी कन्याओं का मुख्यमंत्री ने पूजन किया

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ गोरखपुर

मातृ शक्ति के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने वासंतिक नवरात्र की नवमी तिथि पर बुधवार को गोरक्षपीठ की परंपरा के अनुसार कन्या पूजन किया। नवमी तिथि के अनुष्ठान की कड़ी में गोरखनाथ मंदिर के नव भोजनालय में आयोजित कन्या पूजन कार्यक्रम में योगी ने नौ दुर्गा स्वरूपा कुंवारी कन्याओं के पांव पखारे, उनका विधि विधान से पूजन किया, चुनरी ओढाई, आरती उतारी, श्रद्धापूर्वक भोजन कराया और दक्षिणा देकर उनका आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री ने परम्परा का निर्वहन करते हुए बटुक पूजन भी किया। वासंतिक नवरात्र की नवमी तिथि के अनुष्ठान में सीएम योगी एवं गोरक्षपीठाधीश्वर ने सबसे पहले कुंवारी कन्याओं के पांव धोये। उनके माथे पर रोली, चंदन, अक्षत आदि का तिलक लगाया। चुनरी ओढ़ाकर एवं दक्षिणा प्रदान कर आशीर्वाद लिया। उन्होंने सभी कुंवारी कन्याओं व बटुकों की श्रद्धाभाव से आरती भी उतारी। पूजन के बाद इन कन्याओं को मंदिर की रसोई में पकाया गया ताजा भोजन प्रसाद योगी ने अपने हाथों से परोसा। कन्याओं के अतिरिक्त बड़ी संख्या में पहुंचे बटुकों को भी श्रद्धापूर्वक भोजन कराकर उपहार व दक्षिणा दिया गया। मुख्यमंत्री यह भी ख्याल रखते रहे कि किसी भी कन्या या बटुक की थाली में भोजन प्रसाद की कोई कमी न रहे। इसे लेकर वह मंदिर की व्यवस्था से जुड़े लोगों को निर्देशित करते रहे।

पायनियर वर्गीकृत

NOTICE

I, Saraswathi Devi, w/o Chandra Kishor Mishra JC-439621 H Sub. (RT) R/o D-26 Hare Krishna Homes, Flat No.301, shyam Nagar, Kanpur, have changed my name to Saraswati Devi and my date of birth is 13.04.1981.

सूचना

मैंने अपना नाम से नूर मोहम्मद अंसारी से बदलकर नूर मोहम्मद पुत्र करीम बक्स कर लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। 14/8 सफदरगंज, कन्नौज।

सूचना

मैंने अपना नाम से शाहे आलम अंसारी से बदलकर शाहे आलम पुत्र नूर मोहम्मद कर लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। 14/8 सफदरगंज, कन्नौज।

सूचना

सूचना
मैं, किरनबाला चौधरी पुत्री स्व. हेमराजसिंह पत्नी श्री रामऔतार निवासिनी 559खा/27क श्रीनगर आलमबाग जनपद-लखनऊ एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित करती हूँ कि मैं अपने पति श्री रामऔतार पुत्र स्व. जीवनलाल निवासी अलावलपुर मुमताजपुर जनपद-सीतापुर के आचरण व कृत्यों से त्रस्त होकर विगत 7 वर्षों से पृथक निवास कर रही हूँ तथा पति श्री रामऔतार के किसी भी कार्य व्यवहार व आचरण से मेरा कोई भी वास्ता सरोकार नहीं रहा है एवं भविष्य में भी उनके किसी भी कृत्य से मेरा सम्बन्ध व दायित्व नहीं होगा तथा उक्त श्री रामऔतार अपने सभी कृत्यों व आचरण के लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे।
किरनबाला चौधरी

राहुल और अखिलेश का जनता के मुद्दों से कोई लेना-देना नहीं: भूपेन्द्र

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि दो लड़कों की जोड़ी पहले भी उत्तर प्रदेश में फ्लॉप रही थी और एक बार फिर इस जोड़ी को यूपी की जनता सिरे से नकार देगी। जिनके थीम सांग में ही ये कहा जा रहा हो कि दिल्ली में प्रवेश की खातिर व राहुल और अखिलेश की खातिर जनता वोट करे, ऐसे सत्ताभोगी और स्वार्थी लोगों को जनता अच्छी तरह पहचानती है। इनका जनता के मुद्दों से कोई लेना-देना नहीं है। इनके वादे जुबानी जमाखर्च से ज्यादा कुछ नहीं। इनके सारे वादे सत्ता में आने की छटपटाहट दिखाते हैं, क्योंकि न तो गरीब और किसान इनकी नीति में हैं और न ही नीयत में। दशकों तक देश पर राज करने के बाद भी आज जब वो गरीब की बात करते हैं तो मोदी पर नहीं, बल्कि खुद पर ही सवाल उठाते हैं। प्रदेश और देश की जनता उनके दिल्ली के तख्त पर आसीन होने की लालसा को कभी पूरा नहीं होने

देगी, क्योंकि उसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर यकीन है। ये बातें प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने राहुल गांधी और अखिलेश यादव की साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस पर निशाना साधते हुए कहीं। भाजपा अध्यक्ष ने साफ किया कि जो दल मिलकर एक साझा मैनिफेस्टो तक नहीं बना सके, वो मिलकर देश चलाने की बात करते हैं। उनके मैनिफेस्टो में सिर्फ वादे ही वादे हैं, इन वादों को पूरा करने का कोई मास्टर प्लान नहीं। प्रदेश और देश की जनता उनकी बातों में आने वाली नहीं है।

उन्होंने कहा कि दो नवयुवकों को पार्टी देश में संयुक्त रूप से भी 50 सीटों का आकड़ा नही छूने वाली है। उत्तर प्रदेश में दोनो ही दलों को जनता शून्य पर आउट करने वाली है। जिन्होंने संविधान में बार-बार संशोधन किए उन्हें आज संविधान की चिंता हो रही है। जिनकी सरकारों के समय काम कम और भ्रष्टाचार (टूजी, सीडब्ल्यूजी, कोल घोटाला) ज्यादा हुआ वो दूसरों को सर्टिफिकेट दे रहे हैं। जिनकी सरकारों में राजस्थान जैसे राज्य पेपर लीक के नए अड्डे बन गए थे, बोर्ड की परीक्षाओं में खुलेआम नकल कराई जाती थी, पैसे के दम पर सेंटर के सेंटर बुक कर लिए जाते थे, सामूहिक नकल के लिए ठेके उठते थे, नकल माफिया सरकारी धन पर पोषित किए जाते थे और पुलिस-प्रशासन मूक दर्शक बने रहते थे, वो नकल विरोधी कानून क्या बनाएंगे? आज केंद्र और भाजपा की प्रदेश सरकारें पेपर लीक पर जीरो टॉलरेंस नीति के तहत काम कर रही हैं और दोषियों को ऐसी सजा दिलाई जा रही है जो एक सबक बनेगी। चौधरी ने कांग्रेस के गरीबी हटाने के वादे पर भी तंज करते हुए कहा कि जिनके खुद के अकाउंट फ्रीज हो चुके हैं वो दूसरों के अकाउंट में क्या पैसा डालेंगे? कांग्रेस का घोषणा पत्र पहले के घोषणा पत्र जैसा ही है। वे गरीबी हटाने की बात 70 साल से करते आ रहे हैं, लेकिन जनता की गरीबी तो दूर नहीं हुई भ्रष्टाचार आ रहें हैं, लेकिन जनता की गरीबी तो दूर नहीं हुई। इसके विपरीत भ्रष्टाचार के दलदल में डूबकर इनके नेता जरूर करोड़पति हो गए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का गरीब महिलाओं को एक लाख रुपए सालाना देने का वादा चुनावी हथकंडे से ज्यादा कुछ नहीं। किसानों को लीगल एमएसपी के वादे पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जिन राज्यों में कांग्रेस की सरकारें हैं, क्या वहां पर किसानों को लीगल एमएसपी मिल गया है, क्या वहां किसानों का कर्ज पूरी तरह माफ हो गया है। ये सिर्फ वादे करेंगे, लेकिन पीएम मोदी वादे नहीं करते बल्कि गारंटी देते हैं। उन्होंने भविष्यवाणी की कि गाजियाबाद से लेकर गाजीपुर पहुंचते-पहुंचते हाथ पूरी तरह साफ और साइकिल के दोनों टायर पंचर हो जाएंगे।

जो राम का नहीं ही वो किसी के काम का नहीं: केशव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बुधवार को कहा कि पूरा का पूरा इंडी अलायंस भगवान राम की विरोधी है। कांग्रेस और सपा ने देशवासियों की आस्था से खिलवाड़ करने का काम कोई पहली बार नहीं किया, वे लगातार और बारंबार करते आ रहे हैं। सनातन विरोधी इन लोगों ने राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण ठुकरा दिया था। उन्होंने कहा कि आज सपा महासचिव ने भगवान राम और रामभक्तों के खिलाफ अनर्गल बयान देकर सनातनियों की श्रद्धा पर कुठाराघात किया है।

उन्होंने जनता से अपील की कि, लोकसभा चुनाव में जनता को एक बार फिर इनका घमंड तोड़ना पड़ेगा। जो राम का नहीं ही वो किसी के काम का नहीं। कहा कि यदि सपा के महासचिव अपने नेता को श्रीरामलला मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के आमंत्रण को स्वीकार करने की सलाह दिये

होते तो तो भगवान श्रीराम इनके सारे पाप और कलंक धो देते।

उन्होंने कहा कि भगवान राम के मामले में जब सुप्रीम कोर्ट ने फैसला कर दिया तो भूमिपूजन के समय के समय कांग्रेस और सपा के मुखिया चिल्लाने लगे कि देश में आग लग जाएगी। इनके दावे फेल हो गये और इसका देश में कोई फर्क नहीं पड़ा। इसके बाद राम मंदिर के उद्घाटन के समय भी इन सभी लोगों को बुलाया गया। लेकिन, बड़े ही दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ रहा है कि इनके पास 70 वर्षों के पाप और कलंक धोने का अच्छा मौका था। इन्होंने उसे भी ठुकरा दिया। कहा कि इन्होंने आस्था पर कुठाराघात करने का काम किया है। ये भगवान बालक राम के मंदिर में आजतक दर्शन को नहीं गये हैं और जब आज लाखों देशवासी पूरी श्रद्धा के साथ आज रामनवमी पर प्रभु के दर्शन को आये तो उन्हें सपा महासचिव राम गोपाल यादव ने ढोंगीं बताकर संपूर्ण सनातनियों को अपमानित करने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि सपा के महासचिव राम गोपाल यादव अपनी पार्टी की लाईन ही बोल रहे हैं, ये वही लोग हैं जिन्होंने राम भक्तों पर गोली चलवाई थी, अयोध्या की सड़कों को खून से लाल करने का काम किया था। इन्होंने राम के अस्तित्व पर भी सवाल उठाने का काम किया था। लेकिन 2014 से सनातनियों ने अपमान का बदला लेना सीख लिया है। अब भगवान बालक राम अपने भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हैं और सनातन को मानने वाली मोदी के नेतृत्व वाली सरकार संस्कृति की पुनर्प्रतिष्ठा करने का काम भी कर रही है। अबकी चुनावों में जनता फिर मोदी की के काम और नाम पर मोहर लगाने जा रही है।

प्रगट भये रघुराई, अवध में बाजे बधाई

लक्ष्मण नगरी में धूमधाम से मना राम जन्मोत्सव, कई जगह निकली शोभायात्रा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भए प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी। हर्षित महतारी मुनि मन हारी अदभुत रूप विचारी। प्रभु श्रीराम का जन्मदिवस बुधवार को राजधानी में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। तो वहीं, कई इलाकों में राम शोभा यात्रा निकाली गई।

रामनवमी के पावन मौके पर श्रीरामलीला पार्क सेक्टर-ए सीतापुर रोड योजना कालोनी में स्थित विश्वनाथ मन्दिर परिसर में भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम व श्रद्धाभाव के साथ मनाया गया। इस मौके पर मंत्रोच्चार के बीच प्रभु श्रीराम का अभिषेक, पूजन व आरती हुई। कार्यक्रम में भक्तों ने ''प्रगट भये रघुराई, अवध में बाजे बधाई...'', बधईयां बाजे आंगने मा..., अंखिया में लगा दे कजरा..., ''छिन-छिन उड़े रे गुलाल सारी अयोध्या में...'' सहित कई भजनों को गाकर माहौल भक्तिमय बना दिया। इस मौके पर वरुण श्याम पांडेय, कमलेश दूबे, कौशल किशोर पाण्डेय, जेएन दुबे, शाश्वत पाठक, ऊषा मिश्रा, रामकुमारी सोनी, कुमुदबाला सहित काफी संख्या में भक्तगण मौजूद थे।

वहीं नवरात्रि के नवमी दिवस चौक स्थित मठ श्री बड़ी काली जी मंदिर में नवदुर्गा के नववें स्वरूप सिद्धिदात्री के दर्शन के लिए लाखों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए। स्वामी हंसानंद ने बताया कि नवरात्रि के नवें दिन सिद्धिदात्री पूजन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही। परंपरा के अनुसार अष्टधातु से निर्मित भगवती की प्रतिमा का आज द्वितीय दिवस है। अष्टधातु से निर्मित इस प्रतिमा का भक्तों के दर्शन हेतु चैत्र और अश्विन के नवरात्र के अष्टमी और नवमी के दिन प्राचीन काल से स्थापित किया जा रहा है। मीडिया प्रभारी अभय उपाध्याय ने बताया कि यज्ञ के पश्चात महन्त विवेकानंद महाराज के द्वारा आज 501 कन्याओ का पूजन किया गया। भगवती के इस स्वरूप के दर्शन के लिए सुबह से ही भक्तों की भारी भीड़ उमड़ रही व लगभग 4 लाख भक्तो ने आज दर्शन किये । आज विशेष रूप से विज्ञान प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश अजीत सिंह पाल , नॉर्दन रेलवे अध्यक्ष शिवशंकर सिंह , पश्चिमी ज़ोन एडीसीपी विश्वजीत श्रीवास्तव,सीओ चौक राजकुमार सिंह, एसएचओ चौक, भाजपा महानगर उपाध्यक्ष टिंकू सोनकर, वरिष्ठ समाजसेवी मुकेश मर्चेंट,भाजपा किसान मोर्चा सौरभ त्रिपाठी दर्शन किया। मंदिर व्यवस्था में मुख्य रूप से विकास तिवारी, मुकुंद मिश्रा राहुल सारस्वत,तुषार वर्मा, देवराज सिंह, अंकित, प्रकाश ,आकाश,दीपांशु,वैभव,अमित,कार्ति वर्मा एवं अन्य सेवक उपस्थित रहे।

यहियागंज में रामनवमी के मौके पर राम शोभा यात्रा निकाली गई। नादान महल रोड से शुरू होकर कंघी वाली गली, यहियांगंज, रकाबगंज, पांडेयगंज, बिरहाना, शास्त्रीनगर होते हुए सिद्धनाथ मंदिर पर आकर समाप्त हुई। वहीं, मंदिर में रामभक्तों की काफी भीड़ थी। रामलला का दर्शन कर लोग खुद को धन्य मान रहे थे। वहीं, महिलाएं सुख-शांति की मनोकामनाएं मांग रही थी।

मंदिरों में फूलों से भव्य सजावट भी की गई थी। रामनवमी को लेकर राजधानी में राम मंदिरों में भक्तों की भीड़ रही। इसमें चौक स्थित रामजानकी मंदिर, कोनेश्वर मंदिर, नया हनुमान मंदिर, सिद्धनाथ मंदिर सहित कई मंदिरों में कई आयोजनों के बाद प्रसाद वितरण हुआ। वहीं, जगह-जगह राम शोभा यात्रा निकाली गई। इस दौरान भक्तों की आस्था देखने लायक थी। कपूरथला चौराहे पर रामनवमी के मौके पर भगवा यात्रा निकाली गयी। इस मौके पर नोएडा से भाजपा विधायक पंकज सिंह और स्थानीय विधायक नीरज बोरा भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने श्रीरामनवमी महापर्व पर विधि विधान से गोरखनाथ मंदिर में भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया

हाईकोर्ट की फटकार के बाद जज हुए हाजिर, मांगी माफी

● न्यायिक कार्य छोड़कर नमाज के लिए जाने की आलोचना की थी

विधि संवाददाता। लखनऊ

अवैध धर्मांतरण के एक मुकदमे में उपस्थित गवाह से जुमे की नमाज पढ़ने जाने का हवाला देकर वकीलों द्वारा जिरह नहीं करने की आलोचना करना एनआईए/एटीएस कोर्ट के विशेष जज के लिए महंगा पड़ गया। हाईकोर्ट की फटकार के बाद उन्होंने बिना शर्त माफी मांगी है। विशेष जज ने संबंधित वकीलों के नमाज के लिए जाने पर न्याय मित्र भी नियुक्त किया था।

हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने विशेष जज के विरुद्ध सख्त टिप्पणी करते हुए कहा है कि उन्होंने धर्म के आधार पर एक समुदाय के साथ भेदभाव किया है। यह भी टिप्पणी की है कि अपनी पसंद और अपने मजहब का वकील नियुक्त कर चुके अभियुक्तों की मर्जी के खिलाफ उनके लिए न्याय मित्र नियुक्त करना धर्म के आधार पर भेदभाव है। जो संविधान के अनुच्छेद 15 का स्पष्ट उल्लंघन है। पीठ ने इन टिप्पणियों के साथ जज को व्यक्तिगत हलफ़नामा दाखिल करने के लिए दो दिन का समय दिया है। मामले की अगली सुनवाई 18 अप्रैल को होगी। जस्टिस शमीम अहमद की एकल पीठ ने यह आदेश इस मामले के एक अभियुक्त मो. इदरीस की याचिका पर दिया है।

हाईकोर्ट में सुनवाई

इसके बाद इस मामले के एक अभियुक्त मो. इदरीस ने हाईकोर्ट में सीआरपीसी की धारा 482 के तहत याचिका दाखिल कर विशेष जज के आदेशों को चुनौती दी। पांच मार्च को याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस शमीम अहमद ने याचिकाकर्ता के संदर्भ में विशेष जज के आदेशों पर स्थगन दे दिया था। विशेष जज ने इस पर हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में न्याय मित्र देने वाले अपने आदेश का क्रियान्वयन मो. इदरीस के सम्बंध में रोक दिया। लेकिन अन्य अभियुक्तों को न्याय मित्र देने के अपने आदेश को यथावत रखा।

15 अप्रैल को हाईकोर्ट में जब याचिका पर पुनः सुनवाई हुई तो जस्टिस शमीम अहमद ने विशेष जज पर सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने पांच मार्च के आदेश को ठीक से नहीं समझा। विशेष जज ने इलेक्ट्रानिक साक्ष्यों को देने के सम्बंध में कोई आदेश क्यों नहीं पारित किया। एकल पीठ ने इस मामले में याचिकाकर्ता मो. इदरीस के विरुद्ध विचारण पर भी अग्रिम आदेशों तक के लिए रोक लगा दी।

यह है मामला

एनआईए/एटीएस कोर्ट के विशेष जज विवेकानन्द शरण त्रिपाठी की अदालत में जबरन धर्म परिवर्तन के मामले में मो. उमर गौतम समेत अन्य अभियुक्तों का विचारण चल रहा है। 16 दिसंबर 2022 हाईकोर्ट की दो जजों की खंडपीठ ने आदेश दिया था कि इस मामले के विचारण की कार्यवाही एक वर्ष में पूरी की जाए। जिसके बाद विशेष जज ने दिन-प्रतिदिन सुनवाई की कार्यवाही प्रारम्भ की। 19 जनवरी 2024 को इस मामले में हाजिर गवाह से जिरह करने के लिए जब अदालत ने वकीलों से कहा तो मुस्लिम वकील नमाज के लिए जाने की बात कह कर चले गए। जिस पर अदालत ने जिन अभियुक्तों के वकील मुस्लिम थे उनके लिए न्याय मित्र की नियुक्ति कर दी। साथ ही स्पष्ट किया कि नमाज के लिए जाने पर न्याय मित्र अभियुक्तों की ओर से आवाह्यक कार्यवाही करते रहेंगे। अदालत ने अभियुक्तों की ओर से दाखिल अर्जी भी खारिज कर दिया। इस अर्जी में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों की मांग की गई थी।

सीएमओ आफिस में अटके आवेदन जन्म मृत्यु प्रमाणपत्र के लिए भटक रहे लोग

मोहनलालगंज। सीएमओ आफिस की लापरवाही से मोहनलालगंज में जन्म मृत्यु प्रमाणपत्र के तकरीबन दो दर्जन आवेदक मोहनलालगंज नगर पंचायत दफ्तर के चक्कर काट रहे हैं। आवेदकों की समस्या को लेकर नगर पंचायत अधिकारी भी सीएमओ आफिस में बात कर चुके हैं। फिर भी आवेदनों को लटका रखा गया है।

मोहनलालगंज नगर पंचायत आफिस में मार्च माह के तीसरे सप्ताह में 22 लोगों ने जन्म मृत्यु प्रमाणपत्र के लिए आवेदन जमा किया था। नगर पंचायत कर्मियों ने 22 मार्च को ही सभी आवेदन सीएमओ आफिस भेज दिए थे। लेकिन तकरीबन 25 दिन बीतने के बावजूद सीएमओ आफिस में इन आवेदनों पर कोई कार्रवाई नही की जा सकी है। लिहाजा परेशानहाल आवेदक नगर पंचायत आफिस के चक्कर काट रहे हैं। नगर पंचायत कर्मचारी सीएमओ आफिस से एप्रूवल मिलने के बाद ही प्रमाणपत्र जारी करने की बात कहकर आवेदकों को इंतजार करने की बात कहकर वापस भेज रहे हैं। जबकि सीएमओ आफिस में शिकायत दर्ज कराने के बावजूद आवेदकों की समस्या का निराकरण नही किया जा रहा है। जिसे लेकर नाराज लोगों ने जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई है।

यह कहते हैं अधिकारी

सीएमओ आफिस में जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र के नोडल अधिकारी डॉ बीएन यादव ने बताया मोहनलालगंज नगर पंचायत से प्राप्त आवेदनों में खामियों की वजह से प्रमाणपत्र जारी नही किए जा सके हैं। आवेदनों का परीक्षण किया जा रहा है जिन आवेदनों में कोई कमी नही पाई जाएगी। शीघ्र ही उन पर प्रमाणपत्र जारी कर दिए जाएंगे।

सुरक्षाकर्मियों की पिटाई से बीबीएयू के छात्रों में आक्रोश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में बुधवार को कुलपति आवास का घेराव कर रहे छात्रों की सुरक्षाकर्मियों से नोकझोंक हो गई। धरना खत्म करने का दबाव बनाने लगे। इस पर कुछ छात्रों ने विरोध दर्ज कराया। कुछ देर बाद ही सुरक्षाकर्मियों ने कुछ छात्रों की पिटाई कर दी। जिससे छात्रों में खा आक्रोश है। मंगलवार को छात्रों के कार्यक्रम में बिना अनुमति डीजे बजाने पर विवि प्रशासन ने आपत्ति की थी। पुलिस बल को बुलाकर डीजे बंद करा दिया था। विरोध में छात्र धरने पर बैठ गए थे। मंगलवार देर रात कुलपति आवास पर विवि प्रशासन ने धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने से मना कर दिया। इससे नाराज छात्र बुधवार को कुलपति आवास का घेराव करने पहुंच गए। विवि प्रशासन की ओर से कोई वार्ता के लिए नहीं आया। उल्टा सुरक्षाकर्मियों को भेजकर छात्रों की पिटाई कर दी। इस बारे में बीबीएयू के प्रॉक्टर प्रो. संजय कुमार से बात की गई, लेकिन उन्होंने बात करने से मना कर दिया।

सोना लेकर फरार दो कारीगरों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

नवंबर 2023 में सर्राफ से 320 ग्राम सोना हड़प कर फरार दो कारीगरों को चौक पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपियों ने गहने बनाने के लिए सोना लिया था, लेकिन वापस करने के बजाय भाग गए थे। पुलिस ने आरोपियों से 85 ग्राम सोना और दस हजार रुपये बरामद किए हैं।

डीसीपी पश्चिम दुर्गेश कुमार ने बताया कि ठाकुरगंज नगरिया निवासी अंकित मल्होत्रा और सआदतगंज तम्बाकू मण्डी निवासी आदर्श कुमार श्रीवास्तव को चौक चौराहे के पास से गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के खिलाफ 26 नवंबर 2023 में दुबग्गा निवासी लक्ष्मण शुक्ला ने मुकदमा दर्ज कराया था। लक्ष्मण गणेश अर्नामेंटस के नाम से दुकान चलाते हैं। उनकी दुकान पर अंकित और आदर्श कारीगर थे। करीब 320 ग्राम सोने के जेवर लक्ष्मण ने कारीगरों क लिए दिए थे। अक्सर आरोपी सोना ले जाकर घर पर गहने तैयार करते थे। ऐसे में 320 ग्राम सोना लेने के बाद कुछ दिनों में जेवर तैयार कर देने की बात कही थी। नवंबर 2023 में पीड़ित ने आरोपियों से जेवर देने के लिए कहा था। जिस पर दोनों लोग टाल मटोल करते रहे। फिर घर छोड़ कर भाग गए थे। डीसीपी ने बताया कि आरोपियों के पास से 85 ग्राम सोना मिला है। जिसकी कीमत पांच लाख 50 हजार के करीब है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए सर्विलांस टीम काफी दिनों से प्रयास कर रही थी।

इन्दिरा नहर से पानी लाने के लिए भगीरथ की तलाश

चुनावी मुद्दा

संवाददाता। मोहनलालगंज

सिंचाई की समस्या का पूर्णकालिक निदान पाने के लिए मोहनलालगंज के किसानों को पड़ोस से गुजरी इन्दिरा नहर से पानी लाने के लिए भगीरथ की तलाश है। पिछले बत्तीस सालों में किसानों की यह समस्या चुनावी मुद्दा बनती रही है। फिर भी किसानों की यह कोरी कल्पना हकीकत में नहीं बदल सकी है। विधानसभा चुनाव का बिगुल बजते ही क्षेत्रीय किसानों ने एक बार फिर सिंचाई की समस्या को चुनावी मुद्दा बनाकर उम्मीदवारों के सामने इसे हल कराने की चुनौती खड़ी कर दी है।

मोहनलालगंज विधानसभा क्षेत्र के गोशाईगंज ब्लाक से गुजरी इन्दिरा नहर को किसानों की खुशहाली का वरदान कहा जाता है। अस्सी के दशक में इन्दिरा नहर की शुरुआत होने के बाद से ही मोहनलालगंज ब्लाक के किसान उपेक्षा का आरोप लगाकर इन्दिरा नहर से यहां की सहायक नहरों में भी पानी छोड़ने पुरजोर मांग करते आए हैं। नब्बे के दशक में किसानों के चौतरफा दबाव के बाद सिंचाई विभाग के अफसरों ने इन्दिरा नहर से करोरा इलाके की नहरों में पानी भी छोड़ा था। कई दिन तक सर्वे कराने के बाद कुछ तकनीकि दिक्कतों का समाधान तलाशने के लिए वक्त मांगकर सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने उसी समय मोहनलालगंज ब्लाक की नहरों को भी इन्दिरा नहर से पानी देने का भरोसा दिया था। लेकिन गुजरते वक्त के साथ तारीखें बढ़ती रहीं और तीन दशक बीतने के बाद भी मोहनलालगंज की नहरों को इन्दिरा नहर से पानी नसीब नहीं हो सका है। लिहाजा सिंचाई संसाधनों के अभाव में किसानों के लिए फसल उगाना दिन-ब-दिन बेहद मुश्किलों भरा होता जा रहा है।

तीन सौ गांव झेल रहे सिंचाई की समस्या

मोहनलालगंज के उतरावां निगोहां दहियर खुझौली धरमावतखेड़ा धरमंगतखेड़ा गौरा कमालपुर बिचलिका घुसकर जलौदीनगर गौरियाखुर्द देवती मऊ इन्द्रजीतखेड़ा परेहटा दाउदनगर पूरनपुर शिवढ़रा रायभानखेड़ा समेत तकरीबन तीन सौ गांव में सिंचाई की जटिल समस्या है। गांवों के आसपास बिछी नहरों में पानी के अभाव से किसानों को फसल उगा पाना बेहद मुश्किल रहता है। किसानों का आरोप है कि जिला प्रशासन से लेकर शासन स्तर तक ढ़ेरों शिकायत के बावजूद भी सिंचाई सुविधा विहीन गांवों में अब तक राजकीय नलकूप की सुविधा भी मुहैया नहीं हो सकी है।

धरातल पर नहीं उतर सके एसडीएम के प्रयास

मोहनलालगंज के किसानों को इन्दिरा नहर से पानी दिलाने के लिए करीब सात साल पहले तत्कालीन एसडीएम सन्तोष कुमार सिंह सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर प्रयास शुरु किए थे। एसडीएम की पहल पर सिंचाई विभाग के अधिकारियों ने सर्वे कर डीपीआर भी तैयार किया था। मोहनलालगंज दौरे पर आए तत्कालीन कमिश्नर ने भी एसडीएम की कोशिश पर इस प्रस्ताव को शासन में मजबूती से रखने का भरोसा दिया था। लेकिन एसडीएम के तबादले के साथ उनकी तमाम कोशिशें भी ठण्डे बस्ते में चली गईं। यहां तह्वक कि एसडीएम की ओर से जरुरतमंद पंचायतों में नलकूप स्थापना के लिए जिला प्रशासन को लिखा गया पत्र भी फाइलों में गुम होकर रह गया।

यह कहते हैं विधायक

विधायक अमरेश कुमार ने बताया मोहनलालगंज में किसानों को सिंचाई के लिए नहरों में पर्याप्त पानी दिलाने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। शारदा सहायक व हैदरगढ़ रजबहा में नियमित रुप से टेल तक पानी पहुंचाने और यथासंभव इंदिरा नहर से कनेक्टिंग के विकल्प तलाशने के लिए जलशक्ति मंत्री और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मांग की गई है। इसके अतिरिक्त राजकीय नलकूप स्थापना व सोलर पम्प योजना से भी किसानों को सिंचाई की सुविधा दी जा रही है। ट्यूबवेल पर सोलर पम्प स्थापित कराने के लिए किसानों को नब्बे फीसदी तक सब्सिडी दी जा रही है।

यह कहते हैं पूर्व विधायक

पूर्व विधायक अम्बरीष सिंह पुष्कर ने बताया सपा से विधायक चुने जाने के बाद मैने मोहनलालगंज विधानसभा क्षेत्र की नहरों में टेल तक पानी न पहुंचने की समस्या अनगिनत बार सदन में उठाई। इंदिरा नहर से मोहनलालगंज की नहरों में भी पानी देने की मांग की। लेकिन विपक्ष का विधायक होने से भाजपा सरकार ने मेरी कोई भी मांग पूरी नही की। सपा के सांसद प्रत्याशी व पूर्व मंत्री आरके चौधरी ने भी विधायक रहते हुए अपने कार्यकाल में इसके लिए कई बार प्रयास किए थे। आगामी लोकसभा चुनाव में इस बार जनता ने उन्हें बहुमत देने का मन बना लिया। उनके सांसद बनते ही जनता की इस मांग को प्राथमिकता पर पूरा कराया जाएगा।

भाजपा 150 सीट के नीचे सिमट जाएगी: राहुल गांधी

● गाजियाबाद से गाजीपुर तक भाजपा का सफाया होने जा रहा है: अखिलेश

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बुधवार को चुनावी बॉण्ड योजना को दुनिया की सबसे बड़ी वसूली योजना करार दिया और आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भ्रष्टाचार के चैंपियन हैं। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने यह दावा भी किया कि इस लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) 150 सीट तक सिमट जाएगी। राहुल गांधी ने कहा, यह विचारधारा का चुनाव है। एक तरफ आरएसएस-भाजपा संविधान और लोकतंत्र को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। दूसरी तरफ, विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) उसको बचाने में लगा है। उन्होंने दावा किया कि इस चुनाव में बेरोजगारी, महंगाई, भागीदारी जैसे कुछ प्रमुख मुद्दे हैं, लेकिन भाजपा 24 घंटे लोगों को गुमराह करने में लगी रहती है। राहुल गांधी ने कहा कि भाजपा के लोग मुद्दों के बारे में बात नहीं करते हैं।

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हालिया साक्षात्कार का हवाला देते हुए कहा कहा कि यह साक्षात्कार स्क्रिपटेड (पहले से तैयार) और एक फ्लॉप शो था। राहुल गांधी ने कहा, प्रधानमंत्री ने कहा कि चुनावी बॉण्ड योजना राजनीति को साफ करने के लिए लाई गई थी। अगर ऐसा है तो उच्चतम न्यायालय ने इसे रद्द क्यों किया? उन्होंने सवाल किया, सैकड़ों करोड़ रुपए का चंदा देने वालों के नाम क्यों छुपाए गए, चंदा देने की तारीखें क्यों छुपाई गई? कांग्रेस नेता ने दावा किया, कंपनियों को ठेके मिलते हैं और फिर वही कंपनियां भाजपा को चंदा देती हैं। जांच एजेंसियां पहले कंपनियों पर छापेमारी करती हैं और फिर जाच शुरू होने के 10-15 दिन बाद वही कंपनियां भाजपा को चंदा देती हैं। भाजपा को चंदा मिलने के बाद कंपनियों की जांच बंद हो जाती है। उन्होंने आरोप लगाया, चुनावी बॉण्ड योजना दुनिया की सबसे बड़ी वसूली योजना है। प्रधानमंत्री चाहे भी कितनी भी सफाई दे दें, पूरा देश जानता है कि प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार के चैंपियन हैं। यह पूछे जाने पर कि उन्हें कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के गठबंधन को कितनी सीटें मिलने की उम्मीद है, राहुल गांधी ने कहा कि वह सीट को लेकर अनुमान नहीं लगाते, लेकिन इतना जरूर कह सकते हैं कि उत्तर प्रदेश में सपा और कांग्रेस के गठबंधन का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहेगा। उन्होंने कहा,15- 20 दिन पहले लग रहा था कि भाजपा को 180 सीटें मिलेंगी, लेकिन अब लग रहा है कि वह 150 सीट तक ही जाएगी। हर राज्य से हमें रिपोर्ट मिल रही है कि हमारी स्थिति मजबूत हो रही है और भाजपा के खिलाफ अदृश्य लहर (अंडर करंट) है। उन्होंने कहा, जहां तक उत्तर प्रदेश में गठबंधन की बात है तो हमारा गठबंधन बहुत शक्तिशाली है। हमारा प्रदर्शन बहुत अच्छा होगा।

राहुल गांधी ने दावा किया, गरीबी को एक झटके में नहीं मिटाया जा सकता, लेकिन उसे गहरी चोट पहुंचाई जा सकती है। देश में गरीबी का एक बड़ा कारण यह है कि नरेन्द्र मोदी जी ने देश का पूरा धन कुछ चुनिंदा लोगों को दे दिया है। उन्होंने कहा, इसलिए हम जातिगत जनगणना कराएंगे, गरीब महिलाओं को सालाना एक लाख रुपए देंगे, युवाओं को अप्रेंटिसशिप (प्रशिक्षुता) का अधिकार भी हम देने जा रहे हैं। किसान सही एमएसपी, कर्ज माफी की मांग कर रहा है। हम एमएसपी की कानूनी गारंटी देंगे और किसानों का कर्ज भी माफ करेंगे। अखिलेश यादव ने कहा कि बदलाव की हवा चल रही है और उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद से गाजीपुर तक भाजपा का सफाया होने जा रहा है। राहुल गांधी के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने यह भी कहा कि एनडीए (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) को पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) हराएगा। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि मतों का विभाजन न होने दें और अपने बूथ की चौकीदारी करें ताकि भाजपा का सफाया सुनिश्चित हो सके। यादव ने कहा, उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद से लेकर गाजीपुर तक भाजपा का सफाया होने जा रहा है... बदलाव की हवा चल रही है। भाजपा की हर बात झूठी निकली। न किसान की आय दोगुनी हुई, न युवाओं को रोजगार मिला। विकास के वादे भी अधूरे हैं।उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, "चुनावी बॉण्ड ने इनकी पोल खोल दी है। भाजपा भ्रष्टाचारियों का गोदाम बन गई है। उन्होंने कहा, गठबंधन एक नई उम्मीद है। जिस दिन देश का किसान खुश हो जाएगा, उन्हें सही एमएसपी मिलेगी और उनकी आय बढ़ेगी, उस दिन से गरीबी खत्म होने लगेगी। यादव ने कहा कि जातिगत जनगणना भी एक जरूरी कदम है, क्योंकि इससे सामाजिक न्याय होगा और लोगों को मान-सम्मान मिलेगा। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच समझौते के बाद राहुल गांधी और अखिलेश यादव ने पहली बार संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। इससे पहले दोनों नेताओं ने 2017 के विधानसभा चुनाव के समय साझा प्रेस वार्ता की थी। उत्तर प्रदेश में लोकसभा की कुल 80 सीट हैं। इनमें कांग्रेस 17 और समाजवादी पार्टी और कुछ अन्य सहयोगी दल 63 सीट पर चुनाव लड़ रहे हैं। लोकसभा चुनाव के सात चरणों के मतदान का पहला चरण 19 अप्रैल को है। मतगणना चार जून को होगी।

प्रभु श्रीराम के सूर्य तिलक के साक्षी बने बाबा विश्वनाथ

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ वाराणसी

बाबा विश्वनाथ भी प्रभु श्रीराम के सूर्य तिलक के साक्षी बने। श्री रामनवमी पर राम लला के सूर्य तिलक का सजीव प्रसारण श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में भी किया गया। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास ने अयोध्या से हुए सूर्य तिलक का विश्वनाथ धाम में सजीव प्रसारण कर भक्तों को अविस्मरणीय, अकल्पनीय और अद्भुत पल का साक्षी बनने का अवसर प्रदान किया। इस अवसर पर श्रीकाशी विश्वनाथ धाम में सुंदर कांड का भी आयोजन हुआ। रामनगरी से प्रभु राम के इस अद्भुत क्षण को देखने के लिए श्री विशेश्वर के धाम में सुबह से ही श्रद्धालु जुटे रहे। धाम प्रांगण में ही भजन संध्या आयोजित कर उत्साहपूर्वक समारोह का आयोजन किया गया।

शिव की नगरी काशी श्री रामनवमी के उत्सव पर रामलला की नगरी अयोध्या से अध्यात्म के तरंगों से जुड़ी रही। श्री काशी विश्वनाथ धाम के आंगन में रामलला के सूर्य तिलक का श्री राम मंदिर से सजीव प्रसारण किया गया। 500 साल बाद इस ख़ास और अद्भुत पल का साक्षी बनने के लिए भक्तों का हुजूम उमड़ा था। खुद बाबा भी इस पल के साक्षी बने। श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य कार्यपालक अधिकारी विश्व भूषण मिश्र ने बताया कि श्री काशी विश्वनाथ धाम में सज्जित श्री राम विग्रह के समक्ष सुंदर काण्ड पाठ का भव्य आयोजन हुआ। इसके बाद दोपहर 12 बजे से धाम में श्री राम के सूर्य तिलक का अयोध्या धाम से सजीव प्रसारण गेट नंबर 4 के बाहर, मंदिर चौक, मंदिर परिसर में बड़े एलईडी स्क्रीन पर किया गया। मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने बताया कि काशी विश्वनाथ धाम में नवरात्रि में नौ दिन तक विभिन्न धार्मिक आयोजन होता रहा। भगवान श्री राम के जन्मोत्सव का पर्व बड़े ही धूमधाम से बाबा के धाम में मनाया गया। रामलला के जन्मोत्सव पर संगीत, भजन संध्या आयोजित कर उत्सवपूर्वक समारोह का आयोजन हुआ। समस्त कार्यक्रमों को न्यास की वेबसाइट, आधिकारिक फेसबुक पेज तथा यूट्यूब चैनल से लाइव स्ट्रीम किया गया।

पुलिस अभिरक्षा में मौत की घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाया जाए: डीजीपी

● पुलिस प्रमुख ने सुप्रीम कोर्ट व एनएचआरसी के निर्देशों का सख्ती से पालन करने के पुलिस अफसरों को दिये निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

डीजीपी प्रशांत कुमार ने पुलिस अभिरक्षा में होने वाली मौत की घटनाओं पर प्रभावी रोकथाम के लिए पुलिस अधिकारियों को विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा है कि पुलिस अभिरक्षा में मृत्यु की शिकायतों से जहां एक और पुलिस विभाग की छवि धूमिल होती है वहीं दूसरी ओर पुलिस बल की कर्तव्यनिष्ठा एवं जनसेवा का रूप भी विकृत होता है। मानवाधिकारों की सुरक्षा में पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पुलिस अभिरक्षा में लिए गए व्यक्ति/ अभियुक्क के साथ सावधानी बरती जाए एवं गिरफ्तारी तथा हवालात में दाखिल करते समय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा डी.के. बसु बनाम स्टेट आफ बंगाल में पारित निर्णय में दिए गए निर्देश का अक्षरश: पालन किया जाए। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा समय-समय पर पारित आदेशों का भी अध्ययन कर अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए।

डीजीपी ने जारी निर्देशों में कहा है कि अभियुक्त को थाने पर पूछताछ के लिए लाने से पूर्व इस बात की पुष्टि कर ली जाए कि क्या वह पूर्व से किसी गम्भीर रोग से ग्रस्त तो नहीं है। गम्भीर रोग से ग्रस्त व्यक्ति/ गिरफ्तार अभियुक्त को थाने पर कदापि न लाया जाए। यदि किन्ही कारणवश थाने पर लाए गए व्यक्ति/ गिरफ्तार अभियुक्त आकस्मिक रूप से बीमार हो जाता है, तो इस आकस्मिकता के दृष्टिगत उसका समीप के चिकित्सालय में तत्काल उपचार कराया जाए।

थाना प्रभारी/ चौकी प्रभारी के जानकारी के बिना थाने अथवा पुलिस चौकी में किसी व्यक्ति को न तो लाया जाए और ना ही बैठाया जाए। थाने पर यदि कोई घायल / गम्भीर अवस्था में व्यक्ति आता है तो उसे हवालात में न रखा जाए तथा उसे समीप के चिकित्सालय में ले जाकर तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी जाए। किसी अभियुक्त/ व्यक्ति से पूछताछ का कार्य मनोवैज्ञानिक तरीको का प्रयोग करते हुए अत्यन्त धैर्यपूर्वक किया जाए। पूछताछ करते समय उतावलेपन से मारपीट किसी भी दशा में न किया जाए। अभियुक्त को हवालात में दाखिल करते समय यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई खिड़की व खूंटी नहीं होनी चाहिए। अभियुक्त के पास पहनने की अतिरिक्त कोई अन्य कपड़ा नहीं होना चाहिए।

अभियुक्त को हवालात के अन्दर बन्द करते समय दिवसाधिकारी द्वारा उसकी भलि-भांति जामा तलाशी लेकर यह सुनिश्चित कर ले कि अभियुक्त के पास कोई डोरी, रस्सी, तार, गमछा, नुकीली वस्तु, ब्लेड, माचिस, नशीला पदार्थ, ड्रग्स आदि नही होना चाहिए, जो आत्महत्या में सहायक हो। हवालात के अन्दर बिजली के तार न हो। पानी सप्लाई के पाइप बन्दी के पहुंच के बाहर हो। पानी की टोटी नुकीली न हो। संतरी डियूटी लगाते समय उनको थानाध्यक्ष हेड मोहर्रिर द्वारा उनके कर्तव्यों के सम्बन्ध में भलि-भांति ब्रीफ कर दिया जाये। संतरी डियूटी पर नियुक्त पुलिस कर्मी को निर्देशित कर दिया जाय कि वह हवालात में बन्द अभियुक्त पर हर समय सर्तक दृष्टि बनाए रखें।

क्षेत्राधिकारी/अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा नियमित रूप से थानों का आकस्मिक निरीक्षण किया जाए तथा यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई भी पुरुष/ महिला अवैधानिक रूप से हिरासत में न हो। अधिकारियों द्वारा थानों व चौकियों के प्रत्येक निरीक्षण आख्या में इसे अनिवार्यत: अंकित किया जाए। डीजीपी ने निर्देशित किया है कि पुलिस अभिरक्षा में हुई मृत्यु की घटनाओं के सम्बन्ध में पंजीकृत अभियोग की सूचना 24 घण्टों के अन्दर मानवाधिकार आयोग को प्रत्येक दशा में प्रेषित कर दी जाए। मृतक का पंचनामा मजिस्ट्रेट द्वारा भरा जाए एवं चिकित्सक द्वारा शव का परीक्षण/ पोस्टमार्टम कराते हुए वीडियोग्राफी अवश्य करायी जाए तथा वीडियोग्राफी की सीडी को अवलोकन हेतु मानवाधिकार आयोग को भी प्रेषित की जाए। पुलिस अभिरक्षा में घटित मृत्यु की घटना में संलिप्त दोषी पाए गए पुलिस अधिकारियों/ कर्मचारियों के विरुद्ध पंजीकृत अभियोग में विधिक कार्यवाही के अतिरिक्त अनिवार्य रूप से विभागीय जांच सम्पादित की जाए। विभागीय जांच में उन परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से तथ्यांकित किया जाए, जिसके फलस्वरूप घटना घटित हुई है।

भाजपा ने नुक्कड़ सभा का आयोजन कर पांच लाख पार का दिलाया संकल्प

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

उत्तर विधानसभा के तहत मंडल पांच में लोकसभा चुनाव की पहली नुक्कड़ सभा का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि लखनऊ महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी उपस्थित रहें।

महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने कहा कि भारत सरकार के रक्षा मंत्री, लखनऊ सांसद राजनाथ सिंह ने लखनऊ के बहुआयामी विकास के लिए अनेक परियोजनाओं की सौगात क्षेत्र वासियों को दिया है। लखनऊ को अब जाम से निजात के लिए 104 किलोमीटर लंबे आउटर रिंग रोड का निर्माण कर ट्रैफिक समस्याओं से निजात के साथ बड़े उद्योग को की स्थापना तथा रोजगार सृजन का अवसर मिलेगा, अब हवाई चप्पल से चलने वाला व्यक्ति भी हवाई जहाज का सफर कर रहा है यह सिर्फ ट्रिपल इंजन की सरकार की जनकल्याण योजनाओं से ही संभव हो पाया रहा है, ब्रह्मोस मिसाइल, डीआरडीओ को लैब की स्थापना, टर्मिनल तीन का संचालन, अंतर्राष्ट्रीय सुविधाओं से युक्त गोमती नगर रेलवे स्टेशन जैसी अनेक परियोजनाओ की सौगात लखनऊ क्षेत्रवासियों को मिली है। जनता जनार्दन को संबोधित करते हुए उपस्थित जनसमूह से सांसद राजनाथ सिंह के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करके तीसरी बार मोदी सरकार बनाने के लिए आवाह्न किया। उक्त अवसर पर मंडल अध्यक्ष राकेश पांडेय, पार्षद मान सिंह, शैलेंद्र शर्मा अटल, संतोष सिंह, दीपक लोधी एवम कार्यकर्ता एवं क्षेत्रीय जनता उपस्थित रही।

ऐतिहासिक चैती मेला मंच पर भजन संध्या

● मुख्य अतिथि डा. अभिषेक मेहरोत्रा का मेला कमेटी ने किया स्वागत

गोला गोकर्णनाथ खीरी। छोटी काशी में ऐतिहासिक मेला चैती के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के क्रम में भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डा. अभिषेक मेहरोत्रा, विशिष्ट अतिथि डा. सौरभ दीक्षित, कार्यक्रम अध्यक्ष द्वारिका प्रसाद रस्तोगी एवं नगर पालिका अध्यक्ष विजय कुमार शुक्ल रिंकू के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया। भजन संध्या की शुरुआत आरके म्यूजिकल ग्रुप के कलाकार भजन गायक राजेश दीक्षित ने . इतनी शक्ती हमे देना दाता मन का विश्वास कमजोर हो न।

हे राम हे राम जग में सांचा तेरो नाम हे राम हे राम से की।

चदरिया झीनी रे झीनी
गायिक करुणा ने.
हे रोम रोम में बसने वाले राम
जगत के स्वामी हे अन्तर्यामी मैं तुझसे क्या मांगू।
मैने मोहन को बुलाया है वो आता होगा
राधे राधे बोल श्याम आयेंगे।
संत भगत हितकारी मेरे राम जी पधारे।।
गायिक निधि सिंह ने .
सत्यम शिवम सुन्दरम।
यशोमति मइया से बोले नंदलालाए राधा क्यो गोरी मै क्यो काला।
ओ कान्हा अब तो मुरली बाजे सुनाकर श्रोताओं को भक्त रस में सराबोर कर दिया।

वाद्य यंत्रों में की बोर्ड पर बब्बू बाजपेयी, तबला व नाल पर आशू शुक्ला, गिटार व आक्टोपैड पर अपूर्व दीक्षित ने साथ दिया। संचालन मेला प्रभारी मोहित गिरि ने किया।

विनोद मिश्रा नगर अध्यक्ष व्यापार मण्डल, डा0 राम औतार यादव सभासद राजेश वर्मा, सब्बन खान, शाहिद अली अंसारी, आशीष अवस्थी लालू, हरिओम वर्मा, रज्जन खां, सुरेश जायसवाल, धर्मेंद्र जायसवाल, सुशील कुमार, नानकचंद वर्मा, दानिश राईन, मोहित कुमार कनौजिया, सौरभ तिवारी, हर्ष अवस्थी, अनिल गुप्ता, रियाजुद्दीन, इजरान, कफील अहमद, धर्मेंद्र बाल्मीकि शत्रोहन मिश्र, रविंद्र कटियार, धीरज बाजपेयी, नगर पालिका परिषद के सफाई एवं खाद्य निरीक्षक संदीप कुमार वर्मा, आरआई अब्दुल रहीम अंसारी, लिपिक अमित श्रीवास्तव, शिवम् भारती, मोहित अवस्थी, विमलेश वर्मा, रामसिंह, अवधेश कुमार, आशुतोष शुक्ला, प्रेमप्रकाश पाठक, रिषि कुमार, रितेश कुमार, अरविंद कुमार,अशोक कुमार आदि मौजूद रहे।

भाजपा महानगर के पदाधिकारियों ने 1066 मन्दिरों पर धूमधाम से मनाया रामनवमी उत्सव

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भाजपा लखनऊ महानगर आनंद द्विवेदी के नेतृत्व में लखनऊ महानगर के अंतर्गत श्रीराम लला का दिव्य विग्रह फोटो 'राम काजु कीन्हे बिनु मोहि कहा बिश्राम' का फ्लैक्स 1066 मन्दिरों पर लगाया। साथ ही क्षेत्रीय विधायक, महापौर, पार्षद, जनप्रतिनिधि, मण्डल अध्यक्ष एवम पार्टी के महानगर पदाधिकारियों उपस्थित होकर राम नवमी उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया। कार्यक्रम में भगवा यात्रा, शोभा यात्रा में सम्मलित होने के साथ कार्यकताओं ने मन्दिरों पर उपस्थित होकर पूजा अर्चना कर प्रसाद का वितरण किया गया। भाजपा महानगर अध्यक्ष आनंद द्विवेदी काली बाड़ी मंदिर में पहुंचकर पूजा अर्चना की वही बंगला बाजार तथा भावानीगंज वार्ड से निकलने वाली शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर कार्यक्रम लखनऊ महानगर उपाध्यक्ष धनश्याम दास अग्रवाल, कार्यक्रम संयोजक टिंकू सोनकर, चेतन विष्ट, विजय भुर्जी, हिमाशु सोनकर, ईशु, उपस्थित रहे।

बड़े भीट बाबा मेले में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

खागा (फतेहपुर)। हरदों गांव स्थित बड़े भीट बाबा के मेले में भारी भीड़ उमड़ी। वार्षिक मेले में तहसील क्षेत्र के अलावा दूर गांवों से लोग पहुंचे। मन्नतें पूरी होने के बाद लोगों ने यहां झंड़े भी चढ़ाए। हरदों गांव स्थित बड़े भीट बाबा देवस्थान का अलग ही महत्व है। क्षेत्रीय लोगों की बाबा के प्रति बेहद आस्था है। ऐसा कहा जाता है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी बेकार नहीं जाती है। बुधवार भोर पहर से ही चार पहिया, टेंपो, ट्रैक्टर, दो पहिया आदि वाहनों का मेला प्रांगण में जमावड़ा लगना शुरु हो गया। तेज धूप की चिंता किए बगैर स्त्री, पुरुष व बच्चे बड़े भीट बाबा के दर्शन-पूजन के लिए पहुंचे। देवस्थान तक जाने वाले रास्तों में दिन भर श्रृद्धालुओं की आवाजाही बनी रही। मेले में सजी सौंदर्य प्रशाधन तथा घर-गृहस्थी की दुकानों में महिलाओं की भारी भीड़ रही। सुरक्षा के लिहाज से कोतवाली पुलिस, महिला पुलिस की मुस्तैदी की गई थी। आगजनी की घटना से निपटने के लिए दमकल की गाड़ी को मुस्तैद किया गया था।

नगीना में बसपा के सामने सीट बचाने की चुनौती, पीतल नगरी में हाथी दौड़ाने की जुगत

● नगीना से आजाद समाज पार्टी के चन्द्रशेखर के उतरने से चुनाव दिलचस्प

सतीश सिंह। लखनऊ

बिजनौर से अलग होकर संसदीय सीट बनी नगीना बसपा के लिए दलित राजनीति की प्रयोगशाला रहा है। बसपा प्रमुख मायावती खुद यहां से सांसद रह चुकी हैं। ऐसे में यहां पर दलित-मुस्लिम समीकरण नगीना में जीत की गारंटी माना जाता है। लेकिन इस बार के चुनाव में आजाद समाज पार्टी के चन्द्रशेखर के मैदान में उतरने से यहां पर सीट फंसती नजर आ रही है। वैसे यहां से बसपा के टिकट पर सुरेन्द्रपाल सिंह, सपा से मनोज कुमार और बीजेपी से ओमकुमार मैदान में हैं। वहीं पीतल नगरी के नाम से विख्यात मुरादाबाद में बसपा को दलित-मुस्लिम वोटों का सहारा है। यहां से बसपा के टिकट पर मो. इरफान सैफी, सपा से रूचिवीरा और बीजेपी से कुंवर सर्वेश कुमार मैदान में हैं।

नगीना संसदीय सीट

बिजनौर से अलग होकर बनी नगीना संसदीय सीट प्रदेश की नई लोकसभा सीटों में से एक है। नगीना लोकसभा सीट के तहत धामपुर, नगीना, नजीबाबाद, नहटौर और नूरपुर विधानसभा सीटें आती हैं, जिसमें 2 सीटों पर समाजवादी पार्टी को तो 3 सीटों पर बीजेपी को जीत मिली थी। इससे पहले 2017 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को 3 सीटों पर तो सपा को 2 सीटों पर जीत मिली थी।

नगीना संसदीय सीट का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है और यह सीट 2008 के परिसीमन के बाद अस्तित्व में आई थी और यहां पर पहली बार 2009 में वोट डाले गए। पिछले 3 चुनावों में नगीना सीट पर किसी एक दल को जीत नहीं मिली, हर बार अलग-अलग दलों के खाते में जीत गई है। 2009 के चुनाव में समाजवादी पार्टी के यशवीर सिंह को जीत मिली थी। उन्होंने बीएसपी के रामकिशन सिंह को हराया था। इसके बाद 2014 के चुनाव में प्रदेश में मोदी लहर का असर दिखा। यहां पर भाजपा ने यशवीर त्यागी को हराया था। 2019 के चुनाव में सपा-बसपा गठबंधन के चलते यहां पर बीएसपी के गिरीशचंद्र ने जीत हासिल की थी। उन्होंने भाजपा के डॉ. यशवंत सिंह को हराया था।

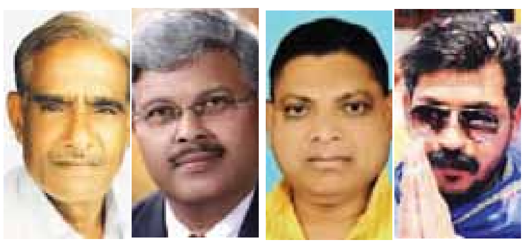

चन्द्रशेखर के आने से बसपा की बढ़ी चुनौती

2024 के चुनाव में बसपा अपनी सीटिंग सीट को दलित व मुस्लिम वोटों के सहारे बरकरार रखने की कोशिश में है। लेकिन आजाद समाज पार्टी के चन्द्रशेखर आजाद के मैदान में उतरने से यहां पर दलित वोटों के बीच सेंधमारी देखने को मिल रही है। ऐसे में यहां पर बीएसपी को नुकसान होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

मुरादाबाद संसदीय सीट

पीतल नगरी के नाम से पूरी दुनिया में विख्यात मुरादाबाद सीट पर बसपा ने मो. इरफान सैफी को मैदान में उतारा है। जबकि सपा ने यहां से सीटिंग कैंडीडेट डॉ. एस.टी.हसन का टिकट काटकर रूचिवीरा को मैदान में उतारा है। वहीं भाजपा से यहां पर कुंवर सर्वेश कुमार मैदान में हैं। भाजपा प्रत्याशी कुंवर सर्वेश सिंह 2009, 2014, 2019 और इस बार 2024 में लगातार चौथी बार लोकसभा का चुनाव लड़ रहे है। मुरादाबाद की कुल आबादी 41 लाख के करीब है, जिसमें 54.29 प्रतिशत पुरुष और 45.70 प्रतिशत महिला आबादी है। मुरादाबाद जनपद में 6 विधानसभा सीट आती हैं। 2009 में नए परिसीमन के बाद कुंदरकी और बिलारी विधानसभा संभल लोकसभा सीट में चली गई। मुरादाबाद लोकसभा क्षेत्र में बिजनौर जनपद की बढ़ापुर विधानसभा सीट को शामिल किया गया।

शाहजहां के बेटे के नाम पर पड़ा शहर का नाम

मुरादाबाद पीतल नगरी के नाम से पूरी दुनिया में विख्यात है। इस शहर को 1625 में रुस्तम खान ने बसाया था। इस शहर को इतिहास के पन्नो में चौपाल के नाम से जाना जाता था। बाद में शाहजहां के बेटे मुराद के नाम पर इसका नाम मुरादाबाद रखा गया।

मो. अजहरूद्दीन 2009 में कांग्रेस के टिकट पर यहां से जीते

मुरादाबाद सीट पर लोकसभावार चुनाव देखें तो 2019 के चुनाव में सपा के डॉ. एस.टी.हसन ने भाजपा के कुंवर सर्वेश कुमार को हराया था। वहीं 2014 के चुनाव में भाजपा के खाते में यह सीट आ गयी। 2009 के चुनाव में कांग्रेस के टिकट पर मो. अजहरूद्दीन ने बीजेपी के सर्वेश कुमार को हराया था। जबकि 2004 में सपा के डॉ. शफीकुर्रहमान बर्क ने यहां से जीत दर्ज की थी।

52 प्रतिशत हिन्दू और 47 प्रतिशत मुस्लिम वोटर

मुरादाबाद लोकसभा पर 52 प्रतिशत हिन्दू और 47 प्रतिशत मुस्लिम वोट हैं। इस सीट पर मुस्लिम वोटर ही निर्णायक होते हैं। भाजपा प्रत्याशी सर्वेश सिंह मोदी की गारंटी पर हिन्दू मुस्लिम वोट पर जीत का दावा कर रहे हैं। वहीं सपा प्रत्याशी रुचि वीरा भाजपा हटाने, संविधान बचाने, बेरोजगारी, महंगाई को दूर करने के लिए सर्व समाज का वोट मिलने का दावा कर अपनी जीत पक्की मान रही हैं। बसपा प्रत्याशी इरफान सैफी भी इस चुनावी मुकाबले में भाजपा और सपा को टक्कर देते दिख रहे हैं।

अगवा किये गये व्यक्ति को पुलिस ने अपहर्ताओं से छुड़ाया

दोतरफा प्रेम प्रसंग मामले में हत्या के मकसद से अपहरण करने वाली महिला समेत तीन गिरफ्तार

- पुलिस की तत्परता से अगवा किये गये बृजेश की बची जान
- सर्विलांस सेल व थाना पिपरी पुलिस के संयुक्त प्रयास से मिली सफलता

संवाददाता। सोनभद्र

सर्विलांस व थाना पिपरी पुलिस टीम द्वारा 24 घण्टे के भीतर अपहृण किए गये व्यक्ति की सकुशल बरामदगी एवं हत्या करने की नियत से बंधक बनाने वाली एक महिला सहित तीन अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार करने मे सफलता मिली। 16 अप्रैल को कुसुम पाण्डेय पत्नी बृजेश कुमार पाण्डेय निवासिनी हिण्डालको कालोनी रेनुकूट थाना पिपरी द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया था कि 15 अप्रैल को मेरे पति बृजेश कुमार घर से तिलकोत्सव में शामिल होने के लिए दुद्धी निकले थे परन्तु अभी तक घर नही आये हैं। जिसके सम्बन्ध में थाना पिपरी पर रिपोर्ट दर्ज किया गया था।

उक्त जघन्य घटना की गम्भीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी पिपरी के निर्देशन में त्वरित कार्रवाई करते हुए अपहृत की बरामदगी हेतु थाना पिपरी पर दो टीम गठित की गयी। टीमों द्वारा संयुक्त रूप से सूचना संकलन एवं सर्विलांस सेल के सहयोग से त्वरित कार्यवाही करते हुए ग्राम डुमरडीहा थाना दुद्धी से एक महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार करने के साथ ही बृजेश कुमार पाण्डेय की सकुशल बरामदगी की। अभियुक्तों ने पूछताछ के दौरान बताया कि हिण्डालको कालोनी रेनुकूट के रहने वालें बृजेश कुमार पाण्डेय की नजदीकी प्रतिभा मिश्रा से थी। दोनो के बीच मोबाइल पर बातचीत होती रहती थी।

अभियुक्ता प्रतिभा मिश्रा का पूर्व से राजा उर्फ राजाबाबू से भी प्रेम संबंध था राजा प्रतिभा मिश्रा से नाराजगी व्यक्त करते हुए बृजेश से बातचीत करने सें मना करता था इसी बीच प्रतिभा मिश्रा द्वारा बृजेश को मना करने पर भी न मानने और मिलने का दबाव बनाने पर योजना बनाकर प्रतिभा मिश्रा से वार्ता कराकर बृजेश को दुद्धी बुलाकर रास्ते से हटाने की योजना बनायी गयी। योजना के मुताबिक प्रतिभा मिश्रा ने राजा बाबू के कहने पर 15 अप्रैल को करीब 8.00 बजे रात्रि धोखे से दुद्धी रेलवे क्रासिंग के पास बुलाया जहां पर अपहृत बृजेश कुमार पाण्डेय अपने घर से तिलकोत्सव में शामिल होने के लिए दुद्धी जाने की बात कहकर घर से निकला था, दुद्धी रेलवे क्रासिंग पर पहुचने पर बृजेश को प्रतिभा मिश्रा राजा बाबू एवं विकास वर्मा द्वारा अपहरण कर बंधक बनाकर ग्राम डुमरडीहा लाया गया कोई संदेह न हो इसलिए अपहरणकर्ता बृजेश की मोबाइल से बेटे व पत्नी की वार्ता कराते रहे। अभियुक्तो ने बृजेश की हत्या करने की योजना, दिन का समय हो जाने के कारण स्थगित कर दिया गया तथा अगले रात्रि का इन्तजार किया जाने लगा इसी बीच गठित टीम द्वारा पहुंचकर अपहृत की सकुशल बरामदगी करते हुए प्रतिभा मिश्रा पत्नी सूर्य प्रकाश मिश्रा निवासी डूमरडीहा, थाना दुद्धी, उम्र 36 वर्ष राजाबाबू उर्फ राजा सिंह पुत्र घमड़े सिंह उर्फबनारसी लाल निवासी रामनगर वार्ड नं. 2 दुद्धी, थाना दुद्धी, उम्र 24 वर्ष विकास वर्मा पुत्र सुरेन्द्र कुमार निवासी सन्दलपुर थाना सन्दलपुर जिला कानपुर देहात हालपता रामनगर वार्ड नं. 2 दुद्धी, थाना दुद्धी 22 वर्ष को गिरफ्तार कर लिया गया।

राम जानकी मंदिर में भव्य राम जन्मोत्सव के बाद निकाली गई राम दरबार शोभायात्रा

संवाददाता। सोनभद्र

श्री रामनवमी के शुभ अवसर पर श्री राम दरबार अखाड़ा समिति द्वारा श्री राम जानकी मंदिर पर भव्य राम जन्मोत्सव के साथ भव्य राम दरबार शोभायात्रा निकाली गई समिति द्वारा दोपहर 12 बजे भगवान राम का जन्मोत्सव मनाया गया जन्मोत्सव के साथ किन्नर समुदाय द्वारा सोहर गाकर नित्य प्रस्तुत किया गया।

दोपहर 4 से अखाड़ा समिति द्वारा भव्य शोभायात्रा श्री राम दरबार की निकल गई शोभायात्रा राम जानकी मंदिर से प्रारंभ होकर मेन चौक होते हुए धर्मशाला चौक बरौली चौराहे कचहरी होते हुए महिला थाने से वापस श्री राम जानकी मंदिर पर समापन हुई यात्रा जिन मार्गो से गई उन मार्गों पर राम भक्तों द्वारा पुष्प वर्षा के साथ ही मिष्ठान वितरण पानी शरबत बिस्कुट इत्यादि की व्यवस्था की गई थी यात्रा में मनमोहक झांकियां राम दरबार के साथ परशुराम की गणेश जी की झांकी के साथ ही विभिन्न प्रकार की झांकियां सभी भक्तों को लुभा रही थी ढोल डमरू की आवाज से पूरा नगर भक्ति में में डूब गया था। सदर विधायक भूपेश चौबे समेत हजारों की संख्या में राम भक्त शोभायात्रा में शामिल रहे।

एनटीपीसी सिंगरौली की प्रथम प्राथमिकता है विकास

सोनभद्र। एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा चिल्काडांड ग्राम में ग्रामवासियों से विकासात्मक सुझाव प्राप्त करने एवं विकास कार्यों में सहभागिता स्थापित करने के लिए दिनांक 16 अप्रैल को विशेष बैठक आयोजित की गई जिसमें एनटीपीसी की ग्राम विकास संबंधी योजनाओं से ग्राम वासियों को अवगत कराया गया। एनटीपीसी सिंगरौली योजनबद्ध तरीके से शक्तिनगर विशेष क्षेत्र प्राधिकरण साडा के माध्यम से परियोजना प्रभावित गांव में कार्य करने के लिए विशेष पहल कर रही है ताकि गांवों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा शक्तिनगर विशेष क्षेत्र प्राधिकरण साडा के माध्यम से कार्य करने के संबंध में प्रशासन से भी चर्चा की गई है ताकि सुचारु रूप से आवंटित कार्य को पूर्ण कराया जा सके बैठक को संबोधित करते हुए मानव संसाधन विभाग के प्रमुख सिद्धार्थ मंडल ने कहा कि विकास कार्य एनटीपीसी सिंगरौली की प्रथम प्राथमिकता है।

आपदा पीड़ित किसानों व अन्य के खातों में किया गया सीधे भुगतान

- खातों में सीधे हस्तांतरित किए गए 79110 रुपये
- दुर्घटना सहायता योजना के तहत पीड़ितों ने किये थे आनलाइन आवेदन

अंबेडकर नगर। आपदा से प्रभावित व्यक्तियों को तत्काल मदद पहुंचाने हेतु जिलाधिकारी अविनाश सिंह द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में मण्डी समिति अकबरपुर क्षेत्रान्तर्गत मुख्यमंत्री खेत–खलिहान अग्निकाण्ड दुर्घटना सहायता योजना के अन्तर्गत कृषकों , लाभार्थियों द्वारा अग्निकाण्ड पीड़ित का ऑनलाइन आवेदन दावा प्राप्त होने के उपरांत इसकी जांच आख्या के आधार पर अकबरपुर क्षेत्रान्तर्गत कुल 24 कृषक , लाभार्थी को प्रभावित क्षेत्रफल 2.637 हेक्टेयर, सहायता हेतु देय रु 79110.00 भुगतान सीधे अकाउंट में कर दिया गया है।

मण्डी परिषद द्वारा मण्डी समितियों के माध्यम से संचालित योजना मुख्यमंत्री खेत–खलिहान अग्निकाण्ड दुर्घटना सहायता योजना के अन्तर्गत यह प्रावधानित है कि अग्निकाण्ड दुर्घटना की सूचना प्रभावित कृषक/उत्पादक को निर्धारित प्रारूप पर आवेदन 90 दिन के अन्दर क्षेत्र के मण्डी समिति के सचिव अथवा उपजिलाधिकारी को देना होता है। इस हेतु अकबरपुर क्षेत्रान्तर्गत प्राप्त आवेदन पत्र की जॉच मण्डी समिति के सचिव स्वयं अथवा अपने अधीनस्थ मण्डी सहायक से अन्यून किसी कर्मचारी से स्थलीय जाँच कराने के उपरान्त सम्बन्धित मण्डी समिति क्षेत्र के उप जिलाधिकारी को दावा आवेदन पत्र स्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया गया एंव सम्बन्धित उप जिलाधिकारी से स्वीकृति उपरान्त लाभार्थी को भुगतान सीधे अकाउंट में कर दिया गया है ।

प्रयागराज को सुंदर और विकास का मॉडल बनाएंगे: प्रवीण पटेल

- भाजपा के फूलपुर लोकसभा केंद्रीय चुनाव कार्यालय का हुआ उद्घाटन

संवाददाता। प्रयागराज

भारतीय जनता पार्टी फूलपुर लोकसभा केंद्रीय चुनाव कार्यालय का उद्घाटन जॉर्जटाउन क्लब के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर फूलपुर संसदीय क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी प्रवीण पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के ही नहीं बल्कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ नेता हैं। जिनके नेतृत्व में भारत का विश्व में डंका बज रहा है।

कहा कि उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का विजन है प्रयागराज को दुनिया का सबसे सुंदर शहर बनाने का और इसके लिए हम दिन रात एक कर देंगे और प्रयागराज जिले को सुंदरता के साथ साथ दुनिया का विकास मॉडल बनाएंगे। इस अवसर सांसद केसरी देवी पटेल एवं पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व कैबिनेट मंत्री नरेंद्र कुमार सिंह गौर ने कहा कि देश के अंदर चारों तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी की लहर दौड़ रही है। पूरा देश भारतीय जनता पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मजबूत नेतृत्व को स्वीकार कर चुकी है और कहा प्रयागराज की दोनों लोकसभा सीटों पर प्रचंड बहुमत के साथ कमल खिलेगा।

इस अवसर पर महापौर गणेश केसरवानी ने कहा कि यह चुनाव विकसित आत्मनिर्भर और मजबूत भारत के लिए लड़ाई भारतीय जनता पार्टी लड़ रही है और कांग्रेस सपा और उसके सहयोगी दल सिर्फ अपने परिवार और देश के विभाजनकारी शक्तियों को बढ़ावा देने के लिए चुनाव लड़ रही है लेकिन भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता ने कमर कर दिया है और संकल्प ले लिया है कि देश की विभाजनकारी शक्तियों को हम मिट्टी में मिला देंगे।

इस अवसर पर लोकसभा प्रभारी बालेंदु मणि त्रिपाठी ने कहा कि कहा कि भारतीय जनता पार्टी का एजेंडा आत्मनिर्भर विकसित और नए भारत के निर्माण के लिए और कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता इस लोकसभा के चुनाव में देश के भविष्य के लिए मां भारती के गौरव के लिए भारत की सनातन संस्कृति के लिए भारत के विश्व में शक्तिशाली बनाने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे। फूलपुर लोकसभा संयोजक एवं विधायक गुरु प्रसाद मौर्य ने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत में संस्कृतिक जागरण का उदय हुआ और भारत की जयकार पूरी दुनिया में हो रही है। विधायक हर्षवर्धन बाजपेई ने कहा कि शहर उत्तरी विधानसभा अबकी बार सबसे ज्यादा लीड करके फूलपुर संसदीय क्षेत्र को जीतने जा रही है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की लड़ाई देश की जनता लड़ाई रही है और विपक्षी नेता सपा और कांग्रेस के लोग अभी से ही अपनी हार मान बैठे हैं और अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे। गंगापार जिलाध्यक्ष कविता पटेल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी अपने पिछले चुनाव के मुकाबले में प्रयागराज के दोनों लोकसभा सीटों का रिकॉर्ड तोड़ेगी और प्रचंड बहुमतके साथ जीत दर्ज करेगी।

क्विक न्यूज

भाजपा नेता ओमप्रकाश कुशवाहा का निधन

गाजीपुर। भारतीय जनता पार्टी , मंडल बाराचवर द्वितीय के वर्तमान मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश कुशवाहा 52 वर्ष का बिमारी के चलते गत रात्रि 9-30 बजे , चिकित्सा के दौरान बीएचयू वाराणसी में निधन हो गया।वह विगत कुछ दिनों से कैंसर से पीड़ित थे तथा पेट दर्द की शिकायत पर परिजनों द्वारा उन्हें कल ही बीएचयू वाराणसी में भर्ती कराया गया था, जहां उनका निधन हो गया। व्यवहार से अत्यंत विनम्र एवं सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले ओमप्रकाश कुशवाहा का पार्थिव शरीर देर रात उनके ग्राम -पहराजपुर, थाना करीमुद्दीनपुर पहुंचने पर ग्रामीणों सहित पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ पड़ी लोग उनके घर पहुंच कर अपनी संवेदना प्रकट कर रहे हैं।

इफको फूलपुर में नवरात्रि की अष्टमी पर हुई पूजा अर्चना

प्रयागराज। इफको घियानगर परिसर में स्थित मंदिर में चैत्र नवरात्रि अष्टमी के दिन दुर्गा माता के अष्टम रूप महागौरी माता की पूजा की गई। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया ने पत्नी विनीता कुदेशिया के साथ कन्या पूजन किया तथा कन्याओं को भोग लगाया। इस दौरान डॉ अनीता मिश्रा मुख्य पुजारी रंजीत मिश्र तथा बड़ी संख्या में महिला भक्त अष्टमी पूजन में शामिल हुईं। इस मौके पर भजन कीर्तन गाया गया तथा परिवारजनों के उन्नति एवं सुख समृद्धि की प्रार्थना की गई। यह जानकारी स्वयम प्रकाश जनसम्पर्क अधिकारी इफको फूलपुर ने दी।

बाल स्वरूप में निकली भगवान श्रीराम की भव्य शोभायात्रा

प्रयागराज। श्रीराम जन्मोत्सव के पावन पर्व पर श्रीराम जन्मोत्सव शोभा यात्रा समिति दारागंज प्रयागराज के तत्वाधान में बाल स्वरूप भगवान श्रीराम की भव्य शोभायात्रा दारागंज निकाली गई। यात्रा का शुभारंभ महानिर्वाणी अखाड़े के पूज्य महंत यमुना पुरी महाराज पूर्व कैबिनेट मंत्री नरेंद्र कुमार सिंह गौर महापौर गणेश केसरवानी विधायक हर्षवर्धन बाजपेई विधायक प्रवीण पटेल क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अवधेश चंद्र गुप्ता भाजपा जिला प्रवक्ता राजेश केसरवानी ने भगवान श्रीराम जी का आरती पूजन करके शुभारंभ किया। शोभा यात्रा समिति के अध्यक्ष प्रकाश चंद्र वैश्य ने कहा कि शोभा यात्रा निकालने का मुख्य उद्देश्य की आगामी पीढ़ी को या शिक्षा देना है कि मर्यादा भगवान पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्श आचरण और कर्तव्य और आचार विचार अपने जीवन में आत्मसात करें।

श्रीराम के जन्मोत्सव पर धूमधाम से निकली भव्य शोभायात्रा

संवाददाता। मीरज़ापुर

नगर में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव पर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। पूरा नगर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव पर भगवा रंग में रंगा रहा। नगर में प्रदेश का विशाल शोभायात्रा पूरी शानों शौकत के साथ निकाला गया। यात्रा में भगवा परिधान और पगड़ी बांध कर युवाओं और महिलाओं का जत्था पूरे माहौल को भक्तिमय बना रहा था।

जय जय श्रीराम की गूंज से नगर गूंजायमान रहा। शोभा यात्रा में पड़ोसी जनपद से डीजे, ताशा और झांकिया भी शामिल हुई। विंध्य धाम में नौ दिन शक्ति की साधना करने वाले भक्त नवमी पर राम जन्मोत्सव पर राम की भक्ति में मग्न रहे। नगर के प्रमुख मार्गो को भगवा पताका से सजाया गया था। नगर के संगमोहाल, तेलियागंज , पक्की सराय, घंटाघर, गुड़ हट्टी चौराहा, मुकेरी बाजार आदि प्रमुख चौराहों पर बज रहे डी जे से नगर राम भक्ति में सराबोर रहा। हर मोहल्ले में साउंड बाक्स लगाने की होड़ रही। लाउड स्पीकरों पर बज रहे भजन भगवान श्रीराम का गुणगान कर रहे थे। भक्ति गीतों की गूंज से पूरा नगर राममय हो गया।

विशाल शोभायात्रा संगमोहाल हनुमान मन्दिर से विश्व हिंदू परिषद के पूर्व जिला मंत्री कार्यक्रम के संरक्षक और बजरंग दल के पूर्व जिला संयोजक कार्यक्रम के प्रभारी के नेतृत्व में शोभायात्राआरम्भ हुई । जो कटरा कोतवाली, कच्ची सड़क, रतनगंज, तेलियागंज, डंकीनगंज चौराहा, पक्की सराय, घंटाघर, बसनहीं बाजार, धुन्धी कटरा, गुड़हट्टी चौराहा, मुकेरी बाजार, लालडिग्गी, गणेशगंज भैंसहिया टोला होते संगमोहाल हनुमान मंदिर पर जाकर सम्पन्न हुई।

शोभायात्रा में भगवा ध्वज लहराते हुए युवाओं का विशाल समूह चल रहा था । सिर पर पगड़ी, माथे पर तिलक और जुबां पर जय श्रीराम का उद्घोष नगर को राममय बना रहा था। विभिन्न स्थानों पर राम भक्तों के लिए लोगों ने स्वेच्छा से स्टाल लगाकर फलाहार, शर्बत और पानी का वितरण किया। जगह जगह स्वागत द्वार बनाया गया था। शोभायात्रा में मिर्जापुर जनपद के अलावा प्रयागराज सोनभद्र वाराणसी और भदोही के डीजे वाहन शामिल हुए। समिति के अध्यक्ष विवेक बरनवाल ने भक्तों का स्वागत किया। कहा कि राम भक्तों की आस्था के चलते आज प्रभु श्रीराम टाट से निकल कर ठाठ से अपने आलय में विराजमान है।

यात्रा प्रभारी रवि शंकर साहू ने कहा कि चन्द लोगों के साथ शुरू हुई यात्रा आज प्रदेश की भव्य यात्रा में शामिल है। इसके लिए युवाओं के उत्साह और अपने संस्कार संस्कृति के प्रति समर्पण के भाव को नमन किया। इस मौके पर विश्व हिंदू परिषद के जिलाध्यक्ष रामचन्द्र शुक्ल, शिखा अग्रवाल, आदि ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

शोभायात्रा का नेतृत्व समिति प्रभारी रविशंकर साहू, प्रांजल सिंह, मनोज दमकल, विश्व हिंदू परिषद के प्रांत के उपाध्यक्ष विद्याभूषण दुबे जी शिखा अग्रवाल दीपा उम्र गुंजन गुप्ता राज माहेश्वरी, आदि ने किया।

मां सिद्धिदात्री और भगवान राम की झांकी देख भक्त हुए निहाल

सकलडीहा, चन्दौली। बासंतिक नवरात्र के नौवें दिन मां सिद्धिदात्री का कस्बा के काली माता मंदिर पर झांकी सजाया गया। दुर्गा मंदिर पर भगवान राम की झांकी सजाया गया। इसके अलावा वही अभेद आश्रम पर नौ कन्याओं का भोज कराते हुए प्रसाद वितरण किया गया। इस मौके पर सुबह से ही महिला और भक्तों की हवन पूजन के लिये भीड़ जुटी रही।

कस्बा के दुर्गा मंदिर पर रामनवमी के अवसर पर भगवान राम की आकर्षक झांकी सजाया गया था। वही काली माता मंदिर पर मां सिद्धिदात्री की झांकी सजाया गया था। इसके पूर्व अभेद आश्रम टिमिलपुर में नवरात्रि के अंतिम दिन नौ कन्याओं का विधि विधान से पूजा अर्चना के बाद भोजन कराते हुए प्रसाद वितरण का कार्यक्रम किया गया। अभेद आश्रम के शेखर साधू ने बताया कि मां की विधि विधान से पूजा अर्चना करने पर भक्तों के सारे कष्ट दूर होते है। वही मंदिर के पुजारी रामजनम चौबे व दीक्षा चौबे और मुरलधर पांडेय ने बताया कि नौ दिन मां की पूजा करने वाले भक्तों की सभी मनोकानमा पूरी होती है।

अज्ञात कारण से आग लगने पर मवेशी सहित लाखों का नुकसान

सकलडीहा, चन्दौली। कोतवाली क्षेत्र के नोनार तुलसी आश्रम गांव में एक मकान में अज्ञात कारण से आग लगने पर एक भैस एक भैस का बच्चा और चार बकरी सहित डेढ़ से दो लाख का सामान व खाद्यान जलकर खाक होगया। घटना की जानकारी होने पर ग्रामीणों ने अथक प्रयास कर आग पर काबू पाया। सूचना पर पहुंचे नायब तहसीलदार अमित सिंह ने घटना और नुकसान के बारे में जानकारी ली। नोनार गांव के भिक्खी विंद की पुत्री सोनी बिंद गांव के सिवान में मकान बनाकर रहती है। घर के सामने दरवाजे पर भैंस बकरी सहित अन्य सामान रखा हुआ था। दोपहर एक बजे करीब अज्ञात कारण से आग लगने पर धूं धूंकर जलने लगा। आग लगते ही मवेशी चिल्लाने लगे। आग की लपट से करीब 70 हजार की भैस और बच्चा जलकर मर गये। पास में बांधे हुए चार बकरी भी जल जाने से मौत हो गयी। इसके अलावा डेढ़ दो कुंतल गेहूं, चारपाई, साइकिल सहित करीब दो लाख का सामान जलकर खाक होगया। घटना के बाद ग्रामीणों ने किसी तरह आग पर काबू पाया। लोगों ने फायर विग्रेड को सूचना दिया था। इसके बाद भी मौके पर समय से नही पहुंच पाया। इस बाबत नायब तहसीलदार अमित सिंह ने बताया कि रिपोर्ट लेखपाल द्वारा तैयार की जा रही है। शीघ्र ही मुआवजा दिया जायेगा।

लोकतंत्र को बचाने का चुनाव है यह लोकसभा चुनाव: देवी प्रसाद

संवाददाता। मीरजापुर

समाजवादी पार्टी लोकसभा चुनाव 2024 को फतह करने के लिए पूरे जी–जान से जुट गयी है। पार्टी के जिला कार्यालय लोहियाट्रस्ट पर जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी की अध्यक्षता मे जिला पदाधिकारियों की आवश्यक बैठक आयोजित की गई। बैठक मे सपा इण्डिया गठबंधन प्रत्याशी राजेन्द्र एस बिन्द के चुनाव में प्रचार प्रसार एवं जीताने की रणनीति पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर बैठक को सम्बोधित करते हुए सपा जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी ने उपस्थित सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओ से कहा कि हर एक वोटर सहेजने के लिए प्रत्येक बूथ पर सक्रिय होकर जीतने की योजना बनाएं। एक–एक घर का दरवाजा खटखटाए और सरकार की नाकामियों के साथ ही सपा की उपलब्धियों को जनता को बताने से न चूके। उन्होने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया है कि जब आप सभी वोटरों से मिले तो उनके दुख–दर्द को भी जाने और दूर करने का काम करें। मौजूदा सरकार में किसान परेशान हैं, नौजवानों को रोजगार नहीं मिल रहा, जनता त्रस्त है। उसके बीच हमें सरकार की नाकामियों और पार्टी की उपलब्धियों को बताना होगा। सपा इण्डिया गठबंधन के प्रत्याशी के पक्ष में माहौल बनाने से चूकना नहीं है। श्री चौधरी ने कहा कि लोकसभा चुनाव लोकतंत्र को बचाने का चुनाव है। कहा कि सभी जाति और धर्म के लोगों से सम्पर्क करते रहे और वर्तमान सरकार की नाकामियो के बारे में बताने काम भी करे। उन्होंने सभी लोगों से एकजुट होकर भाजपा सरकार को सत्ता से बेदखल करने का आह्वान किया। उन्होने कहा कि यह सरकार जिन लोकतंत्र की सीढ़ियों पर चढ़कर आज देश और प्रदेश पर हुकूमत कर रही है वह उन लोकतंत्र की सीढ़ियों को ही खत्म करना चाहती है।

कार्यक्रम के आयोजन को लेकर हुआ विचार विमर्श

प्रयागराज। भाग्य लक्ष्मी पिछले दो वर्षों से अपनी दिलचस्प कहानी और लक्ष्मी ऐश्वर्या खरे एवं ऋषि रोहित सुचंती की जिंदगी में आ रहे उतार चढ़ाव के साथ दर्शकों का मनोरंजन कर रहा है। हाल के एपिसोड में दर्शकों ने देखा कि किस तरह रंजीत अदनान खान पार्वती त्रिशा सारडा को अगवा कर लेता है ताकि वो लक्ष्मी को खुद से शादी करने के लिए ब्लैकमेल कर सके। हालांकि जैसे ही ऋषि को इसका पता चलता है वो पार्वती को बचाने के लिए गुरदासपुर पहुंच जाता है। जहां ऋषि पार्वती को रंजीत और उसके गुंडों से बचा लेता है। वहीं पार्वती उससे कहती है कि वो उसकी मां लक्ष्मी को बचाने में उसकी मदद करे। जी टीवी के शो में बेबी त्रिशा ने अपनी बेहतरीन परफॉर्मेंस से दर्शकों को इम्प्रेस कर लिया है लेकिन शूटिंग के दौरान वो जिस तरह से अपनी पढ़ाई मैनेज करती हैं वो बात इससे ज्यादा इम्प्रेस वाली है। इस शो में उनकी ऑन स्क्रीन मां का रोल निभा रहीं ऐश्वर्या ने इस चाइल्ड एक्टर के साथ बढ़िया रिश्ता बना लिया है।

डीएफसीसीआईएल के निदेशक ने न्यू मनौरी स्टेशन का किया निरीक्षण

संवाददाता। प्रयागराज

डीएफसीसी आईएल के निदेशक परिचालन और व्यवसाय विकास शोभित भटनागर ने ईडीएफसी के अपने दो दिवसीय निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान उत्तर मध्य रेलवे के महाप्रबंधक के साथ न्यू करछना से न्यू पंडित दीन दयाल उपाध्याय स्टेशन तक प्रयागराज पूर्व इकाई का निरीक्षण किया। उन्होंने बुधवार को अपने निरीक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रयागराज पश्चिम के न्यू मनौरी स्टेशन का भी निरीक्षण किया। डीएफसी रेलवे पर ट्रेनों की सुरक्षित सुचारू और तेज आवाजाही के लिए स्टेशन मास्टर कक्ष के डिजिटलीकरण और कमरे में विश्व स्तरीय प्रणाली प्रदान करने की कल्पना की। उन्होंने स्टेशन मास्टर के वीडियो पैनल पर उपलब्ध सभी कार्यों की जांच की। साथ ही सहायक ट्रांसफार्मर आपूर्ति की उपलब्धता रिले हट रूम खोलने क्रैंक हैंडल कुंजी जारी करने आदि के संकेत देने वाले उपकरणों की भी जांच की।

उन्होंने स्टेशन मास्टर के वीडियो पैनल पर उपलब्ध सभी इंडिकेशन दिखने वाले एमर्जेन्सी काउंटर्स सुरक्षा उपकरण की जांच की और सहायक ट्रांसफार्मर आपूर्ति की उपलब्धता रिले हट रूम खोलने क्रैंक हैंडल कुंजी आदि के संकेत दिखाने वाले ऑपरेशन्स का जायजा लिया। शोभित भटनागर निदेशक परिचालन और व्यवसाय विकास 1992 बैच के भारतीय रेलवे यातायात सेवा के अधिकारी हैं।

जिनके पास सूचना प्रौद्योगिकी वाणिज्यिक और संचालन में व्यापक अनुभव है। इससे पहले उन्होंने कॉनकोर में जीजीएम वाणिज्यिक एवं परिचालन मुख्य माल ढुलाई परिवहन प्रबंधक सीएफटीएम के साथ साथ उत्तर पश्चिम रेलवे में मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक सीपीटीएम के रूप में कार्य किया है। उन्होंने सीएफटीएम पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर के रूप में भी कार्य किया। वह उत्तर रेलवे में उप मुख्य परिचालन प्रबंधक डीसीओएम माल परिचालन सूचना प्रणाली एफओआईएस और रेलवे बोर्ड में कंप्यूटरीकरण एवं सूचना प्रणाली सीआरआईएस के निदेशक रहे हैं।

शोभित भटनागर उस टीम का हिस्सा थे जिसने 1999 2000 में एफओआईएस का प्रोटोटाइप विकसित किया था। जहां उन्होंने प्रोटोटाइप एप्लिकेशन को प्रोग्राम किया था। निरीक्षण के दौरान उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के सभी स्टेशनों पर गुडशेड होना चाहिए जो अधिक कार्गो व्यवसायों को आकर्षित करेगा और छोटे व्यवसायों और किसानों को कम अवधि में अपनी सामग्री के परिवहन में मदद करने में वरदान साबित होगा।

इस दौरे में डीएफसीसीआईएल में निर्माण चरण से संचालन चरण की और रुख करते हुए जीसीटी टर्मिनलों के निर्माण और इसके संयंत्र या विनिर्माण इकाई के परिसर में रेलवे कार्गो सेवाओं के लिए ग्राहकों द्वारा अपनी लागत पर निर्मित निजी स्वामित्व वाली साइडिंग को आसान बनाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना ग्राहक के कार्यों को रेलवे प्रणाली से जोड़ने के लिए उत्पादन इकाई आदि पर चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि न्यू मनौरी में उपलब्ध भूमि को गति शक्ति कार्गो टर्मिनल जीसीटी के लिए परिवर्तित किया जा सकता है जो कौशांबी प्रयागराज पश्चिमी क्षेत्र के विक्रेताओं को खाद्यान्न उर्वरक सीमेंट और पार्सल सेवाओं में बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

पायनियर
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 18 अप्रैल, 2024

सुखद पूर्वानुमान

अधिक बरसात

भारतीय मौसम विभाग-आईएमडी ने दशक में पहली बार पूरे देश में सामान्य से अधिक बरसात का पूर्वानुमान लगाया है। आईएमडी ने अपने दीर्घकालीन पूर्वानुमान से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है। एक दशक में पहली बार उसने पूरे देश में औसत से अधिक बरसात का अनुमान लगाया है। यह पूर्वानुमान विभिन्न क्षेत्रों के लिए कई प्रकार से महत्वपूर्ण है जिनमें कृषि व जल संसाधन प्रबंधन के साथ अन्य क्षेत्र भी शामिल हैं। नीति निर्माता और किसान इस खबर का स्वागत करेंगे, हालांकि आम लोगों को भी हमेशा की तुलना में ज्यादा मानसून से तालमेल बनाना होगा। यह सभी किसानों के लिए वास्तव में राहत की सांस होगी। कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है और वह समय पर व समुचित बरसात पर अत्यधिक निर्भर है। समुचित बरसात फसलें उगाने तथा अन्य कृषि गतिविधियां जारी रखने के लिए जरूरी है। बरसात में अधिकता के पूर्वानुमान के साथ ही किसान मिट्टी में ज्यादा नमी की उम्मीद कर सकते हैं जिससे फसलों की उत्पादकता बढ़ेगी। इसके साथ ही यह पूर्वानुमान उनको फसल चक्र की बेहतर योजना बनाने तथा कृषि उत्पादन अधिकतम करने का अवसर भी देता है। भारत के जल संसाधन गहन रूप से मानसून पैटर्न से जुड़े हैं। इसे देखते हुए सामान्य से अधिक बरसात जल भंडारों, झीलों तथा भूमिगत जल भंडारों को भरने के लिए अच्छी होगी। इससे जल का स्तर बढ़ाने में सहायता मिलेगी। इसकी खासकर जल संकट का सामना कर रहे क्षेत्रों में बहुत आवश्यकता है। उपयुक्त बरसात से जल संसाधनों पर पड़ने वाला दबाव घटेगा तथा घरेलू, औद्योगिक व कृषि क्षेत्र के लिए सप्लाई में सुधार आएगा। अच्छे मानसून से पनबिजली उत्पादन में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार ऊर्जा क्षेत्र भी लाभान्वित होगा।

लेकिन अभी सामान्य या सामान्य से अधिक मानसून का उत्सव मनाना उचित नहीं होगा। मौसम के पूर्वानुमान अपनी प्रकृति से ही अनुमानों पर आधारित होते हैं। देश भर में अच्छा मानसून एक विरल चीज रहा है। जहां सामान्य से अधिक बरसात से अनेक लाभ होते हैं, वहीं इससे कुछ चुनौतियां भी सामने आती हैं। ज्यादा बरसात के कारण खासकर निचले तथा जल भराव वाले क्षेत्रों में बाढ़ आ सकती है। बाढ़ से न केवल संपत्ति व ढांचागत संरचनाओं को नुकसान होता है, बल्कि इससे मानव जीवन भी खतरे में पड़ता है। इसलिए संबंधित अधिकारियों को ढांचागत संरचनायें मजबूत करने, जल निकासी व्यवस्थाओं में सुधार करने तथा प्रभावी बाढ़ प्रबंधन रणनीतियां बनाने की दिशा में पूर्वानुमान के आधार पर कदम उठाने चाहिए। भारी बरसात से मृदा क्षरण तथा भूस्खलन का खतरा खासकर पहाड़ी क्षेत्रों में बढ़ जाता है। इसलिए संकटग्रस्त परिस्थितिकी तंत्रों को बचाने तथा संकट कम करने के लिए उपयुक्त मृदा संरक्षण उपाय व पुनर्वनीकरण जैसे कदम उठाए जाने चाहिए। संबंधित अधिकारियों को उपयुक्त जल प्रबंधन व्यवहार अपना कर पानी की बरबादी रोकने तथा जल संसाधनों को अधिकतम करने के प्रयास करने चाहिए। भारतीय मौसम विभाग- आईएमडी की भविष्यवाणी किसानों के लिए कृषि उत्पादन बढ़ाने की बेहतर संभावनायें लाई है। वह अधिकारियों के लिए पानी की कमी से निपटने में सहायक हो सकती है। तैयारी, संरक्षण तथा टिकाऊ व्यवहारों के समग्र दृष्टिकोण के आधार पर भारत को प्रचुर बरसात का लाभ उठाने की तैयारी करनी चाहिए। इससे वह अधिक बरसात के कारण होने वाले संभावित जोखिमों से बच सकता है। इससे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण का मार्ग खुलेगा।

ईरानी हमले से स्थायित्व को खतरा

इज़राइल पर ईरानी हमला अपनी प्रकृति से प्रतीकात्मक है, पर इससे क्षेत्र में बढ़ते तनाव का संकेत मिलता है। हालांकि, अमेरिका ने शक्ति संतुलन बनाए रखने का वादा किया है।

नीलांत इलांगमुवा
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

ईरानी हमला अपनी प्रकृति से प्रतीकात्मक है, पर इससे क्षेत्र में तनाव का संकेत मिलता है। हालांकि, अमेरिका ने शक्ति संतुलन बनाए रखने का वादा किया है। हालांकि, इज़राइल ने विश्व नेताओं के अनुरोध पर संयम बरता है, पर उसने ईरान के खिलाफ बदला लेने की असाधारण कार्रवाई के प्रति प्रतिबद्धता भी प्रकट की है। इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है कि ईरान अपने मुहरों-हमास, हिजबुल्ला व हूती के माध्यम से न केवल इज़राइल पर हमले करता है, बल्कि वह इस पूरे क्षेत्र पर अपना वर्चस्व भी कायम करना चाहता है। ऐसे समय जब दक्षिण एशिया तथा पूर्वी एशिया में अनेक देश परंपरागत नव वर्ष मना रहे थे, पश्चिम एशिया के दूसरे सबसे बड़े देश ईरान ने अपने कट्टर दुश्मन इज़राइल पर अनेक मिसाइलों से निशाना लगाया। जार्डन और सऊदी अरब ने इज़राइल का समर्थन करते हुए ईरान द्वारा दागी अधिकांश मिसाइलों को गिरा दिया। यह हमला प्रतीकात्मक लगता है क्योंकि इसका उद्देश्य फिलिस्तीन में हमास, यमन में हौती तथा ईराक और लेबेनान में ईरान-समर्थक हिजबुल्ला का हौसला बढ़ाने के लिए है। इन सबने पश्चिम एशिया में इज़राइल के खिलाफ युद्ध का समर्थन किया है।

इस हमले ने उनका उत्साह बढ़ाने का काम किया। हमले के फौरन बाद हमास ने 'कैरो समझौता' अस्वीकार कर दिया जो शक्तिशाली खुफिया एजेंसियों-सीआईए व मोसाद के बीच वार्ताओं के माध्यम से हुआ था। मिस्र ने इसमें सहायता की थी और इसका उद्देश्य इज़राइली बंधकों को रिहा कराना था। हालांकि, अनेक देशों ने इज़राइल को त्वरित प्रतिक्रिया के लिए प्रोत्साहित किया, पर अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा कि यदि ईरान के खिलाफ हमले किए गए तो वे उनका समर्थन नहीं करेंगे। सच्चाई यह है कि अमेरिकी प्रशासन इस समय एक और युद्ध के लिए इज़राइल की सहायता नहीं कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका की छवि बहुत खराब है और बाइडेन की राजनीतिक शक्ति बहुत कमजोर हो गई है। ऐसे में यदि अमेरिका कोई मूर्खतापूर्ण निर्णय करता है ता उसे जल्द ही अभूतपूर्व नतीजों का सामना करना पड़ेगा। इलोन मस्क ने हाल में कहा है कि अमेरिका को एक और '11 सितंबर' जैसे हमले का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे टकरावों का असर न केवल वाशिंगटन या न्यूयार्क पर होगा, बल्कि इससे दुनिया भर में अमेरिकी सैनिक ठिकानों पर संकट पैदा हो सकता है। इतिहास ने सिद्ध किया है कि महाशक्तियां अंततः ध्वस्त हो जाती हैं। अपने जीवनकाल को देखते हुए मानव सभ्यता के दृष्टिकोण से अमेरिका महान साम्राज्यों के पतन की तुलना में युवा महाशक्ति है।

इतिहास पर गौर करें तो शक्तिशाली साम्राज्यों का उत्थान और पतन हुआ है। इनमें रोमन साम्राज्य, आटोमन साम्राज्य, मंगोल साम्राज्य तथा ब्रिटिश साम्राज्य शामिल हैं। 16वीं से 20वीं शताब्दी तक अस्तित्व में रहे ब्रिटिश साम्राज्य को आर्थिक दबावों तथा राष्ट्रवादी आंदोलनों का सामना करना पड़ा और अंततः यह आंतरिक कमजोरियों तथा बाहरी दबावों के सामने ध्वस्त हो गया। राजनीतिक, सैनिक तथा सामाजिक-आर्थिक तत्वों के कारण इन साम्राज्यों के ध्वस्त होने से दुनिया को नया स्वरूप मिला। इससे सत्ता का परिवर्तनशील चरित्र तथा आधुनिक भू-राजनीति व सभ्यता पर इतिहास का स्थाई प्रभाव स्पष्ट होता है। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका के 'डीप स्टेट' ने निश्चित रूप से अनेक अन्य देशों की तुलना में विश्व इतिहास को बेहतर ढंग से समझा है। इसी कारण अमेरिका की मूल रणनीति शांति की बात करते हुए नये युद्धों का सृजन करना है और अनिश्चितताओं पर नियंत्रण के लिए इन युद्धों को दीर्घकालीन त्रासदियों में बदलना है। इस रणनीति से वह अपने विरोधियों को कमजोर करते हुए अपनी सत्ता लगातार बनाए रखने में सफल रहता है। अनेक टकरावों को उनके राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ में देखने पर इन टकरावों के बारे में बेहतर समझदारी पैदा होती है।

इज़राइल द्वारा ईरान के खिलाफ राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मंचों पर लगातार प्रचारित विचारधारा एक राय या इज़राइल की प्रतिद्वंद्विता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक दीर्घकालीन रणनीति है जिसमें तथ्यों व लक्ष्यों को अमेरिका के साथ मिल कर सावधानी से तय किया जाता है। दूसरी ओर वह इन देशों पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंध लगवा कर वहां आंतरिक संकट पैदा करता है। यह रणनीति पश्चिम का स्थाई व्यवहार बन गई है। यह तथ्य भुलाया नहीं जाना चाहिए कि ईरान का हमला बदले की कार्रवाई है। यह सीरिया में ईरानी कौंसुलेट पर इज़राइल के उकसावे भरे हमले की प्रतिक्रिया है। उसकी कार्रवाई वियेना सम्मेलन का घोर उल्लंघन थी जिसमें ईरानी क्रांतिकारी गार्ड कार्पर्स की मौतें हुई थीं। कुछ विश्लेषकों के अनुसार, ईरान ने सोचा था कि यदि वह प्रतिक्रिया नहीं करेगा तो इज़राइल उसे और पीछे धकेलने तथा क्षेत्र में प्रतिरोध को कमजोर करने का प्रयास करेगा। लेकिन यह अनुमान लगाना उचित नहीं होगा कि इज़राइल ने सीरिया में ईरानी राजनयिक ठिकाने पर अपने हमले के परिणामों का अनुमान नहीं लगाया होगा।

इज़राइल की खुफिया एजेंसी ने सीरिया में हिजबुल्ला व आईआरजीसी में अच्छी घुसपैठ की है और इन नेटवर्कों को इज़राइली हमलों के लिए आसान बना दिया है। ईरान को अपने सहयोगियों में अपना सम्मान बनाए रखना है तथा आंतरिक राजनीतिक संकट से प्रभावी ढंग से निपटना है। इसलिए अपने मुहरों के माध्यम से वह हमलों को प्राथमिकता देता है, भले ही कभी-कभी दोनों पक्षों के बीच सीधे टकराव हो जाता हो। इसके साथ ही ईरान सरकार की घरेलू नीतियों के कारण तनाव बना हुआ है।

ईरान में कुछ राजनेता और अधिकारी खुलेआम ईरान की अंतर्निहित कमजोरियों का उल्लेख करते हैं। वे ईरान सरकार के समक्ष मौजूद अनेक संकटों को उजागर कर चेतावनी दे रहे हैं कि वह महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित किए बिना इज़राइल से सीधे टकराव न मोल ले क्योंकि इससे स्थिति और खराब हो सकती है। उन्होंने व्यावहारिक प्रशासन तथा प्रभावी संकट प्रबंधन पर जोर दिया है तथा वे व्यवस्था को ध्वस्त होने से बचाने के लिए वर्तमान संकट का समाधान खोजने पर जोर दे रहे हैं। समाज में आर्थिक चुनौतियां तथा मनोवैज्ञानिक अस्थिरता ऐसे तात्कालिक मुद्दे हैं जिनको तत्काल संबोधित किया जाना चाहिए। ऐसा न होने पर वे दुश्मनों को फलने-फूलने का उपजाऊ मैदान देते हैं। ईरान के अनेक राजनेताओं ने तनाव घटाने के लिए सुलह-समझौते वाली नीतियां अपनाने तथा ईरानी समाज में सद्भावना व संवेदनशीलता बढ़ाने का अनुरोध किया है। सरकार की दमनकारी घरेलू नीतियां, खासकर अनिवार्य 'हिजाब अभियान' ने समाज में व्यापक निराशा और गुस्सा पैदा किया है जिससे सरकार की वैधता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। हालिया इज़राइल-विरोधी कार्रवाइयों, जैसे एक मालवाहक जहाज पर कब्जे ने ईरानी बाजारों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। ईरानी राष्ट्रीय मुद्रा में ऐसी कार्रवाइयों के कारण रिकार्ड गिरावट आई है। बड़ी संख्या में ईरानियों द्वारा आर्थिक संकट का सामना करने के कारण राष्ट्रपति इब्राहीम रईसी की कटु आलोचना हुई है और उन्होंने इनसे निपटने के लिए कैबिनेट में परिवर्तन का निर्णय किया है।

पिछले वर्षों में इज़राइल ने ईरानी नाभिकीय वैज्ञानिकों और उसकी नाभिकीय ढांचागत संरचना पर हमला करने की अपनी क्षमता का लगातार प्रदर्शन किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा इज़राइल द्वारा संयुक्त रूप से संचालित 'स्टक्सनेट साइबर हमले' ने ईरान की नाभिकीय महत्वाकांक्षाओं को गहरा झटका दिया है। इससे सिद्ध होता है कि घरेलू राजनीतिक मुद्दों के कारण राष्ट्रीय हितों से कभी समझौता नहीं किया जाता है। ईरानी नाभिकीय क्षमताओं पर 'स्टक्सनेट' हमला एक महत्वपूर्ण कदम था। इससे साइबर-युद्ध का नया युग शुरू हो गया है जिसका एकमात्र उद्देश्य भू-राजनीतिक परिदृश्य को पुनः बदलने के लिए सत्ता प्राप्त करना और उसे बनाए रखना है। 'स्टक्सनेट' का प्रभाव सारी दुनिया में दिखाई पड़ा क्योंकि इससे युद्धों की बदलती प्रकृति तथा आधुनिक युद्धों में तकनीक का महत्व उजागर होता है। ऐसी स्थिति में ईरान लगातार मौन नहीं रह सकता है। इसलिए ईरान का हालिया हमला इज़राइल के खिलाफ युद्ध की घोषणा न होकर अपनी इज्जत बचाने का एक कदम है।

उत्तराखंड में महिलाओं की परिवर्तनकारी भूमिका

शीतल आर्या
(लेखिका, शोधकर्ता हैं)

उत्तराखंड में महिलाएं अपनी असाधारण लचीलेपन और कड़ी मेहनत के लिए प्रसिद्ध हैं, ये विशेषताएं उनकी हिमालयी विरासत में गहराई से निहित हैं। इस बीहड़ इलाके में जीवन की चुनौतियों से जूझने के बावजूद, उत्तराखंड की महिलाएं लगातार सामाजिक और पर्यावरणीय आंदोलनों में सबसे आगे रही हैं, जो चिपको आंदोलन की गौरा देवी और शराब विरोधी आंदोलन का नेतृत्व करने वाली टिंचरी माई (दीपा नौटियाल) जैसी शख्सियतों का प्रतीक हैं। आंदोलन। इन महिलाओं ने उत्तराखंड की भावना को मूर्त रूप देते हुए निडर होकर अन्याय का सामना किया है। यह लेख उत्तराखंड में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को रेखांकित करने और लोकतंत्र को मजबूत करने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है।

उत्तराखंड में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को दो प्राथमिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है- पहला, महिलाएं राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व की स्थिति संभाल रही हैं और दूसरा, महिलाएं मतदाता के रूप में अपने चुनावी अधिकारों का प्रयोग कर रही हैं।

राज्य की स्थापना के बाद से, विधान सभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में धीरे-धीरे महत्वपूर्ण वृद्धि देखी गई है। पहली विधानसभा में चार महिला सदस्यों से, 2022 के चुनावों में संख्या में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो एक सराहनीय प्रगति है। हालाँकि, इस प्रगति के बावजूद, महिलाएं विधानसभा में अल्पसंख्यक बनी हुई हैं, जो कुल सदस्यों का केवल एक अंश है। वर्तमान में, विधान सभा में तीन दलित महिलाओं सहित आठ महिला सदस्य हैं, जो उत्तराखंड के इतिहास में सबसे अधिक संख्या है। विशेष रूप से, श्रीमती. रितु खंडूरी वक्ता के रूप में कार्य करती हैं, जबकि श्रीमती। रेखा आर्य कैबिनेट में अकेली महिला मंत्री हैं. इन प्रगतियों के बावजूद, राजनीतिक प्रतिनिधित्व में असमानता बनी हुई है, जो राजनीतिक सत्ता तक पहुँचने में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को रेखांकित करती है।

जबकि संसदीय क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है, आठ में से केवल दो महिला सांसद हैं, महिला आबादी (49 प्रतिशत) और उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बीच विसंगति स्पष्ट है। जमीनी स्तर के आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी के बावजूद, औपचारिक राजनीति में महिलाओं की उपस्थिति अनुपातहीन रूप से कम है। उत्तराखंड में महिलाएं ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं, जो प्रवासन, पर्यावरणीय गिरावट और अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं जैसे मुद्दों से जूझ रही हैं। हालांकि, सामाजिक मानदंड और आर्थिक बाधाएँ अक्सर उनकी राजनीतिक भागीदारी को रोकती हैं। इसके अलावा, राजनीतिक दलों की महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारने की अनिच्छा इस असमानता को और बढ़ा देती है। उदाहरण के लिए, आगामी 2024 के लोकसभा चुनावों में, कांग्रेस ने किसी भी महिला उम्मीदवार को नामांकित नहीं किया है, जबकि भाजपा ने केवल एक, श्रीमती माला राज्य लक्ष्मी शाह को नामांकित किया है। फिर भी, उत्तराखंड में महिला मतदाता हाल के चुनावों में पुरुषों से आगे निकल कर एक ताकतवर ताकत के रूप में उभरी हैं। उनकी बढ़ती राजनीतिक जागरूकता, उनके जीवन को सीधे प्रभावित करने वाले मुद्दों से प्रेरित, उच्च साक्षरता दर और आरक्षण कोटा जैसी सरकारी पहलों ने उनकी भागीदारी को प्रेरित किया है। सरकारी नौकरियों में 30त्न क्षैतिज आरक्षण और पंचायतों में 50त्न आरक्षण जैसी नीतियों ने महिलाओं की राजनीतिक एजेंसी को मजबूत किया है, जिससे उन्हें जमीनी स्तर पर नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम बनाया गया है।

2024 के संसदीय चुनावों से पहले, दोनों प्रमुख पार्टियाँ विभिन्न रणनीतियों को अपनाते हुए महिलाओं के समर्थन के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। कांग्रेस ने महिला सुरक्षा और न्याय पर जोर देते हुए महिलाओं के लिए वित्तीय सहायता और नौकरी में आरक्षण का वादा किया है। इसके विपरीत, भाजपा जमीनी स्तर पर लामबंदी के प्रयासों के साथ-साथ महिलाओं के अधिकारों के लिए एक मील का पत्थर के रूप में समान नागरिक संहिता के कार्यान्वयन पर प्रकाश डालती है।

महिला मतदाताओं के बीच प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अपील, उनके जमीनी स्तर के जुड़ाव और महिला आरक्षण विधेयक जैसी पहल के कारण, भाजपा की चुनावी संभावनाओं को और मजबूत करती है। मोदी फैक्टर उत्तराखंड की महिलाओं में प्रतिध्वनित हुआ है, जिसने 2017 से भाजपा के निरंतर प्रभुत्व में योगदान दिया है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए, राज्य सरकार ने 2024-25 के लिए पर्याप्त लैंगिक बजट आवंटित किया है, जो लैंगिक असमानताओं को दूर करने और समानता को बढ़ावा देने के लिए निर्धारित है। इसके अतिरिक्त, मतदान केंद्रों की निगरानी के लिए महिला कर्मचारियों को तैनात करना और गर्भवती महिलाओं को मतदान केंद्रों तक पहुंच की सुविधा प्रदान करना जैसे उपाय समावेशी शासन की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

निष्कर्षतः, डॉ. अम्बेडकर का यह कथन कि किसी समुदाय की प्रगति महिलाओं की उन्नति पर निर्भर है, उत्तराखंड के लिए सत्य है। जबकि महिलाएं ऐतिहासिक रूप से सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं, औपचारिक राजनीति में उनका कम प्रतिनिधित्व एक गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने और राज्य के विकास में तेजी लाने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना जरूरी है। जैसा कि उत्तराखंड आगामी चुनाव कौथिग के लिए तैयार है, जिसमें 48.1 प्रतिशत मतदाता हैं, उनकी बढ़ी हुई भागीदारी राज्य में लोकतंत्र की जीत का अग्रदूत होने का वादा करती है।

आप की बात

ईरान की धमकी

ईरान द्वारा इजरायल पर भारी ड्रोन व मिसाइल हमले के बाद उसके मंत्री चेतावनी दे रहे हैं कि ईरान इजरायल के हर हमले का मुंहतोड़ जवाब देगा और ऐसे नए अस्त्रों का प्रयोग करेगा जो अब तक किसी ने प्रयोग नहीं किए हैं। यह एक चौंकाने वाला बयान है। इससे लगता है कि ईरान ने कोई ऐसी नई तकनीक विकसित कर ली है जो विश्व में किसी अन्य देश के पास नहीं है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-एआई के नए चमत्कारों को देखते हुए ईरान की धमकी पर गंभीरता से गौर करना जरूरी है। ईरान एक तानाशाह व कट्टरपंथी इस्लामवादी देश है जो दूसरे देशों में इस्लामी क्रांति का निर्यात करने का प्रयास कर रहा है। ईरान में सैकड़ों महिलाओं को केवल हिजाब न पहनने के कारण अमानवीय अत्याचारों का सामना करना पड़ा है और कई को अपनी जान से हाथ धोने पड़े हैं। ईरान घोषित रूप से इज़राइल को दुनिया के मानचित्र से समाप्त करने की धमकी भी देता रहा है। ऐसे में ईरान पर लगाम लगाना उन इस्लामी देशों के भी हित में है जो दुनिया के अन्य धर्मानुयाइयों की तरह मुस्लिम नौजवानों व नवयुवतियों को समान अधिकारों तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों से लैस करना चाहते हैं। ईरानी सत्ता में बार-बार कट्टरपंथियों का हावी होना चिन्ता का विषय है।

– **विभूति बुपक्या,** खाचरोद

न्यायालय पर दबाव

सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश-सीजेआई को पूर्व में दो बार वकील लोग सुप्रीमकोर्ट पर दबाव बनाने के प्रयास के विरोध में पत्र लिख चुके हैं। अब देश के 21 भूतपूर्व न्यायाधीशों ने फिर से एक पत्र लिखकर न्यायालय पर राजनीतिक दबाव बनाने के प्रयासों को लेकर चिंता जाहिर की है। हमारा प्रजातंत्र जिन चार स्तंभों पर टिका है उनमें से एक स्तंभ न्यायालय भी है। देश की कई विकट समस्याओं के समाधान में न्यायालय ने अपनी भूमिका बखूबी निभाकर लोगों में न्याय के प्रति आस्था बनाए रखी है। कई बार न्यायालय ने कई मामलों का स्वतः संज्ञान भी लिया है। केंद्र में प्रबल बहुमत वाली वर्तमान सरकार ने भी सुप्रीमकोर्ट के हर आदेश को शिरोधार्य कर उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित किया है। पूर्व न्यायाधीशों और इसके पहले वकीलों द्वारा सार्वजनिक रूप से सीजेआई को लिखे पत्रों से न्यायपालिका में राजनीतिक उठापटक के संकेत मिलते हैं। कई बार मनमाफिक फैसला न मिलने पर कुछ बड़े वकील न्यायपालिका या सीजेआई की निष्पक्षता पर सवाल उठाने लगते हैं। इस प्रवृत्ति को सही नहीं कहा जा सकता है। न्यायपालिका की गरिमा बनाए रखने की जिम्मेदारी कार्यपालिका व विधायिका की है।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

बेहतर सरकार

इन दिनों देश में महंगाई और बेरोजगारी जैसी कई शिकायतें हैं। लेकिन इन सारी शिकायतों के बावजूद भी ज्यादातर लोग यह भी कहते हैं कि भाजपा सरकार बेहतर है एवं अच्छा कार्य भी कर रही है। अतः इसे एक बार और अवसर देना ठीक होगा। आज देश चलाने के लिए मोदी से बेहतर कोई और नेता नहीं दिखाई दे रहा है। पिछले 10 सालों में वर्तमान मोदी सरकार ने काफी काम किए हैं। पिछली सरकारों के किसी भी कालखंड के दस साल में इतना काम कभी नहीं हुआ है। आज लोगों को यह भी विश्वास है कि मोदी सरकार अगले 5 सालों में अवश्य ही देश से गरीबी एवं महंगाई कम करने का प्रयास करेगी। आज पूरे विश्व में महंगाई बढ़ रही है, जबकि भारत ने उस पर काफी लगाम लगाई है। पड़ोसी पाकिस्तान या विकसित अमेरिका को देखें तो वहां महंगाई आसमान छू रही है। भारत ने 80 लाख लोगों को मुफ्त खाद्यान्न देने की योजना चलाई है जो दुनिया की ऐसी सबसे बड़ी योजना है। इसका पांच साल और विस्तार किया गया है। मोदी सरकार इसलिए भी दूसरों की तुलना में बेहतर है कि उसने देश की समस्याओं को स्थाई ढंग से हल करने की नीति बनाई है। गरीबों के लिए पीएम आवास योजना इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

– **एमएम राजावत,** शाजापुर

खतरनाक खेल

ड्रीम 11 बहुत ही खरतनाक बीमारी के तौर पर उबर रहा है। इस खेल पर समय रहते रोक लगानी होगी क्योंकि यह अनेक लोगों के लिए वित्तीय जोखिम के साथ-साथ मानसिक बीमारी का कारण बनने लगा है। ड्रीम 11 ऐसा खेल है जो 39 व 59 रूपये में युवाओं को रातोंरात करोड़पति बनाने का सपना दिखा रहा है। कभी जीतने पर एक करोड़, कभी दो करोड़ और आजकल 4 करोड़ की राशि दी जा रही है। लाखों युवाओं को इस खेल की लत लगी हुई है और वे अपनी वर्षों की मेहनत की कमाई को यूंही जाया करने में लगे हुए हैं। सरकारी क्षेत्र में तैनात कर्मचारी भी इसका शिकार बनते जा रहे हैं। ड्रीम 11 का विज्ञापन व्यापक रूप से किया जा रहा है और कई बड़े सितारे इसका प्रचार करते देखे जाते हैं। हालांकि, विज्ञापन में वित्तीय जोखिम है और इसकी लत लगने की बात कहीं जाती है, पर यह केवल खानापूरी है। देश में सट्टेबाजी, लाटरी, घुड़दौड़ की सट्टेबाजी या ऐसी ही अचानक अमीर बनाने वाले तरीकों पर रोक लगनी चाहिए। लेकिन विडंबना है कि आधुनिकता की चकाचौंध में इस पर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा है।

– **भूपेंद्र सिंह,** दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

'भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी'...

जन्मोत्सव के असीम आनंद में डूबी अयोध्या में चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण

- लगभग 25 लाख श्रद्धालुओं के आगमन के अनुमान के तहत की गईं आवश्यक व्यवस्थाएं
- प्रथम बार भगवान सूर्य की किरणों से कराया गया तिलक व अभिषेक
- रामलला को नवीन वस्त्र धारण कराकर लगाया गया 56 भोग

संवाददाता। अयोध्या

प्राण प्रतिष्ठा के बाद भगवान श्री राम लला का पहले जन्मोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया सुबह पंचामृत से अभिषेक किया गया नवीन वस्त्र धारण कराए गए 56 भोग लगाया गया। आनंद का आलम यह था कि जैसे ही घड़ी की सुइयां एक साथ हुई भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी से राम जन्म भूमि परिसर के साथ-साथ पूरी अयोध्या गूंज मन हो उठी, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि त्रेता युग फिर से प्रारंभ हो गया है। श्री राम जन्मभूमि परिसर में जन्मोत्सव के समय भगवान का सूर्य तिलक किया गया और इस सबके साक्षी बने ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास। श्री राम जन्मभूमि के साथ-साथ मां सरयू के तट पर स्थित सियाराम किला झुंकी घाट में देखी जा सकती है।

10 बजे से ही पीठाधीश्वर महंत करुणानिधान शरण महाराज के सानिध्य में बधाई गीत प्रारंभ हो गई और जब श्री राम कथा के मर्मज्ञ अंतर राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रभंजनानंद महाराज रंगभरी बधाई गान प्रारंभ की। अवध में चहुओर बाजे बाजे रसीली बधाइयां से परिसर में उपस्थित हजारों की संख्या में भक्त नाचने लगे और यह क्रम 12 बजे तक चलता है जैसे ही घड़ी की तीनों सुईयां एक पूरा परिसर श्री राम लला की जय कारे से गुंजायमान हो उठा घंटा घडियाल बजने लगे और श्री महाराज जी ने भगवान का प्रकट कराया आरती उतारी उसके बाद भी घंटो तक परिसर में बधाई चलती रही।

मंदिर परिसर में चल रही श्रीराम कथा में भी भगवान के जन्म उत्सव की कथा हुई व्यासपीठ से प्रभंजनानंद जी महाराज ने बताया प्रभु का जन्म दुष्टों के संहार मात्र के लिए हुआ था यह एक बहाना है प्रभु का अवतार पृथ्वी पर मानव कल्याण के लिए हुआ था क्योंकि आनंदकंद प्रभु श्री राम वसुंधरा पर मर्यादा की स्थापना के लिए अवतार लिए और समाज को अपने चरित्र की लीला द्वारा यह संदेश दिया कि एक मर्यादित समाज का निर्माण कैसे होता है पिता पुत्र का प्रेम कैसे होता है, माता पुत्र का प्रेम कैसे होता है, भाई भाई का प्रेम कैसे होता है और पृथ्वी से दुष्टों का संहार ऋषि मुनियों, गौ माता की रक्षा कैसे की जाती है इसका संदेश देने के लिए हुआ है। जन्म की कथा सुन उपस्थित सभी भक्त भावविभोर हो गए अंत में श्री महाराज जी ने आरती उतारी और प्रसाद वितरण किया गया। आश्रम संत प्रहलाद दास ने सभी को प्रसाद वितरण किया।

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए भाजपा ने लगाए सुविधा केन्द्र

अयोध्या। राम जन्मोत्सव पर अयोध्या आने वालें भक्तों की सुविधाओं के लिए भाजपा द्वारा प्रमुख स्थानों पर श्रद्धालुओं के लिए सुविधा केन्द्र लगाया गया है। सुविधा केन्द्र पर रामभक्तों के लिए शीतल जल, सूक्ष्म जल पान सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गई है। सुविधा केन्द्र के माध्यम से भक्तों की हर यथा सम्भव मदद की जा रही है। आने वाले भक्तों का रोली तिलक लगा कर स्वागत किया जा रहा है। अयोध्या कैंट स्टेशन पर रीना द्विवेदी, उर्मिला सिंह, रूबी रावत, सोनाली गौड़, एकता भटनागर, पायल जायसवाल, उदया चौराहे पर अशोक द्विवेदी, तिलक राम मौर्य, रिकाबगंज बुद्धिपाल प्रजापति, अरुण सोनकर, रीडगंज में आशा गौड़, प्रतिमा शुक्ला, शशि रानी गुप्ता, दर्शन नगर में दिव्य प्रकाश तिवारी, अरविंद पांडे, वरुण चौधरी, चूड़ामणि चौराहा संजय गुप्ता, लक्ष्मण वर्मा, नाका मनोज जायसवाल, अभय सिंह, उसरू मनोज श्रीवास्तव, महेश श्रीवास्तव ,निखिल श्रीवास्तव देवकाली अनीता सिंह, मनोज श्रीवास्तव, मंजू गुप्ता के नेतृत्व में सुविधा केन्द्र चलाया जा रहा है। इसके अतिरिक्त अयोध्या व अयोध्या कैंट के सैकड़ों स्थानों पर सुविधा केन्द्र स्थापित किये गये।

बंदर के दौड़ाने पर छत से गिरकर घायल महिला की अस्पताल में मौत

संतकबीरनगर। थाना कोतवाली खलीलाबाद क्षेत्र के कांटडिहेश गांव की रहले वाली महिला अपने मकान के छत पर लहसून सूखा रही थी। तभी छत पर अचानक से बंदर आ गया और उसे दौड़ाने लगा। महिला बंदर से बचने के भागते हुए छत से नीचे गिरकर घायल हो गई। गांव के लोगों की मदद से महिला को संयुक्त जिला अस्पताल में लाकर भर्ती कराया गया। जहां डाक्टर ने प्राथमिक उपचार किया।

लेकिन कुछ ही समय बाद महिला ने दम तोड़ दिया। परिजनों के कहने के बाद डॉक्टर ने फिर से स्वास्थ्य परीक्षण किया और उसे मृत घोषित कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार थाना कोतवाली खलीलाबाद क्षेत्र के कांटडिहेश गांव की रहने वाली 48 वर्षीय उर्मिला पत्नी सियाराम गांर्ब में अपनी दो बेटियों के साथ रहती है। उसके पति सियाराम मुंम्बई में रहकर किसी निजी कंपनी में काम करते है। जबकि उनका लड़का अभिषेक पंजाब में रहकर किसी फैक्ट्री में काम करता है। बुधवार की सुबह 7.30 बजे के करीब वह अपने खेत से लहसून उखाड़कर ले गयीं और अपने छत पर सूखा रही थी। तभी छत पर अचानक एक बंदर आ गया और उनको दौड़ लिया। बताया जा रहा है कि भागने के दौरान वह छत से नीचे गिर गई। जिसके कारण काफी चोटे आईं।

आसपास मौजूद लोग उन्हें आनन-फानन में एंबुलेंस की मदद से संयुक्त जिला अस्पताल ले आये। जहां डाक्टर ने प्राथमिक उपचार किया। लेकिन कुछ ही समय बाद महिला ने दम तोड़ दिया। परिजनों के कहने के बाद डॉक्टर ने फिर से स्वास्थ्य परीक्षण किया और उसे मृत घोषित कर दिया। डाक्टर ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेजवाया।

सांसद प्रवीण निषाद को जिताने के लिए जिले में पहुंची अपना दल (एस) की पूरी टीम

केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल व कैबिनेट मंत्री आशीष पटेल ने की गोपनीय बैठक

संवाददाता। संतकबीरनगर

राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल के निर्देशानुसार जनपद में मुख्य अतिथि के रूप में अपना दल (एस) के कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार के आशीष पटेल जनपद में प्रमुख पदाधिकारियों के साथ बैठक की। पार्टी की मजबूती के लिए बूथ कमेटी पर जोर देते हुए कहा अपना दल (एस) का प्रत्येक कार्यकर्ता उत्तर प्रदेश के 80 सीटों पर एनडीए गठबंधन के प्रत्याशी के लिए चुनाव लड़ रहा है। इसी के साथ हर बूथ पर हमारा कार्यकर्ता मजबूती के साथ लगा हुआ है मेरा बूथ सबसे मजबूत का मंत्र दिये साथ मंच पर मुख्य अतिथि का कबीर साहब की प्रतिमा देकर सम्मानित किया।

निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को डॉक्टर सोनेलाल पटेल की प्रतिमा एवं इंजीनियर प्रवीण निषाद सांसद प्रत्याशी को भगवान गौतम बुद्ध की प्रतिमा देकर सम्मानित किया। मंच पर, निषाद पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा कैबिनेट मंत्री डाक्टर संजय निषाद खलीलाबाद लोकसभा की प्रत्याशी इंजीनियर प्रवीण निषाद, मेहदावल विधायक अनिल त्रिपाठी, सुल्तानपुर विधायक राज बाबू उपाध्याय, अपना दल (एस) के राष्ट्रीय सचिव गिरजेश पटेल, व्यापार मंच के प्रदेश अध्यक्ष पुष्कर चौधरी, अग्रहरि समाज के प्रदेश अध्यक्ष व्यापारी नेता बनर्जी लाल अग्रहरि, प्रदेश महासचिव रामसिंह पटेल, चिकित्सा मंच के प्रदेश महासचिव डॉक्टर पीसी पटेल, युवा मंच के प्रदेश महासचिव सचिन सिंह, पंचायत मंच के प्रदेश कार्यकारी सदस्य राम पारस निषाद, महिला मंच की प्रदेश कार्यकारी सदस्य श्रीमती माया, व्यापार मंच के प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश सिंह, जिला क्षेत्रीय अध्यक्ष विवेक चौधरी, उपाध्यक्ष रोहित पटेल, अध्यक्ष बाबूलाल कनौजिया, गोरखपुर जिलाध्यक्ष उदयभान सिंह, बस्ती जिलाध्यक्ष राजमणि चौधरी, व्यापार मंडल जिलाध्यक्ष कपीश अग्रहरि, मेहदावल विधानसभा अध्यक्ष दीप नारायण चौधरी, खलीलाबाद विधानसभा अध्यक्ष राम जनक चौधरी, धनघटा विधानसभा अध्यक्ष राजेश गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष संजय चौधरी जिला उपाध्यक्ष, अमित चौधरी जिला, महासचिव चेतराम यादव, अल्पसंख्यक मंच के जिला अध्यक्ष अरबी हसन व्यापार मंच के, जिलाध्यक्ष विकास चौधरी, हरिशंकर पटेल गंगाराम गौतम जिला महासचिव सोनू कुमार राव, महिला जिलाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, मणि चंद चौधरी, शम्भू चौधरी, संतोष चौधरी आदि प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे।

क्विक न्यूज

53 लीटर कच्ची शराब बरामद, मुकदमा दर्ज

संतकबीरनगर। जिलाधिकारी महेन्द्र सिंह तंवर के निर्देश पर आबकारी व पुलिस की संयुक्त टीम ने जनपद की पौली चौकी अंतर्गत दबिश देकर गोविन्दगंज खड़गपुर मांझा में कार्यवाही करते हुए 53 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद किया। इस सम्बन्ध में एक अभियुक्त के विरूद्व मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की गयी। इस कार्यवाही में आबकारी विभाग व पौली पुलिस चौकी की संयुक्त टीम शामिल रही। इसके साथ-साथ जनपद के सभी थाना क्षेत्रो मे बैंक/वाहन/संदिग्ध व्यक्तियो की चेकिंग के दौरान समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष/प्रभारी यातायात द्वारा मोटर वाहन अधिनियम के अन्तर्गत कड़ी कार्यवाही करते हुए 102 वाहनों से 1,24,000 रु0 सम्मन शुल्क वसूल किया गया।

अग्नि सुरक्षा जन-जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

अमेठी। ग्रीष्मकालीन मौसम एवं अग्निशमन सेवा सप्ताह के दृष्टिगत फायर स्टेशन अमेठी द्वारा अग्नि सुरक्षा जन-जागरूकता/ प्रशिक्षण महानिदेशक उत्तर प्रदेश अग्निशमन तथा आपात सेवाएं लखनऊ के आदेशानुसार, पुलिस अधीक्षक अमेठी के निर्देशानुसार आग से सुरक्षित रहने हेतु आमजनमानस को जागरूक करने का अभियान प्रारम्भ किया गया है। अभियान/प्रशिक्षण आयोजक श्री शिवदरस प्रसाद अग्निशमन अधिकारी अमेठी द्वारा एचएएल कोरवा मुंशीगंज में आवासीय परिसर में रहने वाले अधिकारी/कर्मचारीगण व उनके परिवारिजनों को जागरुक करते हुए आग लगने के सम्भावित कारकों के बारे में विस्तार से जानकारी देकर आग को काबू करने के उपकरणों व उनके प्रयोग के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए फायर एक्सटिंग्यूशरों को चलाने के विषय में विस्तृत जानकारी देते हुए उनके रख-रखाव के सम्बन्ध में प्रशिक्षण देकर जागरूक किया गया तथा प्रशिक्षुओं को फायर एक्सटिंग्यूशर चलाने, आग बुझाने के अनेक तरीकों सहित गैस रिसाव, गैस सिलेण्डर की आग को सरलता से बुझाने एवं प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण दिया गया।

मुंशीगंज में श्री हनुमान मंदिर पर पूजा अर्चना कर मनाया गया प्रभु श्रीराम का जन्मोत्सव

संवाददाता। रायबरेली

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश मन्त्री एवं पूर्व राज्यमंत्री स्तर चेयरमैन,लोकसभा 36-रायबरेली के प्रभारी वीरेन्द्र कुमार तिवारी ने समस्त रायबरेली वासियों को रामनवमी के पावन पर्व पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देते हुए सबके मंगल कल्याण की कामना की।

लोकसभा प्रभारी श्री तिवारी ने रामनवमी पर्व पर रायबरेली वासियों को शुभकामना देते हुए कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण से देश की 500 वर्षों की प्रतीक्षा पूर्ण हुई है। रायबरेली सहित पूरे देश में हर्षोल्लास है और राम मंदिर राष्ट्र मंदिर के रूप में समरसता, सदभाव, सत्य तथा सनातन के मंत्र का प्रसार कर रहा है,इससे नए युग का सूत्रपात्र हुआ है। उन्होंने कहा कि 500 वर्षो के पश्चात् प्रभु श्रीराम का जन्मोंत्सव उनकी जन्मभूमि पर मनाने के लिए विश्व के करोडों करोड़ जन प्रतीक्षारत थे आज सबकी मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। भव्य और नव्य अयोध्या में प्रभु श्रीराम जी के जन्मोत्सव को दिव्यता और भव्यता के साथ आज मनाया जा रहा है और रायबरेली सहित पूरे देश भर के मंदिरों में श्रद्धालु भक्तजन भगवान श्रीराम लला जी का जन्मोत्सव मना रहे हैं,हम सभी को श्रीराम जन्मोत्सव रामनवमी की बधाई देते हैं। वरिष्ठतम भाजपा नेता वीरेन्द्र तिवारी ने कहा कि श्रीराम मंदिर के निर्माण से रामराज्य की अवधारणा मूर्तरूप ले रही है प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की सरकारें रामराज्य की प्रतिबद्धता के साथ सबकी आत्मनिर्भरता, सबको शिक्षा, सबको चिकित्सा, सबको सुरक्षा से आच्छादित कर रही है।

रायबरेली 36-लोकसभा प्रभारी वीरेन्द्र तिवारी आज रामनवमी पर श्रीराम जी के जन्मोत्सव के अवसर पर मध्याह्न 12 बजे सदर विधानसभा क्षेत्र में मुंशीगंज के श्री हनुमान मंदिर में पहुँचकर श्रीराम स्तुति एवं श्रीरामावतार स्तुति का सबके साथ सामूहिक गायन तथा पूजन आरती करके भगवान श्री रामलला जी से सबके सुख समृद्धि एवं लोककल्याण की प्रार्थना की।

रायबरेली में मुंशीगंज में आयोजित श्रीराम जन्मोत्सव कार्यक्रम में लोकसभा प्रभारी वीरेन्द्र तिवारी के साथ इस अवसर वरिष्ठ भाजपा नेता एवं व्यापारी नेता श्री पंकज मोरारका,भाजपा नगर पूर्वी के मण्डल अध्यक्ष श्री अभिषेक वर्मा,मण्डल उपाध्यक्ष श्री अनुराग वर्मा,मण्डल महामंत्री श्री शशिकांत शुक्ला,मण्डल मंत्री श्री वीरेन्द्र अग्रहरि,शक्ति केन्द्र संयोजक श्री ओमप्रकाश तिवारी सहित स्थानीय सनातनी भक्तजन नागरिक मातायें-बहनें युवाजन शामिल रहे।

पहला ई-रिक्शा लॉन्च करने वाली सारथी कंपनी ने खोला अपना स्टोर

रायबरेली। बिना धुआं और बिना आवाज शहर में फर्राटा भरते ई रिक्शा की शुरुआत इंडिया में अगर किसने की तो बहुत कम लोगों को मालूम होगा लेकिन जिस सारथी कंपनी ने इस ई रिक्शा कंपनी की शुरुआत की है उसी की लॉन्चिंग आज रायबरेली में हुई है। बरगद चौराहे के पास श्री कृष्णा इलेक्ट्रिक बाइक को इसकी डिस्ट्रीब्यूटरशिप मिली है आज इसका उद्घाटन सारथी इलेक्ट्रिक ई रिक्शा कंपनी के एमडी राजेश सहगल ने किया उन्होंने बताया कि देश को पॉल्यूशन मुक्त करने के लिए इस कंपनी की शुरुआत की गई थी आज भले ही बहुत सी कंपनियां इस क्षेत्र में है लेकिन माइलेज और मजबूती के मामले में सारथी का कोई तोड़ नहीं है। रायबरेली में विजय रस्तोगी को डिस्ट्रीब्यूटरशिप मिली है श्री कृष्णा इलेक्ट्रिक बाइक के विक्रेता श्री रस्तोगी ने बताया कि ई रिक्शा के सभी पार्ट और सर्विस यहां पर उपलब्ध होगी साथ ही सारथी ईरिक्शा मनपसंद कॉलर में उपलब्ध हैं जिसकी क्वालिटी उच्च कोटि की है और ई रिक्शा में होने वाली सभी आधुनिक सुविधाएं दी गई हैं।

श्रीरामनवमी पर विहिप ने निकाली विशाल शोभायात्रा

लालगंज, रायबरेली। विश्व हिंदूपरिषद द्वारा जिलें के विभिन्न स्थानों पर श्रीरामजन्मोत्सव के कार्यक्रम कार्यकर्ताओं नें बड़े ही उल्लासपूर्ण ढंग से मनाया इसी क्रम में लालगंज नगर में विहिप के प्रांतीय उपाध्यक्ष रामगोपाल त्रिपाठी के नेतृत्व में एक भव्य शोभायात्रा नगर के विभिन्न मार्गो से होती हुई हनुमान मंदिर बेहटा चौराहा में आरती पूजन प्रसाद वितरण के साथ समाप्त हुई।

शोभायात्रा का प्रारंभ रामलीला मैदान से हुआ जहां प्रभु श्रीरामलला की झांकी के रूप में सुसज्जित शोभायमान चारों भाईयों का रोली चंदन टीका से पूजन करतें हुए रामगोपाल त्रिपाठी , जिला संरक्षक रमाशंकर बाजपेई ,जिलाध्यक्ष अजय पांडेय, ने माल्यार्पण किया । शंखनाद घंटा घड़ियाल बजाते हुए और आतिशबाजी करते हुए कार्यकर्ताओं ने शोभायात्रा निकालीं ।शोभायात्रा के संयोजक जिला सह मंत्री पंकज पांडेय एडवोकेट, गौरव शुक्ला ,नगर अध्यक्ष दीपेन्द्र रस्तोगी अनुशासित ढंग से चलते हुए कार्यकर्ताओं की जमकर तारीफ करते हुए देखें गए यात्रा के समय 108 एम्बुलेंस को तत्काल मार्ग प्रशस्त करनें पर नगर के लोग विहिप के कार्यकर्ताओं की भूरि भूरि प्रशंसा करते रहें। शोभायात्रा का नगर के विभिन्न स्थानों पर पुष्पवर्षा और मिष्ठान वितरण करके स्वागत किया गया अयोध्या में श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद इस बार लोगों में शोभायात्रा के प्रति गजब का उल्लास देखते ही बन रहा था। शोभायात्रा में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन जिलाकार्याध्यक्ष रुपेश अवस्थी जिला मंत्री नीरज बाजपेई बजरंग दल के जिला सह संयोजक समीर मिश्रा ,विकास त्रिवेदी नगर मंत्री आशु गुप्ता , सचिन रस्तोगी अविनाश शर्मा ,आदर्श बाजपेई, आदि ने किया ।

श्रीराम जन्मोत्सव के अवसर पर राममय हुआ सारा बछरावां नगर

संवाददाता। बछरावां, रायबरेली

लगभग 500 वर्षों की प्रतिक्षा के पश्चात जब प्रभु श्री राम अपने भव्य मंदिर में पधारे तो उनके जन्मउत्सव के पावन अवसर पर अवधपुरी ही नहीं है अपितु पूरे राष्ट्र में एक विशेष प्रकार का उत्सव एवं हर्षोउल्लास देखने को मिला।

इसी कड़ी में बछरावां नगर के खंड विकास कार्यालय में स्थित शिव मंदिर पर विश्व हिंदू परिषद एवं बजरंग दल के नेतृत्व में अखंड श्री रामचरितमानस पाठ के उपरांत एक विशाल श्री राम शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों की संख्या में रामभक्त, नगरवासी एवं अन्य लोग उपस्थित रहे। यह शोभायात्रा संपूर्ण नगर भ्रमण के पश्चात यथास्थान पर संपन्न हुई। इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए विश्व हिंदू परिषद के प्रखंड अध्यक्ष सुंदर सिंह भदौरिया ने बताया कि प्रभु श्रीराम के इस पावन जन्म उत्सव के अवसर पर यह शोभा यात्रा संपूर्ण नगर में भ्रमण कर रही है और संपूर्ण नगर ही नहीं अपित पूरे जनपद में राम जन्म उत्सव के पावन पर्व पर एक विशेष प्रकार का उत्सव मनाया जा रहा हैद्य इस शोभायात्रा में राम भक्त डीजे के धुन पर राम के भजनों पर थिरकते हुए भी नजर आए।

इस मौके पर मिथुन सिंह, श्रेयांश सोनी, अरुणदास, सचिन, विकास चौरसिया, लालजी मिश्रा, सचिन, अनुभव, हरिओम चतुर्वेदी, संदीप शुक्ला, मनीष गुप्ता, आशुतोष रावत सहित अन्य हिंदू संगठनों के हजारों कार्यकर्ता उपस्थित रहेद्य वही शोभा यात्रा को लेकर स्थानीय पुलिस प्रशासन भी पूरी तरह से मुस्तैद नज़र आया।

स्मृति इरानी ने किया राम नवमी के अवसर पर मंदिर में पूजन अर्चन

तिलोई, अमेठी। तिलोई के जमुरवा स्थित प्राचीन राम जानकी मंदिर और सेमरौता के ऐतिहासिक राम जानकी मंदिर में रामनवमी के पवित्र एवं पावन अवसर पर केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने भगवान श्रीराम की प्रतिमा का दर्शन कर पूजा आरती की, और भक्तों में प्रसाद बांटा। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष राम प्रसाद मिश्र, राज्यमंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, कृष्ण कुमार सिंह उर्फ मुन्ना, राकेश त्रिपाठी, देवी शरण बाजपेई, अंकित पासी प्रमुख सिंहपुर ,मंडल अध्यक्ष पंकज अवस्थी, दिनेश जायसवाल, श्याम मूर्ति यादव, सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

बुधवार को केंद्रीय मंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद स्मृति ईरानी तिलोई की प्रमुख अर्चना कृष्णकुमार सिंह की नवब्याहता बहू श्रीमती शिवी सिंह को आशीर्वाद देने पहुंची।स्मृति के पहुंचने पर प्रमुख अर्चना सिंह ने उनका स्वागत किया। केंद्रीय मंत्री ने बहू को आशीर्वाद स्वरूप उपहार दिया।

गौर तलब हो कि गत माह तिलोई प्रमुख के सुपुत्र अखंड प्रताप सिंह श्रीमती शिवि सिंह के साथ परिणय सूत्र में बंधे हैं। इस मौके पर राज्य मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, भाजपा नेता धर्मेश मिश्र, दिग्विजय सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

4.50 करोड़ रुपए से होगा बछरावां रेलवे स्टेशन का सौंदर्यीकरण

संवाददाता। बछरावां, रायबरेली

लखनऊ प्रयागराज रेलखंड के बछरावां रेलवे स्टेशन की बिल्डिंग जर्जर होने के चलते भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही अमृत भारत रेलवे सौंदर्यीकरण योजना के तहत बछरावां रेलवे स्टेशन को जुलाई माह में 4. 50 करोड रुपए योजना के तहत स्वीकृत हुए । इसके बाद 15 अक्टूबर से कार्य प्रारंभ कर दिया गयाद्य बीते 6 माह में 50 फ़ीसदी काम रेलवे स्टेशन के सौंदर्यीकरण का पूर्ण कर लिया गया। रेलवे स्टेशन पर आने जाने वाले यात्रियों के मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए योजना के तहत सौंदर्यीकरण का कार्य 1 वर्ष में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया।

रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म एक व दो पर यात्रियों के बैठने के लिए बेंच , छाया के लिए टीन सेट, रेलवे स्टेशन के अंदर व बाहर महिला व पुरुष के लिए शौचालय की सुविधा, कैंटीन जिसमें चाय नमकीन व भोजन की सुविधा भी उपलब्ध होगी, यात्रियों के वेटिंग रूम, स्टेशन से निकलने के लिए एक गेट, स्वच्छ जल के लिए पानी टंकी का निर्माण,जर्जर आवासों की मरम्मत ,पार्किंग की व्यवस्था सहित कई सौंदर्यीकरण के लिए 4.50 करोड रुपए बछरावां रेलवे स्टेशन पर खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है।

बछरावां रेलवे स्टेशन की पुरानी बिल्डिंग खाली कराकर नई बिल्डिंग में अस्थाई रूप में बुकिंग काउंटर आरक्षण काउंटर संचालित किया जा रहा है वही पुरानी बिल्डिंग को आगामी 15 दिनों में गिरकर नवीन बिल्डिंग स्टेशन का कार्य शुरू किया जाएगा। उत्तर रेलवे के सीनियर सेक्शन इंजीनियर अरुण कुमार ने बताया कि भारत सरकार द्वारा रेलवे अमृत भारत सौंदर्यीकरण योजना के तहत 4.50 करोड रुपए से यात्रियों के लिए मूलभूत सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बछरावां रेलवे स्टेशन का सौंदर्यीकरण कराया जा रहा है । यह कार्य एक वर्ष में कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। बीते 6 माह में 50 फ़ीसदी का पूर्ण हो गया है।

केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री ने चुनाव कार्यालय का किया उद्घाटन

संवाददाता। निघासन खीरी

भारतीय जनता पार्टी के चुनाव कार्यालय का विधि.विधान पूजन के साथ शुभारंभ खीरी लोकसभा प्रत्याशी अजय मिश्र टेनी ने फीता काट कर शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए केन्द्रीय गृहराज्यमंत्री व खीरी लोकसभा प्रत्याशी ने बताया कि इस चुनाव में आप सब की ताकत से रिकार्ड बनाना है आप सभी लोग क्षेत्र में जाकर सरकार की योजनाओं के बारे में बताएं। और भाजपा के पक्ष में वोट करने की अपील करें।मैंने छरू चुनाव लड़ा है ऐसे समय पर में विधायक था न केन्द्र में सरकार थी और न ही प्रदेश में उस समय सभी को पता है कि निघासन में भाजपा की सरकार चलती थी। आप सभी कार्यकर्ताओं की ताकत से हर चुनाव विधानसभा में हर बार मत बढ़कर मिलते चले आ रहे हैं। चुनाव में कोई राजनैतिक दल दिख नहीं रहा है विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है जो बातें विपक्ष कहता है उस पर लोगों का विश्वास नहीं है।

साठ साल में जो कांग्रेस काम नहीं किया मात्र दस साल में भाजपा सरकार ने कर दिखाया है। विपक्षियों का ऐसा घोषणा पत्र है ऐसा लगता है कि कुबेर की खजाने की चाभी इनके पास है। ऐसे घोषणा पत्रों से जनता विश्वास नहीं करती है।

भाजपा सरकार एक देश एक चुनाव एक देश एक छात्र तय किया है। और कहा कि इह समय भ्रष्टाचारी खतरे में है लोकतंत्र सशक्त है। और सभी से भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपेक्षा की।

कार्यक्रम को इंजीनियर जी एस सिंह सांसद प्रतिनिधि अरविंद सिंह संजय विधानसभा प्रभारी अरविंद गुप्ता संयोजक दयाशंकर मौर्य व ब्लाक प्रमुख अमनदीप सिंह ने भी संबोधन किया। संचालन संगम लाल मिश्रा ने किया कार्यक्रम का समापन मंडल अध्यक्ष देवेन्द्र चतुर्वेदी ने किया। इस दौरान कनक पाल सिंह राणा, नागेन्द्र सिंह सेंगर, मोनू दीक्षित, हरीश पाण्डेय, रतीराम लोधी, संजय गिरि, विपिन मौर्य, प्रज्ञानंद श्रीवास्तव, सोबरन चौहान, बनवारीलाल यादव, हरिशंकर शर्मा, मुकेश मिश्रा, विनोद कुमार मौर्या, जयप्रकाश विश्वकर्मा, रमेश लोधी के के तिवारी, बृम्हादीन चौहान कमलेश गुप्ता, सदा प्यारी कमला निषाद समेत सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मां दुर्गा के मंदिरों में भीड़ का पहुंचा भारी सैलाब

फर्रुखाबाद। मां दुर्गा के मंदिरों में भीड़ का पहुंचा सैलाब चौत्र नवरात्र के नौमी पर बुधवार को देवी मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ पहुंची। भक्तों ने मां दुर्गा के नौवे स्वरूप की आराधना की। मां दुर्गा के जयकारे से पूरा इलाका गूंजता रहा। शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों के देवी मंदिरों में पूरे दिन मां दुर्गा के नौवे रूप महादुर्गा की पूजा अर्चना भक्ति व श्रद्धा के साथ होती रही। नवरात्र के नौवे दिन बुधवार की सुबह से तमाम दुर्गा मंदिरों में श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला शुरू हो गया। सुबह साढ़े छह बजे तक तमाम दुर्गा मंदिर परिसर में लोगों की भारी जमा हो गई। मां भवानी की जयकारे से पूरा तमाम मंदिर परिसर से लेकर आसपास का इलाका गूंजता रहा। नवरात्र में लोगों की भीड़ को देखते हुए जिले के तमाम बड़े दुर्गा मंदिरों में सुरक्षा का प्रबंध दिखा। शहर के गुरुगाँव देवी मन्दिर, मठिया देवी मन्दिर, भोलेपुर माता वैष्णो देवी मन्दिर, जेएनबी रोड़ गमा देवी मन्दिर, हसनबाग में मंसा देवी मन्दिर बढ़पुर शीतला माता मंदिर में भीड़ उमड़ी।

श्री राम जन्मोत्सव पर शोभा यात्रा नगर में निकली

फर्रुखाबाद। नगर के वैष्णव मंदिरों में राम जन्मोत्सव बड़ी धूम-धाम क साथ मनाया गया। प्रातः काल मंगला-दर्शन, षोड्षपूजन.. मंगला आरती दिव्य-भब्य दर्शन के साथ महा अभिषेक मंगला आरती दिव्या एवं भव्य दर्शन के साथ संपन्न हुआ श्री राम विविध कला केन्द्र के कलाकारों ने भगवान श्री राम का गणेश पूजन एवं पं. शान्ति स्वरूप द्वारा वैदिक रीति से सरस्वती भवन में विजय दुबे उर्फमटर लाल ने एवं मुख्य यजमान अशोक वर्मा, वीना वर्मा (पत्नी) के साथ विधिवत पूजन ब्राह्मणों को तिलक लगाकर अपने ठाकुर जी श्री राम का प्राकट्य उत्सव घंटा घड़ियाल शंख ध्वनि के साथ दोपहर 12 बजे अभिजीत मुहूर्त में जन्मोत्सव मनाया गया। महा अभिषेक पवित्र नदियों के जल से पंचामृत अभिषेक दिव्य एवं भव्य श्रृंगार, विजय दुबे (मटर लाल) द्वारा महा आरती एवं प्रसाद वितरण किया गया।

सायकाल समय में श्रीराम के भाइयों लक्ष्मण, भरत,शत्रुघ्न के साथ-नगर में शोभा यात्रा, सरस्वती भवन से चौक, नेहरू रोड, घुमना बाजार, सुतहट ?टी, साहब गंज, नाला मछरट ?टा, लोहाई रोड होते हुए सरस्वती भवन पहुंची। नगर को तोरण द्वार ध्वज-पताका एवं एल.ई.डी. लाइट से पूरा नगर अयोध्या धाम वन गया जगह-जगह भगवान जी की आरती एवं प्रसाद बितरण किया गया यात्रा सरस्वती भवन में मां दुर्गा श्री राम अपने भाइयों के साथ महा आरती की गई। सीता राम की रसोई में महाप्रसाद का वितरण किया गया, शोभा यात्रा नगर का अद्भुत दृश्य था। अशोक मिश्रा, श्रवण कुमार, अखिलेश, सूर्य प्रकाश भारद्वाज विमलेश मिश्रा आती क्रांति पाठक सौरभ मिश्रा आदित्य दीक्षित संजय गर्ग सुनील अवस्थी सहित नगर के गणमान्य व्यक्तिय शोभा यात्रा में शामिल हुए।

पलिया विधायक ने गरीब कन्याओं के विवाह के लिए चालीस हजार रुपए की दी सहायता

गोलागोकर्णनाथ (खीरी)। पलिया विधायक रोमी साहनी ने रामनवमी पर गरीब व असहाय परिवारों की सहायता करना अपना धर्म जताते हुए वह अपने पलिया आवास पर कन्याओं के विवाह के लिए चालीस हजार रुपये की सहायता राशि देकर उनकी सहायता की। गरीबों के मसीहा के नाम से पूरे प्रदेश में चर्चित विधायक रोमी साहनी ने आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का महान पर्व श्री रामनवमी को बड़े धूमधाम से मनाते हुए कहा कि गरीबों व असहायों की सेवा को वह अपना धर्म मानते हैं इसलिए आज रामनवमी पर जितने पुरुष व महिलाओं ने आकर विवाह के लिए कन्याओं की मदद मांगी मैंने अपना दायित्व व कर्तव्य समझते हुए उनको नगद धनराशि देकर सहायता की। भाजपा विधायक रोमी साहनी ने आगंतुकों का आभार जताते हुए कहा कि भगवान श्रीराम का महान पर्व है इस पर्व पर गरीबों की सेवा व उनको मिष्ठान व शर्बत पेयजल के लिए उनका ह्रदय खुला हुआ है।

गेहूं के खेत में लगी आग से 32 बीघे फसल खाक

असोथर (फतेहपुर)। असोथर थाना क्षेत्र के सरकंडी चौकी क्षेत्र के उसरा डेरा गांव के पास संदिग्ध परिस्थितियों में खेत में खड़ी पकी गेंहू की फसल में अचानक आग लगने से आग की लपट देखकर किसान खेत की ओर भागे और आग बुझने का प्रयास करने लगे। तेज हवा के कारण आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। किसानों ने खेत में लगी गेंहू की फसल में आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड टीम को दिया लेकिन दो घंटे बाद भी फायर ब्रिगेड टीम नहीं पहुच सकी।

आग लगने से किसान राजकरन तिवारी पुत्र शिरोमणि के 15 बीघा, रामानंद तिवारी पुत्र उमाशंकर का दो बीघा, संतोष पुत्र पूतना निषाद का 6 बीघा, रामचरण सविता पुत्र जगपत की तीन बीघा, ओम प्रकाश विश्वकर्मा पुत्र राम आसरे का एक बीघा, जयनन्द त्रिपाठी पुत्र उमाशंकर त्रिपाठी का तीन बीघा कुल 32 बीघा गेंहू की फसल जलकर खाक हुई है। किसान राजकरण तिवारी, संतोष निषाद, रामचरण ने आरोप लगाया कि गांव के रहने वाले नुन्नू दर्जी ने महुआ के पेड़ की गिरी हुई पत्तियों को इक्कठा कर आग लगाया था।

आग बुझने के बाद भी उसमें से निकली चिंगारी पांच मीटर दूर खेत में खड़ी गेंहू की फसल में करीब 12 बजकर 30 मिनट के आस पास पहुंचने से आग लगी है। उसके बाद आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड टीम को दिया गया लेकिन फायर ब्रिगेड की गाड़ी नही आयी। आग लगने के सूचना पर पहुंचे चौकी इंचार्ज सरकंडी विनोद कुमार निगम ने पुलिस टीम और ग्रामीणों के मदद से बाल्टी में पानी भरकर खुद भी आग बुझने में लगे रहे। करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत बाद आग पर काबू पाया गया। चौकी इंचार्ज और पुलिस कर्मियों के इस कार्य को देखकर किसानों ने उनकी प्रशंसा किया।

हर्षोल्लास से मनाया गया मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का जन्मोत्सव

संवाददाता। पुखरायां, कानपुर देहात

इस बार अयोध्या में रामलला की स्थापना का असर राम नवमी के अवसर पर क्षेत्र के मंदिरों में देखने को मिला। लोगों ने बड़े ही धूमधाम से मंदिरों में भगवान राम जन्मोत्सव मनाया। भोगनीपुर क्षेत्र में बुधवार को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव पूरे हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया गया। जैसे ही घड़ी में दोपहर के 12 बजे क्षेत्र के राम मंदिरों में घंटियों का नाद और शखों की ध्वनि के बीच भए प्रगट कृपाला दीन दयाला और जय-जय श्रीराम के जयकारे सुनाई देने लगे। मंदिरों में मौजूद श्रद्धालुओं ने धूमधाम से महाआरती की। वहीं महिलाओं ने भजन, सोहर, बन्ना तथा अन्य कई लोक गीत गाए।

चैत्र नवरात्र के अंतिम दिन नवमी के दिन कस्बा सहित क्षेत्र के मंदिरों में धूमधाम से रामनवमी मनाई गई। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का जन्म हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बुधवार को घड़ी में दोपहर के 12 बजते ही मंदिरों में शंख-ध्वनि और घंटे-घडियाल गूंजने लगे। इस दौरान जन्म आरती और बधाई गीत भी गाए गए। भक्तों ने श्री रामचंद्र कृपालु भज मन् का मंगल गान भी सामूहिक रूप से गाया। जन्मोत्सव होते ही भक्तों और उपस्थित जन समूह को पंजीरी, खिचड़ी और छाछ का प्रसाद बांटा गया। जन्मोत्सव मनाने के लिए मंदिरों को आकर्षक झालरों से सजाया गया था। कहीं फूल बंगला सजाया गया तो कहीं भगवान को नवीन वस्त्र धारण कराए गए। राम दरबार को फूलों से सजाया गया था। अमरौधा के टंडन बाजार स्थित प्राचीन राम जानकी मंदिर में हुई महाआरती में सैकड़ों भक्त उपस्थित रहे। सुधा टंडन, सुमित्रा गौड़, संतोष कुमारी वर्मा, नीतिका यादव, सुमलता तिवारी, ऊषा यादव की टोली ने भजन, सोहर, बन्ना तथा अन्य कई लोक गीत गाए। भाजपा नेता शिव प्रसाद मिश्र, कमल प्रकाश मेहरोत्रा, राम प्रकाश यादव, प्रधानाचार्य रामनाथ वर्मा, संदीप यादव, कुलदीप यादव, शंभू संखवार, राजेंद्र प्रसाद आदि मौजूद रहे। पंडित अशोक कुमार दीक्षित ने आरती संपन्न करायी। जबकि शुभम टंडन, प्रियंक दीक्षित ने पंजीरी, खिचड़ी और छाछ का प्रसाद बांटा। वहीं भोगनीपुर, देवराहट, दिबैर की मड़ैयां, दुर्वाषा आश्रम के राम मंदिरों में भगवान राम का विधि-विधान से पूजन व अभिषेक किया गया। भगवान की मूर्तियों का फूलों से आकर्षक श्रृंगार किया गया। इस बार चैत्र मास की नवरात्र में पूरे नौ दिनों तक देवी मंदिरों में रौनक रही। ज्यादातर संकट मोचन मंदिरों में श्रीराम चरित मानस के अखंड पाठ का भी आयोजन किया गया। भक्तों ने पूरी श्रद्धा के साथ हवन पूजन कर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की आरती गाकर समूचे वातावरण को भक्तिमय कर दिया।

अमरौधा के राम जानकी मंदिर में सजाया गया राम दरबार, जन्मोत्सव के बाद मंदिर में सोहर,बधाई गीत गाती महिलाएं।

क्विक न्यूज

वाहन की टक्कर से युवक की मौत, चालक गंभीर घायल

राठ (हमीरपुर)। मंगलवार की देर रात दोस्त के साथ राठ आ रहे बाइक सवारों को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। पीछे बैठे एक युवक की मौत हो गई। जबकि बाइक गंभीर रूप से घायल हो गया। इलाज मेडिकल कालेज झांसी में चल रहा है। कोतवाली के टूंका गांव निवासी स्वामीदीन अहिरवार ने बताया कि उसके चार पुत्र संजू, गौतम, वीरेंद्र, विवेक है। वह परिवार सहित दिल्ली में रहता है। बड़े पुत्र की शादी होने पर वह 15 दिन पहले परिवार सहित गांव आया था। गुरुवार को उसके पुत्र संजू की बारात नोएडा जानी थी। घर में बारात की तैयारियां चल रही थी। तभी मंगलवार की रात गांव का जीतेन्द्र उसके छोटे पुत्र 20 वर्षीय वीरेंद्र को बाइक से शराब पिलाने के बहाने ले गया। तभी कुर्रा गांव की नहर के पास अज्ञात वाहन ने बाइक में टक्कर मार दी। जिससे उसके पुत्र की मौत हो गई। जीतेन्द्र गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसका इलाज झांसी में चल रहा है।

संदिग्ध हालत में वृद्ध ने फांसी लगा दी जान

फतेहपुर। असोथर थाना क्षेत्र के झब्बापुर गांव निवासी शिवपाल का पुत्र राजकुमार पासवान शराब पीने का आदी था। जिसने तीन दिन पूर्व घर के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया था। उधर पुत्र रामशिरोमणि उसकी खोजबीन कर रहा था लेकिन कोई सुराग न मिला। मंगलवार की दोपहर पड़ोस में शादी समारोह था। जब साफसफाई के दौरान राजकुमार पासवान के घर से बदबू आने लगी तो पड़ोसियों ने उसके पुत्र को जानकारी दी। जब घर का ताला खोला गया तो राजकुमार का शव फांसी पर लटका था। शव को विच्छेदन गृह भेज दिया। मृतक के पुत्र रामशिरोमणि का कहना है कि वह प्रतिदिन उसके घर खाना खाने के लिए आते थे। तीन दिन से नही आ रहे थे। जिस घर में पिता रहते हैं वहां आगे व पीछे दरवाजा है। सामने के दरवाजे में ताला लगाकर पीछे वाले दरवाजे से अंदर जाकर फांसी लगा लिया। उधर पुलिस अन्य पहलुओं पर भी तहकीकात कर रही है।

लोकसभा प्रत्याशी घोषित

फतेहपुर। अखिल भारतीय अशोक सेना के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष रामस्वरूप मौर्य ने बताया कि केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में रामस्वरूप उर्फ विश्वस्वरूप मौर्य को लोस का प्रत्याशी घोषित कर दिया। रामस्वरूप पूर्व में फतेहपुर लोस व खागा विधानसभा का चुनाव लड़ चुके हैं।

मृतक के पिता ने दो युवकों के विरुद्ध दर्ज कराई रिपोर्ट

राठ (हमीरपुर)। चिकासी थाने के बिलगांव डांडा में दलितों की मारपीट से आहत होकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। स्वजनों शव को कूड़े रख दिया था। पुलिस ने पिता की तहरीर पर दो युवकों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। बिलगांव डांडा गांव निवासी विजय राजपूत ने पुलिस को बताया कि सोमवार की शाम उसका पुत्र प्रिंस राजपूत (22) के साथ गांव के पान सिंह पासवान के रिश्तेदार रामू निवासी गढ़हर कोतवाली उरई जनपद जालौन, आकाश पासवान निवासी बैरागढ़ कोतवाली उरई जनपद जालौन ने मारपीट कर दी। उसकी पत्नी रामरती पान सिंह के यहां पूछने गई। उसके पुत्र ने नशे की हालत में कमरे में पंखे से गमछे से फंदा डालकर आत्महत्या कर ली थी। विचार विमर्श कर शव को उतार कर सड़क किनारे रख दिया था। चिकासी थानाध्यक्ष ने बताया कि पिता की तहरीर पर रामू, आकाश के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया गया है।

बच्चे का इलाज कराकर वापस लौट रहे देवर भाभी की मृत्यु

बिवाँर (हमीरपुर)। बच्चे का इलाज कराकर हमीरपुर से वापस लौट रहे देवर भाभी की लोडर की टक्कर से दर्दनाक मृत्यु हो गयी मासूम बच्चा बुरी तरह घायल हो गया पुलिस के मुताबिक बुधवार को ललपुरा थाना क्षेत्र के बजेहटा निवासी रोहित (25) पुत्र जगभान साहू और उसकी भाभी रितु (25) पत्नी रवि बाइक से बच्चों का इलाज करा कर गाँव लौट रहे थे ,जिन्हें राठ की ओर से आ रहे लोडर ने कुचल दिया जिनकी मौके पर ही मौत हो गई लेकिन उनके साथ रीति का सात माह का बच्चा रिहाल बच गया, हालाँकि उसे भी चोटें आईं। घटना के बाद लोडर का चालक फरार मृतका रितु, उसका पति रवि और देवर रोहित (मृतक) सभी दिल्ली में मजदूरी करते थे, अभी लगभग एक सप्ताह पहले ही सभी लोग किसी शादी में शामिल होने दिल्ली से आए थे। मृतक रोहित भी शादीशुदा बताया गया जिसने गाँव की ही लड़की से प्रेम विवाह किया था जिनके भी एक बच्चा है।

क्षय रोग से पीड़ित वृद्धा ने फांसी लगाकर दी जान

राठ (हमीरपुर)। कोतवाली के रैरौ गांव में क्षय से पीड़ित वृद्धा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। रैरौ गांव निवासी अलखराम रैकवार ने बताया कि उसकी मां रामकुमारी(62) क्षय रोग से पीड़ित थी। जिनका इलाज चल रहा था। पिछले तीन माह से बच्चेदानी में शिकायत आ गई थी। हर अस्पतालों में उनका इलाज कराया। लेकिन उन्हें कुछ आराम नहीं मिला। बताया कि उनकी मां को कुछ दिनों से बहुत दर्द रहता था। जिससे वह परेशान रहती थी। बताया कि कोई भी डॉक्टर वृद्धावस्था व कमजोरी के कारण बच्चेदानी का ऑपरेशन करने को तैयार नहीं थे।

मझपुर्वा में हुआ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

गुरसहायगंज (कन्नौज)। मतदान प्रतिशत बढ़ाए जाने को लेकर जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी के निर्देशन में अधिकारियों द्वारा नगर व क्षेत्र में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। मझपुर्वा में नायब तहसीलदार नें कहा कि पहले मतदान करें बाद में करें जलपान। बुधवार को क्षेत्र के ग्राम मझपुर्वा के पंचायत भवन में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से छिबरामऊ नायब तहसीलदार राम प्रकाश ने उपस्थित आकर लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि सभी लोग निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर राष्ट्रहित में मतदान करें और मतदान के प्रति गांव के लोगों को भी जागरूक करें। इस अवसर पर प्रधान बिलाल अहमद, प्रधान प्रतिनिधि हारून अहमद सिद्दीकी, काननूगो कौशलेंद्र दुबे, सचिन, शिवम पाठक, क्षेत्रीय लेखपाल कौशल पाण्डेय सहित तमाम ग्रामीण मौजूद रहे।

फोटो परिचय।17जीयूआर02। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में मौजूद अधिकारी व ग्राम प्रधान।

नवरात्र के अंतिम दिन श्रद्धालुओं ने हवन पूजन कर कराया कन्याभोज

गुरसहायगंज (कन्नौज)। चैत्र नवरात्रि के अंतिम दिवस के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने घरों एवं देवी मंदिरों व श्रीराम मंदिर में पूर्व राज्यमंत्री को मंदिर के महंत पं. राकेश चन्द्र दुवे ने पूजन कराया। वहीं सती माता मंदिर में श्रद्धालुओं के साथ वरिष्ठ समाजसेवी नें पालिकाध्यक्षा के साथ हवन पूजन कर कन्याओं को भोज कराकर दान दक्षिणा भेंट की। इस दौरान संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया। वही नगर में कई स्थानों पर प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया।

नवरात्र के अंतिम दिवस बुधवार कि सुबह से ही मंदिरों में महिला व पुरुष श्रद्धालुओं की कतारें लग गई। नगर के मोहल्ला आजाद नगर स्थित प्राचीन काली देवी मंदिर, तिराहा स्थित संतोषी माता मंदिर, रेलवे रोड स्थित हनुमान मंदिर, पावर हाउस स्थित गंगेश्वर नाथ मंदिर, चकोर रोड स्थित पशुपतिनाथ मंदिर, जीटी रोड स्थित प्राचीन राम मंदिर में पूर्व राज्यमंत्री अर्चना पाडेय ने भाजपा क्षेत्रीय मंत्री देवेन्द्र देव, पालिकाध्यक्ष प्रतिनिधि मयंक गुप्ता, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष राजीव ठाकुर के साथ माँ भगवती की पूजा अर्चना की। उधर नगर के सर्विस रोड स्थित सती माता मंदिर में श्रद्धालुओं के साथ वरिष्ठ समाजसेवी अशोक गुप्ता नें पालिकाध्यक्षा मुन्नी देवी गुप्ता के साथ विधि विधान से हवन पूजन व दान दक्षिणा भेंटकर कन्या भोज कराया। उधर नागरिकों ने अपने घरों पर पूजा बंदना कर कन्या भोज कराकर कन्याओं का आशीर्वाद लिया। सुरक्षा व्यवस्था के लिए नगर के मंदिरों के बाहर पुलिस बल तैनात रहा। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर राकेश चन्द्र वर्मा, नीरज मिश्रा, विकास गुप्ता, मनोज गुप्ता, अजय दीक्षित, गंगासिंह, दीपक चक, नवल गुप्ता सहित तमाम श्रद्धालु मौजूद रहे।

सती माता मंदिर में हवन पूजन व कन्या भोज कराते समाजसेवी।

खीरी सांसद ने कई गावों का किया दौरा

लखीमपुर खीरी। केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने विकासखण्ड निघासन के ग्राम सुथना बरसोला एवं विकासखण्ड रमियाबेहड़ के ग्राम सिसैयाए दरेरी एवं मल्लबेहड़ में जनसम्पर्क किया तथा नगर पंचायत सिंगाही एवं नगर पंचायत निघासन में चुनाव कार्यालय का शुभारम्भ भी किया।

केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने विकासखण्ड निघासन के ग्राम सुथना बरसोला में दुर्गा माता मंदिर के पास एवं विकासखण्ड रमियाबेहड़ के ग्राम सिसैयाए दरेरी एवं मल्लबेहड़ में जनसम्पर्क किया तथा नगर पंचायत सिंगाही में महारानी सुरथ कुमारी मार्ग एवं नगर पंचायत निघासन में मोहल्ला गांधीनगर निघासन मेन रोड पर चुनाव कार्यालय का शुभारम्भ किया। जनसम्पर्क के दौरान कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री अजय कुमार मिश्रा ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में ग्रामीण क्षेत्र के जनजीवन में बहुत बड़े बदलाव हुए है। पहले गांवों में कच्ची गलियां एवं सड़के होती थी घरों में शौचालय नहीं थे लोगों के रहने के लिए आवास नहीं थे लोग झोपड़ियों में रहते थे साफसफाई की भी कोई व्यवस्था नहीं थी लेकिन सन् 2014 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांव.गांव में पक्की सड़कों को बनवाया जिन लोगों के पास शौचालय एवं आवास नहीं था उन्हें शौचालय एवं आवास मुहैय्या करवाया।

गांव के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए हमारी सरकार ने हर गांव में पंचायत घर बनवायाए हर ग्रामसभा में सामुदायिक शौचालय बनवाया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इस देश में भ्रष्टाचार पर था और उसका सबसे बड़ा उदाहरण और सबसे खराब समय 2004 से 2014 के बीच में था उस दौरान इस देश में इतने घोटाले हुए कि देश खोखला हो गया और जो पार्टियां सरकार में सत्ता में थी उनका खुला संरक्षण ऐसे लोगों के प्रति था कि इस देश में जो भी योजना आती थी उसमें उनके दलाल लग जाते थे थाने, तहसील एवं ब्लाक हर जगह पर दलाल मिल जाते थे प्रदेश में भी इस तरह की सरकारें थी कि उनके कार्यकर्ता खुलेआम दलाली करते थे ऐसे खुलेआम भ्रष्टाचार होता था और योजनाओं में तो सबसे ज्यादा होता था हमारी सरकार ने पहली बार जब 2014 में सरकार बनी तो कुछ ऐसे निर्णय लिए थे जिसमें हम यह उद्देश्य लेकर चले थे कि इस देश को भ्रष्टाचार का जो घुन खा रहा है जब तक उसको जड़ से खत्म नहीं किया जायेगा तब तक यह देश आगे नहीं बढ़ पाएगा।

कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि अरविन्द सिंह 'संजय', अमनदीप सिंह प्रतिनिधि ब्लाक प्रमुख निघासन, मो. कय्यूम अध्यक्ष नगर पंचायत सिंगाही (भेड़ौरा), कनक पाल सिंह राना, दामोदर मौर्य, जीएस सिंह, संगम लाल मिश्र, विनोद लोधी, प्रदीप शुक्ला, संजय मिश्रा, नागेन्द्र सिंह सेंगर, महेश गुप्ता, संजय गिरिए राहुल निषाद, प्रेम बाजपेई, प्रज्ञानन्द श्रीवास्तव, मोनू दीक्षित, हरीश पाण्डेय, रतीराम लोधी, यदुवेन्द्र अवस्थी आदि लोग भी शामिल रहेंगे।

इंडिया गठबंधन परिवर्तन का काम करेगा: सपा प्रत्याशी

फर्रुखाबाद। फर्रुखाबाद लोकसभा से इंडिया गठबंधन सपा प्रत्याशी डॉ नवल किशोर शाक्य ने कहा कि इंडिया गठबंधन देश में परिवर्तन का काम करेगा। शाक्य ने आज दोपहर करीब 12. 30 बजे बाद बुधवार को फर्रुखाबाद जिले में शहर के नगला खैरवन्द स्थिति एक गेस्ट हाउस में स्थापित केंद्रीय सपा चुनाव कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में संवाददाताओं से बातचीत करते हुए बताया कि फर्रुखाबाद लोकसभा से इंडिया गठबंधन में सपा से सांसद चुने जाने के उपरांत हमारी पहली प्राथमिकता मे गरीब बच्चों की पढ़ाईलिखाई पर अपना पूरा वेतन खर्च करना होगी। इंडिया गठबंधन सपा प्रत्याशी डॉ शाक्य ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ किंग चार्ज मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस तथा अमेरिका के शिकागो से वरिष्ठ कैंसर सर्जन फैलोशिप की शिक्षा दीक्षा पाने के साथ ही अपने आप को साधारण परिवार, गरीब किसान का बेटा बताते हुए कहां कि फर्रुखाबाद डॉक्टर राम मनोहर लोहिया की कर्मभूमि एवं प्रमुख संकिसा भगवान बुद्ध हमारी प्रेरणा स्थलीय है।

उन्होंने दावा किया कि मैं पिछले करीब 12 वर्षों से डॉक्टर बनकर गरीब जनता की सेवा करता चला रहा हूं। फर्रुखाबाद लोकसभा के गरीब माता-पिता जो अपने गरीव बच्चों को पढ़ाई लिखाई कराने में असमर्थ हैं, मेरी पहली प्राथमिकता सांसद चुने जाने पर गरीब बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर पूरा वेतन खर्च करने की होगी।उन्होंने बताया कि फर्रुखाबाद जिले में आलू की सबसे ज्यादा पैदावार होती है परंतु अभी तक आलू पर आधारित कोई कारखाना न लगाया जाना चिंता जनक है । सपा प्रत्याशी डॉ शाक्य ने अपनी प्राथमिकता में माना कि आलू प्रोसेसिंग से कुछ दवाइयां बन सकती हैं। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि जिले में दो गवर्नमेंट सोसाइटी में कंम्पिल कताई सूत मिल करीब 23 वर्षों से बंद है, जिसके कर्मचारियों को निकाल दिया गया, जिनके बच्चे आज दयनीय हालत में है, इसके साथ ही दि किसान सहकारी चीनी मिल कायमगंज बदहाल में चल रहा है। इसी दौरान फर्रुखाबाद के प्रतिनिधियों से उन्होंने जानना चाहा कि किसी को अचानक हार्ट अटैक हो तो यहांउसे इलाज कैसे मिल पायेगा।

प्रश्न करते हुए कहा कि जिले में यदि यातायात के अच्छे उपयोगी साधन होते तो आज कारचोप का उद्योग फल फूल सकता था।उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि सांसद चुने जाने पर इस दिशा में जनहित में कार्य कराऊंगा। इस अवसर पर सपा प्रदेश सचिव मनदीप यादव एडवोकेट, आम आदमी पार्टी जिला अध्यक्ष नीरज प्रताप शाक्य, कांग्रेस प्रदेश सचिव अनूप वर्मा कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष मृत्युंजय शर्मा,, जन अधिकार पार्टी जिला अध्यक्ष प्रभात शाक्य, सपा जिला अध्यक्ष चंद्रपाल सिंह यादव, चेयरमैन शमशाबाद नगर पंचायत अध्यक्ष नदीम फारुकी, सीपीआई सुनील कटियार, सीपीआई एम अमित कुमार, गोरखपुर से आए चुनाव प्रभारी विनीत कुशवाहा, सपा मीडिया प्रभारी विवेक यादव आज मौजूद रहे।

ईद हो या तीज त्यौहार मनरेगा में चलेगा कागजों में फर्जी काम

मौदहा (हमीरपुर)। मनरेगा में फर्जी काम करने का मामला अक्सर शासन व प्रशासन में छाया रहता है,यहां पर ज्यादातर काम धरातल में कम कागजों में दिखायी देते है। यहाँ मुर्दो को काम में लगाने का मामला उजागर हो चुका है स लेकिन कार्यवाई के नाम पर जांच तक़ ही सीमित हो जाता है स जिससे भ्रष्टाचारियों के हौसले बुलंद होते जा रहे है। इस समय किसानी का कार्य फसल कटाई का काम जोरो पर चल रहा है स जहां अधिकतर मजदूर फसल कटाई में लगे है स लेकिन मनरेगा को तो निरंतर चलना है इसलिए ज्यातर गांवो में कही दो सौ तो कही चार सौ तो कही पांच सौ मजदूर कागजो में काम करते नजर आ रहे है विकास खंड में छब्बीस जनवरी हो या ईद का त्यौहार काम कागजों में निरंतर चलता रहता है। ग्राम पंचायत विगहाना में दो कार्यो में ढाई सौ से अधिक मजदूर कागजो में फर्जी काम कर रहे थे धरातल में नहीं, जलरोक बंध कार्य श्यामू के खेत से मइयादीन के खेत तक़ में 103 मजदूर सिर्फकागजों में काम करते दिखाए गए जिसमें से 36 मुस्लिम मजदूर है स और फर्जी एम एम एस कर फोटो से ही हाजरी भर कर मजदूर काम करते दिखाए गए है वही दूसरा काम जिसमें 155 मजदूर लगे है स जिसमें 42 मजूदर मुस्लिम है स गब्बू वर्मा के खेत से पारा बंधा तक़ है स फर्जीवाड़ा का आलम यह है कि यहा पर ईद में भी मुस्लिम मजदूरों द्वारा काम करना दिखाया गया है। विगहाना ग्राम पंचायत में दो कार्यो 258 मजदूर काम पर दिखाए गए है स जिसमें एक दिन की एक मजदूर की मजदूरी 237 रूपये के हिसाब से258मजदूरों की मजदूरी 61146 रूपये होती है स जो प्रति दिन फर्जी तरीके से कागजों में काम दिखा कर डकार रहे है।

● मनरेगा में फर्जीवाड़ा काम कराने का मामला फिर आया सामने, बीडीओ ने कहा करायेगी जांच

भाजपा सरकार ने खोखले नारों से देश की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया: आनंद

● आनंद भदौरिया के अथक प्रयासों की देन है मितौली तहसील: सुनील लाला

लखीमपुर खीरी। धौरहरा संसदीय क्षेत्र के कस्ता विधानसभा क्षेत्र के ग्राम गुलौलाए सुतेहराए नीमगांवए पिपरियाए बेल जोधपुरए अल्लीपुरए भुलनपुरए बांछेपाराए मलिगवां व बेहजम में समाजवादी पार्टी ने नुक्कड़ सभाओं का आयोजन कियाए इस मौके पर सपा प्रत्याशी आनंद भदौरिया सहित पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने मतदाताओं को पार्टी की नीतियों से अवगत कराया। सपा की नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया गया। 'आनंद भदौरिया ने किसान नौजवानए आधी आबादी महिलाओ को संबोधित करते हुए कहाकि' लोकसभा 2024 का आम चुनाव देश के किसानोंए नौजवानोंए महिलाओंए व्यापारियोंए आदिवासियोंए दलितोंए पिछड़ोंए अल्पसंख्यकों के भविष्य और देश मे लोकतंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैए यह चुनाव देश के संविधान और लोकतंत्र को मजबूत करने वाला चुनाव है। किसानोंए नौजवानों को उनका हक और सम्मान दिलाने वाला चुनाव हैए देश में बढ़ती महंगाईए बेरोजगारीए अन्यायए अत्याचार और भ्रष्टाचार से आम जनजीवन त्रस्त हो चुका हैए हर वर्ग परेशान हैए लोगों में निराशा का माहौल है। वर्तमान शासन व्यवस्था ने लोगों के सामने नौकरीए रोजगार का संकट खड़ा कर दिया हैए भाजपा सरकार ने खोखले नारों से देश की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया है। महंगाई और बेरोजगारी चरम पर पहुंच गई हैए महंगाई से त्रस्त किसान और नौजवानए महिलाओं के सामने तमाम तरह की चुनौतियां खड़ी हो गई हैं जिससे जीवन यापन पर संकट आन खड़ा है!

पूर्व विधायक कस्ता सुनील लाला ने किसान.नौजवानों को संबोधित करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी सरकार और आनंद भदौरिया के अथक प्रयासों की देन है मितौली तहसीलए पूर्व में हम तहसील के काम के लिए मोहम्मदी और लखीमपुर जाते थे आज मितौली तहसील बनकर तैयार है जिससे हम लोगो को कही और जाना नही पड़ता! ये समाजवादी पार्टी के विकास के विजन का परिणाम है।

तमिलनाडु की सभी 39 लोकसभा सीट के लिए चुनाव प्रचार थमा

● पश्चिम बंगाल की तीन सीट पर भी प्रचार समाप्त

भाषा। चेन्नई, कोलकाता

तमिलनाडु की सभी 39 सीट और पश्चिम बंगाल के उत्तर में स्थित तीन लोकसभा सीटों के लिए बुधवार शाम छह बजे चुनाव प्रचार थम गया। पहले चरण में महाराष्ट्र की पांच और जम्मू-कश्मीर की एक सीट पर होने वाले मतदान के लिए भी चुनाव प्रचार बुधवार शाम समाप्त हो गया। इन सभी सीटों पर लोकसभा के लिए सात चरणों में होने वाले चुनाव के पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान होगा।

तमिलनाडु में बुधवार को चुनाव प्रचार समाप्त होने तक राज्य के मुख्यमंत्री और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) अध्यक्ष एम.के.स्टालिन, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष और ऑल इंडिया अन्ना द्रमुक मुनेत्र कषगम (अन्नाद्रमुक) नेता ई.के.पलानीस्वामी सहित अन्य नेताओं से अधिक से अधिक मतदाताओं तक पहुंचने की कोशिश की। स्टालिन ने एक बार फिर 2024 के लोकसभा चुनाव को दूसरा स्वतंत्रता आंदोलन बताया और दोहराया कि आम चुनाव यह तय करने के लिए है कि किसका शासन जारी नहीं रहना चाहिए बजाय इसके कि किसका सत्ता पर कब्जा होगा। द्रमुक प्रमुख ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर अपनी स्वार्थ की राजनीति के लिए देश को बर्बाद करने का आरोप लगाया।

अन्नाद्रमुक महासचिव पलानीस्वामी ने सलेम में एक रोड शो किया और 2021 के विधानसभा चुनावों से पहले किए गए वादों को पूरा नहीं करने के लिए सत्तारूढ़ द्रमुक की आलोचना की। उन्होंने उदाहरण दिया कि द्रमुक ने अबतक पुरानी पेंशन योजना लागू नहीं की है जिसका उसने वादा किया। भाजपा की तमिलनाडु इकाई के अध्यक्ष के. अन्नामलाई और पार्टी नेता एल. मुरुगन ने मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए क्रमशः कोयंबटूर और नीलगिरी में गहन प्रचार अभियान चलाया। पश्चिम बंगाल में तीन लोकसभा सीट, कूच बिहार (एससी), जलपाईगुड़ी (एससी) और अलीपुरद्वार (एसटी) के लिए पहले चरण में 19 अप्रैल को होने वाले मतदान के लिए प्रचार बुधवार शाम छह बजे समाप्त हो गया। इन सीट पर चाय बागान श्रमिकों की मुश्किलें और राजबंशियों की पहचान प्रमुख मुद्द के रूप में उभरे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपनी-अपनी पार्टी के उम्मीदवारों के समर्थन में जनसभाएं की।

पहले चरण में, कुल 56,26,108 मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे जिनमें 28, 62,494 पुरुष, 27,63,506 महिलाएं और 108 तृतीय लिंग के मतदाता शामिल है। तीन सीट पर मतदान के लिए 5,814 बूथ बनाए गए हैं। मौजूदा सांसद और केंद्रीय मंत्री निसिथ प्रमाणिक सहित कुल मिलाकर 14 उम्मीदवार कूच बिहार से संसदीय चुनाव लड़ रहे हैं। तृणमूल कांग्रेस ने इस सीट से जगदीश चंद्र बर्मा बसुनिया को मैदान में उतारा है, जबकि फॉरवर्ड ब्लॉक ने नीतीश चंद्र रॉय और कांग्रेस ने पिया रॉय चौधरी को उम्मीदवार बनाया है। चौधरी को छोड़कर सभी उम्मीदवार राजबंशी समुदाय से हैं।

महाराष्ट्र में पहले चरण में नागपुर, रामटेक, भंडारा-गोंदिया, चंद्रपुर और गढ़चिरौली सीट पर मतदान होगा। नागपुर में केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता नितिन गडकरी और कांग्रेस के विकास ठाकरे के बीच सीधा मुकाबला है। गडकरी ने 2019 में कांग्रेस के नाना पटोले को 2,16,000 मतों से हराया था। नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मुख्यालय है और यहां पर कुल 22,18,259 मतदाता हैं जिनमें 11,10,840 पुरुष मतदाता, 11,07,197 महिला और 222 तृतीय लिंग के मतदाता शामिल हैं।

चंद्रपुर में, भाजपा उम्मीदवार और महाराष्ट्र के वन मंत्री सुधीर मुनगंटीवार का मुकाबला कांग्रेस उम्मीदवार प्रतिभा धानोरकर से है, जो दिवंगत सुरेश धानोरकर की पत्नी हैं। सुरेश धानोरकर इस सीट से 2019 में महाराष्ट्र से लोकसभा के लिए चुने गए एकमात्र कांग्रेस सांसद थे जिनका पिछले साल निधन हो गया था।

भंडारा-गोंदिया में भाजपा ने मौजूदा सांसद सुनील मेंढे को मैदान में उतारा है, जिनका मुकाबला कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. प्रशांत पटोले से है। मेंढे ने 2019 में तत्कालीन अविभाजित राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नाना पंचबुधे को1,97,394 से अधिक मतों से हराया था। भाजपा के दो बार के सांसद अशोक नेते गढ़चिरौली-चिमूर में कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. नामदेव किरसन के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। 2019 के चुनाव में नेते ने कांग्रेस प्रत्याशी डॉ नामदेव उसेंडी को हराया था। रामटेक में कांग्रेस के श्यामकुमार बर्वे का मुकाबला एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के उम्मीदवार राजू परवे से है। 2019 में यहां अविभाजित शिवसेना उम्मीदवार कृपाल तुमाने ने कांग्रेस के किशोर उत्तमराव गजभिए को हराया था।

ईडी ने हेमंत सोरेन के खिलाफ दर्ज धनशोधन मामले में चार और लोगों को गिरफ्तार किया

रांची। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और अन्य के खिलाफ कथित अवैध जमीन हड़पने से जुड़े धनशोधन मामले में चार और लोगों को गिरफ्तार किया है। आधिकारिक सूत्रों ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के प्रावधानों के तहत हिरासत में लिए गए लोगों की पहचान अंतु तिर्की, प्रिय रंजन सहाय, बिपिन सिंह और इरशाद के रूप में हुई है। ईडी ने मंगलवार को यहां तिर्की और कुछ अन्य लोगों के ठिकानों पर छापेमारी की थी और उनसे पूछताछ करने के बाद उन्हें गिरफ्तार किया।

तिर्की कथित तौर पर सोरेन से जुड़ा हुआ है जबकि सिंह एक रियल एस्टेट व्यवसाई है। ईडी द्वारा इस मामले में दायर किए गए आरोपपत्र के अनुसार सहाय ने अन्य के साथ मिलकर इस जमीन से संबंधित दस्तावेजों में भी फर्जीवाड़ा किया है। ईडी द्वारा चार और लोगों को गिरफ्तार किए जाने के बाद इस मामले में अब तक कुल आठ लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। ईडी ने जनवरी में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के कुछ ही देर बाद सोरेन (48) को गिरफ्तार कर लिया था। वह फिलहाल रांची के होटवार में स्थित बिरसा मुंडा जेल में न्यायिक हिरासत में हैं। इस मामले में मुख्य आरोपी व राजस्व विभाग के पूर्व उप-निरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद, मोहम्मद सद्दाम हुसैन और अफसर अली को भी गिरफ्तार किया गया है। रांची में 8.86 एकड़ जमीन से संबंधित मामले में सोरेन के खिलाफ जांच की जा रही है। ईडी ने आरोप लगाया है कि पूर्व मुख्यमंत्री ने अवैध रूप से यह जमीन हासिल की थी।

सोरेन ने मंगलवार को रांची की एक विशेष अदालत के समक्ष जमानत याचिका दायर की थी, जिसमें उन्होंने यह आरोप लगाया कि उनकी गिरफ्तारी राजनीति से प्रेरित और उन्हें भाजपा में शामिल होने के लिए मजबूर करने की एक सुनियोजित साजिश का हिस्सा थी। एजेंसी ने 30 मार्च को यहां एक विशेष पीएमएलए अदालत के समक्ष प्रसाद, हेमंत सोरेन, उनके सहयोगियों राज कुमार पाहन और हिलरिया कछप तथा राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री बिनोद सिंह के कथित सहयोगी के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था। ईडी ने रांची में स्थित जमीन भी कुर्क कर ली है और अदालत से भूखंड को जब्त करने का अनुरोध किया है। झारखंड पुलिस द्वारा राज्य सरकार के अधिकारियों समेत कई लोगों के खिलाफ जमीन घोटाले में प्राथमिकी दर्ज करने के बाद इस मामले में धनशोधन की जांच शुरू की गई थी। ईडी ने एक बयान जारी कर बताया कि इस मामले में मुख्य आरोपी भानु प्रताप प्रसाद है।

प्रेस की स्वतंत्रता को किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा के अधिकार के साथ संतुलित करना होगा:हाईकोर्ट

मुंबई। बम्बई उच्च न्यायालय ने एक कारोबारी को निशाना बनाने वाले वेब आलेख और वीडियो को हटाने का निर्देश देते हुए एक पत्रकार से कहा है कि प्रेस की स्वतंत्रता का इस्तेमाल किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा के अंतर्निहित अधिकार का उल्लंघन करने के लिए नहीं किया जा सकता है। अदालत ने यह भी कहा कि खोजी पत्रकारिता को कोई विशेष संरक्षण प्राप्त नहीं है। न्यायमूर्ति भारती डांगरे ने दो अप्रैल को जारी अपने आदेश में कहा कि स्वतंत्र पत्रकार वाहिद अली खान द्वारा अपलोड किए गए लेख और वीडियो प्रथम दृष्टया मानहानिकारक हैं। आदेश की प्रति बुधवार को उपलब्ध हुई।

दुबई से कारोबार करने वाले स्वर्ण व्यापारी खंजन ठक्कर ने अंतरिम आदेश जारी करने का अदालत से अनुरोध किया था कि खान को उनकी आलोचना करने वाले सभी सोशल मीडिया लेखों और वीडियो को हटा देना चाहिए। ठक्कर ने उच्च न्यायालय में खान के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर कर 100 करोड़ रुपए के मुआवजे की मांग की है।

अर्जी में कहा गया है कि सोना कारोबारी को मुंबई पुलिस ने ऑनलाइन सट्टेबाजीजुआ घोटाले से संबंधित एक मामले में आरोपी के रूप में नामित किया था और इस प्राथमिकी के आधार पर, खान ने व्यवसाई के खिलाफ आधारहीन और अपमानजनक आरोप लगाते हुए कहानियों और वीडियो की एक शृंखला अपलोड की। न्यायमूर्ति डांगरे ने आदेश में कहा कि खान अपने आरोपों के समर्थन में कोई भी सामग्री प्रस्तुत करने में विफल रहे। खान के वकील ने दलील दी कि वह अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार का प्रयोग कर रहे थे और एक पत्रकार के रूप में सार्वजनिक हित में जानकारी प्रकाशिताप्रसारित करना उनका मौलिक कर्तव्य भी था।

राजनाथ ने परमाणु हथियारों को नष्ट करने का मांगा स्पष्टीकरण

कासरगोड (केरल)। भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के घोषणापत्र में देश में परमाणु हथियार नष्ट करने के बारे में किए गए वादे पर बुधवार को कांग्रेस से स्पष्टीकरण मांगा। सिंह ने कहा कि भारत के परमाणु हथियारों को नष्ट करने की बात करना राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ करने जैसा है। उन्होंने आरोप लगाया कि देश को कमजोर करने के लिए गहरी साजिश रची जा रही है। केरल के कासरगोड जिले में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि माकपा ने अपने चुनावी घोषणापत्र में परमाणु हथियारों को नष्ट करने का वादा किया है जिस पर कांग्रेस को अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए क्योंकि देश में परमाणु कार्यक्रमों की शुरुआत इंदिरा गांधी ने की थी। उन्होंने कहा कि भारत ने दुनिया के 11 परमाणु शक्ति संपन्न देशों में से एक बनने के लिए कड़ी मेहनत की है और अपने परमाणु हथियारों को नष्ट करने से देश कमजोर हो जाएगा जबकि उसके पड़ोसी देश पाकिस्तान और चीन परमाणु शक्ति संपन्न हैं।

माकपा ने अपने चुनावी घोषणापत्र में कहा है कि परमाणु हथियारों और सामूहिक विनाश के अन्य हथियारों जिनमें रासायनिक और जैविक हथियार शामिल हैं उनका पूर्ण सफाया किया जाएगा। अपने संबोधन में भाजपा नेता ने यह भी कहा कि भारत में जिसने भी भगवान राम का विरोध किया है उसका पतन हुआ है और यही देश में कांग्रेस और माकपा के साथ हुआ। सिंह ने आरोप लगाया कि दोनों दल भगवान राम या रामनवमी के महत्व को नहीं समझते। कांग्रेस और माकपा विपक्षी गुट इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) का हिस्सा हैं। भाजपा नेता ने आरोप लगाया, उन्होंने राम नवमी पर्व मनाने में बाधा डाली। हम सबको मालूम है कि भारत में जिसने भी भगवान राम का विरोध किया है उसका पतन हुआ है और यही देश में कांग्रेस और माकपा के साथ हुआ है। सिंह ने दावा किया कि कांग्रेस अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण का विरोध कर रही थी और आज देश में उसकी हालत देखिए। वामपंथी दल भारत में केवल कुछ ही इलाकों में सिमट गए हैं।

भगवान राम का विरोध करने वालों का पतन हुआ है: राजनाथ

कासरगोड (केरल)। भाजपा के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने बुधवार को दावा किया कि भारत में जिसने भी भगवान राम का विरोध किया है उसका पतन हुआ है और यही देश में कांग्रेस और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के साथ हुआ। सिंह ने आरोप लगाया कि दोनों दल भगवान राम या रामनवमी के महत्व को नहीं समझते। कांग्रेस और माकपा विपक्षी गुट इंडियन नेशनल डेमोक्रेटिक इंक्लूसिव अलायंस (इंडिया) का हिस्सा हैं। भाजपा नेता ने एक चुनावी बैठक में कहा, उन्होंने राम नवमी का पर्व मनाने में बाधा डाली। हम सबको मालूम है कि भारत में जिसने भी भगवान राम का विरोध किया है उसका पतन हुआ है और यही देश में कांग्रेस और माकपा के साथ हुआ है।

कांग्रेस और कम्युनिस्ट दलों की कथनी और करनी में अंतर होने का आरोप लगाने के साथ ही सिंह ने यह भी दावा किया कि भाजपा देश की सबसे विश्वसनीय राजनीतिक पार्टी है। सिंह ने दावा किया कि कांग्रेस और कम्युनिस्ट दलों की कथनी और करनी अलग-अलग थी इसलिए, इसके परिणामस्वरूप भारतीय राजनीति में विश्वसनीयता का संकट पैदा हो गया। उन्होंने कहा कि इस संकट को भाजपा ने एक चुनौती के रूप में लिया और अतीत में किए गए अपने चुनावी वादों को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा फिर से सत्ता में आती है, तो मोदी की सभी गारंटी - भारत को विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्था बनाना, किसानों का कल्याण, अंतरिक्ष क्षेत्र में प्रगति और राष्ट्र का विकास - को पूरा किया जाएगा। हम अगले पांच वर्षों में समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। सिंह ने कहा कि आत्मविश्वास से परिपूर्ण भाजपा को इस लोकसभा चुनाव में केरल में दोहरे अंक में सीट मिलेंगी। केरल में 26 अप्रैल को लोकसभा चुनाव होंगे।

क्विक न्यूज

लालू प्रसाद ने अपनी बेटी रोहिणी आचार्य के लिए प्रचार करने सारण गए

पटना। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद बुधवार को अपनी बेटी रोहिणी आचार्य के लिए प्रचार करने सारण के लिए रवाना हुए। प्रसाद के छोटे बेटे और उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी माने जाने वाले तेजस्वी यादव ने यहां पत्रकारों से कहा, सारण उनकी कर्मभूमि रही है। हमेशा से लोगों ने उन्हें आशीर्वाद दिया है। उनकी मांग और चाहत थी कि लालू जी उनके बीच आएं, तो आज वह वहां गए हैं। यह पूछे जाने पर कि राजद सुप्रीमो क्या आगे भी आगे भी चुनाव प्रचार में शामिल होंगे, तेजस्वी यादव ने कहा, वह उनके नेता हैं। उनके नेतृत्व में बिहार में इंडिया गठबंधन काम कर रहा है, वह (प्रचार) क्यों नहीं करेंगे। मेरी बहन ने हमारे माता-पिता की अनुकरणीय सेवा की, वह उसी भावना से लोगों की सेवा करेगी। तेजस्वी यादव का इशारा आचार्य द्वारा प्रसाद को किडनी दान किए जाने की ओर था। चारा घोटाला मामले में दोषी ठहराए गए प्रसाद, 2013 में अयोग्य ठहराए जाने तक प्रसाद ने सारण का कई बार प्रतिनिधित्व किया था। सारण में पांचवें चरण में 20 मई को मतदान होगा। तेजस्वी यादव से जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस आरोप के बारे में पूछा गया कि राजद विकास के खिलाफ है, प्रधानमंत्री के पास बोलने के लिए कुछ भी नहीं है। वह पिछले दस वर्षों में बिहार के लिए राजग द्वारा किए गए एक भी काम के बारे में नहीं बता सकते। बिहार को विशेष दर्जा, विशेष पैकेज दिए जाने का क्या हुआ... प्रधानमंत्री युवाओं को रोजगार दिए जाने के बारे में बात क्यों नहीं कर रहे हैं? उनके वादों का क्या हुआ? उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री समेत राजग नेता पूरी तरह बेनकाब हो गए हैं। बिहार की जनता हकीकत जानती है। यही कारण है कि पिछले विधानसभा चुनाव में राजद बिहार में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। मैंने बार-बार कहा है कि बिहार में लोकसभा चुनाव के नतीजे आश्चर्यजनक होंगे। यह पूरी तरह से महागठबंधन के पक्ष में होगा। वे (राजग नेता) केवल संविधान बदलने की बात कर सकते हैं। राजग के कई नेता संविधान बदलने की बात कर रहे हैं। जो लोग संविधान को बदलने की कोशिश करेंगे, वे ख़त्म हो जाएंगे। मंगलवार को गया में एक रैली में प्रधानमंत्री ने राजद और कांग्रेस सहित विपक्षी नेताओं पर संविधान को लेकर राजनीति करने का आरोप लगाया था। प्रधानमंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि राजद भ्रष्टाचार और गुंडा राजका प्रतीक है।

कांग्रेस का आर्थिक एजेंडा विभाजनकारी: मिलिंद देवरा

मुंबई। शिवसेना के राज्यसभा सदस्य मिलिंद देवरा ने दावा किया कि किसी जमाने में आर्थिक सुधारों की शुरुआत करने वाली कांग्रेस का वर्तमान में विभाजनकारी आर्थिक एजेंडा है, जो भारत के आर्थिक विकास को पटरी से उतारना चाहता है। देवरा ने पीटीआई-भाषा के साथ साक्षात्कार में कहा कि कांग्रेस अब काफी हद तक वामपंथी हो गई है और उन नीतियों के बारे में बात करती है, जो वामपंथ और समाजवाद से प्रेरित हैं और ए दोनों ही विचारधाराएं दुनिया भर में विफल रही हैं। देवरा ने कहा कि कांग्रेस को उन नीतियों के बारे में बात करनी चाहिए, जो ईंधन नवाचार और निवेश को बढ़ाए। इस वर्ष जनवरी में कांग्रेस छोड़ कर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना में शामिल हुए देवरा ने कहा कि 1991 के आर्थिक सुधार, पिछले 60 से 70 वर्षों की कांग्रेस की नीतियों ने व्यापारियों और धन सृजनकर्ताओं को पनपने का मौका दिया। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि अब कांग्रेस पार्टी उनकी आलोचना करने की कोशिश कर रही है। देवरा ने दावा किया, यह इस बात का संकेत है कि कांग्रेस अपनी ही बनाई हुई परंपरा से दूर भाग रही है। उन्होंने कहा, किसी जमाने में कांग्रेस के पास भारत को आगे ले जाने का आर्थिक एजेंडा था। आज मुझे लगता है कि कांग्रेस का आर्थिक एजेंडा विभाजनकारी है, जो भारत के आर्थिक विकास को पटरी से उतारना चाहता है। आज भारत में वाकई दिलचस्प बयार चल रही है और दुनिया चीन से हटकर भारत में निवेश करना चाहती है। मनमोहन सिंह सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे देवरा ने कहा, हमें इस मौके का फायदा उठाना चाहिए। 2004 से 2014 तक दक्षिण मुंबई से लोकसभा सदस्य रहे देवरा ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह सहित कांग्रेस के कई नेता पार्टी के मौजूदा आर्थिक दृष्टिकोण से इत्तेफाक नहीं रखते। यह वही कांग्रेस है, जिसने तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह की अगुवाई में 1991 में आर्थिक सुधार लागू किए थे।

राहुल ने लोकसभा चुनाव को दो विचारधाराओं के बीच की लड़ाई बताया

भाषा। मांड्या (कर्नाटक)

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बुधवार को लोकसभा चुनाव को दो विचारधाराओं के बीच की लड़ाई करार दिया जिसमें एक तरफ इंडिया समूह संविधान के लिए लड़ रहा है वहीं दूसरी ओर भाजपा संविधान और लोकतंत्र को समाप्त करना चाहती है। राहुल गांधी ने चुनाव के लिए अपनी पार्टी के घोषणापत्र का जिक्र करते हुए कहा कि अगर इंडिया समूह सत्ता में आता है, तो यह आम नागरिकों, किसानों, मजदूरों और व्यापारियों की सरकार होगी। उन्होंने यहां एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा, यह दो विचारधाराओं के बीच की लड़ाई है। एक तरफ कांग्रेस और इंडिया समूह है जिसने संविधान के लिए लड़ाई लड़ी, देश को संविधान और लोकतंत्र दिया। दूसरी ओर भाजपा है, जो संविधान और लोकतंत्र को खत्म करना चाहती है और सभी संस्थानों में अपने लोगों को नियुक्त कर रही है।

राहुल गांधी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत सरकार 22 से 25 अमीर लोगों की है लेकिन कांग्रेस ऐसी सरकार देगी जो आम नागरिकों, किसानों, मजदूरों और व्यापारियों के लिए काम करेगी। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाया कि भाजपा नीत केंद्र सरकार हफ्ता बाजी चलाती है। इसके साथ ही उन्होंने अब खत्म हो चुकी चुनावी बॉण्ड योजना को दुनिया में अब तक का सबसे बड़ा जबरन वसूली घोटाला करार दिया।

राहुल गांधी ने लोगों से कहा कि वे चुनावी बॉण्ड पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का साक्षात्कार गूगल पर देखें कि उनके हाथ कैसे कांप रहे थे। उन्होंने कहा, आपने नरेन्द्र मोदी का इंटरव्यू देखा होगा। उस इंटरव्यू में उन्होंने चुनावी बॉण्ड के बारे में चर्चा की थी। यह एक घंटा लंबा साक्षात्कार था जहां उन्होंने चुनावी बॉण्ड पर स्पष्टीकरण देने की कोशिश की। गांधी ने कहा, सिर्फ एक काम करें। गूगल पर जाएं और उनका साक्षात्कार देखें, आप देखेंगे कि उनके हाथ कांप रहे हैं क्योंकि चुनावी बॉण्ड भारत में अब तक का सबसे बड़ा भ्रष्टाचार है।

उन्होंने आरोप लगाया, सड़क पर इसे जबरन वसूली और हफ्ता बाजी कहा जाता है। आमतौर पर छोटे-मोटे गुंडे ऐसे काम करते हैं। वे धमकाते हैं और पैसे वसूलते हैं। चुनावी बॉण्ड दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा जबरन वसूली घोटाला है। यही वजह है कि इसे स्पष्ट करते हुए प्रधानमंत्री के हाथ कांप रहे थे। एक महीने पहले चुनाव कार्यक्रम की घोषणा होने के बाद वह कांग्रेस शासित कर्नाटक की पहली यात्रा पर आए हैं। मांड्या क्षेत्र में कांग्रेस का मुकाबला जद (एस) से है जिसका भाजपा के साथ गठबंधन है। इस सीट पर जद (एस) के एचडी कुमारस्वामी और स्टार चंद्रू के नाम से मशहूर कांग्रेस नेता वेंकटरमण गौड़ा के बीच सीधा मुकाबला है।

कर्नाटक में लोकसभा की कुल 28 सीट हैं और 2019 के आम चुनाव में कांग्रेस को केवल एक सीट मिली थी। भाजपा को 25 सीट पर जीत मिली थीं, जबकि एक सीट पर भाजपा समर्थित स्वतंत्र उम्मीदवार विजई हुआ था। उस चुनाव में जद (एस) को एक सीट मिली थी और उसका कांग्रेस के साथ गठबंधन था। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने दावा किया है कि इस बार उनकी पार्टी कांग्रेस राज्य में 15 से 20 सीट पर कामयाब होगी। राहुल गांधी ने जद (एस) पर निशाना साधते हुए उसे भाजपा की सहयोगी बताया। उन्होंने कहा, मैंने विधानसभा चुनाव (2023) के दौरान आपसे कहा था कि यहां एक भाजपा है, जिसे बी टीम मिली है और आपने उस पर भरोसा किया और आज यह सबको पता है कि यह सिर्फ बी टीम नहीं बल्कि उसकी सहयोगी है जो 24 घंटे उसकी मदद करती है।

पूर्वोत्तर के राज्यों में पहले चरण का प्रचार थम गया

कोहिमा/गंगटोक/ईटानगर/अगरतला पूर्वोत्तर के राज्यों में लोकसभा चुनाव के पहले चरण के लिए बुधवार शाम को प्रचार थम गया। नगालैंड की एकमात्र लोकसभा सीट के लिए 19 अप्रैल को मतदान होगा। नगालैंड के मुख्य निर्वाचन अधिकारी व्यासन आर. ने एक अधिसूचना में कहा कि किसी भी व्यक्ति को बुधवार शाम चार बजे के बाद चुनाव के संबंध में कोई सार्वजनिक बैठक आयोजित करने, उसमें भाग लेने या जुलूस निकालने की अनुमति नहीं दी जाएगी। सिक्किम में 32 विधानसभा सीटों और एकमात्र लोकसभा क्षेत्र के लिए प्रचार अभियान बुधवार को समाप्त हो गया। सिक्किम विधानसभा और एकमात्र लोकसभा सीट के लिए चुनाव प्रचार शाम पांच बजे समाप्त हो गया। सिक्किम में चुनाव 19 अप्रैल को होंगे। त्रिपुरा पश्चिम लोकसभा क्षेत्र और रामनगर विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव के लिए प्रचार बुधवार शाम पांच बजे थम गया। निर्वाचन कार्यालय के एक अधिकारी ने बताया कि 19 अप्रैल को होने वाले मतदान के लिए सुरक्षा व्यवस्था समेत सभी तैयारियां कर ली गई हैं। असम में भी पांच लोकसभा सीटों पर पहले चरण के तहत होने वाले मतदान के लिए प्रचार अभियान समाप्त हो गया।

इस चरण में जिन पांच सीटों पर मतदान होना है उनमें डिब्रूगढ़, जोरहाट, काजीरंगा, सोनितपुर और लखीमपुर शामिल हैं। अरुणाचल प्रदेश में विधानसभा और लोकसभा चुनाव के लिए 19 अप्रैल को एक साथ होने वाले मतदान का प्रचार बुधवार शाम को समाप्त हो गया। अरुणाचल प्रदेश की दो लोकसभा सीटों और राज्य विधानसभा की 50 सीटों के लिए जोरदार प्रचार अभियान देखा गया है। मिजोरम की एकमात्र लोकसभा सीट के लिए चुनाव प्रचार बुधवार को समाप्त हो गया और राजनीतिक दल मतदाताओं को लुभाने के अंतिम समय तक प्रयास करते दिखे। निर्वाचन अधिकारियों ने कहा कि प्रचार अभियान के दौरान कानून-व्यवस्था की कोई बड़ी समस्या नहीं हुई।

पेज 1 का शेष

पांच सदी बाद...

ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रेरित करे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने टिप्पणी की, आज, अयोध्या दिव्य कृपा से चमक रही है। यह ऐतिहासिक क्षण सभी के लिए शांति, एकता और समृद्धि के युग की शुरुआत करे। जैसे ही वैदिक मंत्र हवा में गूंजने लगे और शहर इस खगोलीय घटना की सुनहरी चमक में डूब गया, दूर-दूर से आए भक्तों ने सपने के पूरा होने का आनंद लिया - श्रद्धेय भगवान राम को समर्पित एक मंदिर, जो उनके दिव्य जन्मस्थान पर खड़ा है। इस घटना का महत्व अयोध्या के निवासियों में गहराई से जुड़ा हुआ है, जो पांच शताब्दियों से अधिक समय से भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर के निर्माण का इंतजार कर रहे थे। अयोध्या की निवासी अंजलि वर्मा ने कहा, राम लला के माथे पर सूरज की रोशनी को देखना किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह हमारे विश्वास की पुष्टि करता है और भगवान राम के साथ हमारे संबंध को मजबूत करता है। पास के कनक भवन में अयोध्या की महिलाओं ने भगवान राम के जन्म के दिव्य क्षण का जश्न मनाते हुए मंगल गीत, सौहर गाए। उत्सव की शुरुआत बुधवार को ब्रह्म मुहूर्त के साथ सुबह 3.30 बजे मंगला आरती के साथ हुई। इसके बाद, अभिषेक, शृंगार और दर्शन जैसे अनुष्ठान निर्बाध रूप से आयोजित किए गए। सुबह पांच बजे श्रृंगार आरती हुई, उसके बाद दर्शन-पूजन हुआ। बड़ी भीड़ की तैयारी के लिए शयन आरती के बाद प्रसाद वितरण की व्यवस्था मंदिर के निकास द्वार पर सुविधाजनक स्थान पर की गई है। तीर्थयात्रियों को मंदिर परिसर में प्रवेश करने से पहले मोबाइल फोन, जूते और अन्य निषिद्ध वस्तुओं को सुरक्षित रूप से जमा करने की सलाह दी जाती है। चंपत राय ने आगे कहा कि अपेक्षित भीड़ के कारण सुगम दर्शन, वीआईपी दर्शन, मंगला आरती, शृंगार आरती और शयन आरती सहित विभिन्न सेवाओं के लिए पास 19 अप्रैल तक जारी नहीं किए जाएंगे।

पहले चरण...

इसे एक्ट ईस्ट नीति में बदल दिया है। गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनके कई कैबिनेट सहयोगियों, मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी जैसे कांग्रेस के नेताओं और अन्य दलों ने भी अपने उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने बुधवार को गाजियाबाद में एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया, जिसमें लोकसभा चुनाव में भाजपा की हार की भविष्यवाणी की गई। बदले में विपक्षी नेताओं ने चुनावी बांड, एजेंसियों के कथित दुरुपयोग, मुद्रास्फीति और बेरोजगारी सहित अन्य मुद्दों पर सरकार पर हमला किया है। भाजपा ने भ्रष्टाचार, वंशवाद की राजनीति और संविधान तथा हिंदू धर्म का अपमान करने को लेकर इंडिया गुट पर पूरी तरह से हमला बोल दिया है। आठ केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, किरेन रिजिजू, सर्बानंद सोनोवाल, संजीव बलियान, जीतेंद्र सिंह, भूपेन्द्र यादव, अर्जुन राम मेघवाल और एल मुरुगन, दो पूर्व मुख्यमंत्री - बिप्लब कुमार देब (त्रिपुरा) और नबाम तुकी (अरुणाचल प्रदेश), और पूर्व राज्यपाल तमिलिसाई सौंदर्यराजन (तेलंगाना) भी मैदान में हैं। चुनाव में जाने वाली कुछ हाई-प्रोफाइल सीटों में चेन्नई दक्षिण, कोयंबटूर, नागपुर, डिब्रूगढ़, जोरहाट, जमुई शामिल हैं। पहले चरण में 1625 उम्मीदवारों के बीच मुकाबला होगा। 2019 में, यूपीए ने इन 102 सीटों में से 45 और एनडीए ने 41 सीटें जीती थीं। इनमें से छह सीटों को परिसीमन अभ्यास के हिस्से के रूप में फिर से तैयार किया गया है। तमिलनाडु (39), उत्तराखंड (5), अरुणाचल प्रदेश (2), मेघालय (2), अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (1), मिजोरम (1), नागालैंड (1), पुडुचेरी (1), सिक्किम (1) और लक्षद्वीप (1)। इसके अलावा राजस्थान में 12, उत्तर प्रदेश में 8, मध्य प्रदेश में 6, असम और महाराष्ट्र में 5-5, बिहार में 4, पश्चिम बंगाल में 3, मणिपुर में 2 और त्रिपुरा में एक-एक सीट पर मतदान होगा। भाजपा के दक्षिण-पुश में तमिलनाडु भाजपा अध्यक्ष के अन्नामलाई की किस्मत का फैसला तमिलनाडु के कोयंबटूर की जनता करेगी। यहां उनका मुकाबला द्रमुक नेता और कोयंबटूर के पूर्व मेयर गणपति पी राजकुमार और अन्नाद्रमुक के सिंगाई रामचंद्रन से है। अन्नामलाई को मैदान में उतारने के भाजपा के फैसले ने द्रमुक को 10 साल बाद एक उम्मीदवार खड़ा करने के लिए प्रेरित किया, अन्यथा कपड़ा उद्योगों के समूह और केरल से इसकी निकटता के कारण इसे वामपंथी दलों के लिए छोड़ दिया जाता था। वास्तव में कपड़ा उद्योग ही वह चीज़ है जो कोयंबटूर को भाजपा के लिए एक उम्मीद बनाती है। यह सीट भाजपा के लिए इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राज्य में पार्टी की शुरुआती लोकसभा सीटों में से एक थी। केरल की पहाड़ी वायनाड सीट, जिसे कांग्रेस के राहुल गांधी के लिए एक सुरक्षित दांव के रूप में देखा जाता है, शायद उतनी सुरक्षित नहीं है। इस सीट पर उन्होंने 2019 के लोकसभा चुनाव में 4.3 लाख के अंतर से जीत हासिल की थी, इस बार उनका मुकाबला कम्युनिस्ट पार्टी की एनी राजा और भाजपा के केरल प्रमुख के सुरेंद्रन सहित अन्य से होगा। सक्रिय राजनीति में लौटने के लिए हाल ही में तेलंगाना के राज्यपाल और पुडुचेरी के उपराज्यपाल के पद से इस्तीफा देने वाली तमिलिसाई सौंदर्यराजन चेन्नई दक्षिण लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रही हैं। अनुभवी कांग्रेस नेता कुमारी अनंतन की बेटी, सुंदरराजन ने द्रमुक की कनिमोझी के खिलाफ 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन थूथुकुडी में भारी अंतर से हार गईं थी। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी नागपुर सीट से जीत की हैट्रिक लगाना चाह रहे हैं। 2014 में उन्होंने सात बार के सांसद विलास मुत्तेमवार को 2.84 लाख वोटों के अंतर से हराया था और 2019 में वर्तमान महाराष्ट्र कांग्रेस प्रमुख नाना पटोले को 2.16 लाख वोटों से हराकर सीट बरकरार रखी। केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू अरुणाचल पश्चिम सीट से चुनाव लड़ रहे हैं. 52 वर्षीय ने 2004 से तीन बार निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया है। रिजिजू के मुख्य प्रतिद्वंद्वी पूर्व मुख्यमंत्री और अरुणाचल प्रदेश कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष नबाम तुकी हैं। केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल असम के डिब्रूगढ़ से लोकसभा में वापसी की कोशिश कर रहे हैं। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री रामेश्वर तेली को टिकट नहीं दिए जाने के बाद राज्यसभा सदस्य सोनोवाल को डिब्रूगढ़ से मैदान में उतारा गया। जटिल जातीय समीकरणों के लिए मशहूर मुजफ्फरनगर में त्रिकोणीय चुनावी मुकाबला है, जहां केंद्रीय मंत्री संजीव बलियान समाजवादी पार्टी के हरेंद्र मलिक और बसपा उम्मीदवार दारा सिंह प्रजापति के खिलाफ प्रतिस्पर्धा में हैं।

बिहार में...

नालंदा जिले के हरनौत के पास कल्याण बिगहा के ग्रामीण प्रदीप महतो ने कहा, बिहार के मुख्यमंत्री के गांव के निवासियों ने भी उनके कई राजनीतिक उतार-चढ़ाव के कारण अपनी धरती के पुत्र के प्रति निराशा व्यक्त की। हमें इस बात पर बहुत गर्व था कि नीतीश ने लालू राज के वर्षों के कुशासन के बाद बिहार को वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन अब हम नीतीश की अपनी हरकतों से तंग आ चुके हैं। मुझे सिर्फ बॉलीवुड का गाना इस मोड़ से जाते हैं कुछ सुस्त कदम रस्ते कुछ तेज कदम रहें... याद है। बिहार आर्थिक सर्वेक्षण (2023-24) के अनुसार राज्य में 88 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण आबादी है और इसका 50 प्रतिशत कार्यबल कृषि में लगा हुआ है। 19 अप्रैल को पहले चरण का मतदान औरंगाबाद, गया, नवादा और जमुई में होगा, जबकि 26 अप्रैल को दूसरे चरण का मतदान किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया, भागलपुर और बांका में होगा। बिहार में 40 लोकसभा सीटें मानी जाती हैं। यह भारतीय राजनीति के लिए महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह कुल मिलाकर चौथा सबसे बड़ा राज्य है। जेडी (यू) 16 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, भाजपा 17 सीटों पर और उसके साथी राम विलास पासवान की एलजेपी पांच सीटों पर लड़ेगी और बिहार के पूर्व सीएम जीतन राम मांझी की एचएएम और आरएलपी प्रत्येक एक सीट पर चुनाव लड़ेगी। बिहार में सबसे बड़े गठबंधन के सदस्य राजद ने 26 सीटों पर दांव लगाया है, जबकि सीपीआई (एमएल) को तीन सीटें, सीपीआई और सीपीएम को एक-एक और कांग्रेस को नौ सीटें मिलेंगी। तीसरे चरण में 7 मई को झंझारपुर, सुपौल, अररिया, मधेपुरा और खगड़िया में मतदान होगा और चौथे चरण में 13 मई को दरभंगा, उजियारपुर, समस्तीपुर, बेगुसराय और मुंगेर में मतदान होगा। पांचवें चरण में 17 मई को सीतामढी, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सारण और हाजीपुर में मतदान होगा, छठे चरण में वाल्मिकी नगर, पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, वैशाली, गोपालगंज, सीवान और महाराजगंज में 25 मई को मतदान होगा। अंतिम चरण में 1 जून को नालंदा, पटना साहिब, पाटलिपुत्र, आरा, बक्सर, सासाराम, काराकाट और जहानाबाद में चुनाव होंगे।

कांग्रेस ने लूट ईस्ट नीति अपनाई थी, भाजपा ने उसे एक्ट ईस्ट नीति में बदला: प्रधानमंत्री

भाषा। अगरतला

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि विपक्षी पार्टी ने लूट ईस्ट नीति अपना रखी थी लेकिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने उसे एक्ट ईस्ट नीति में बदल दिया। प्रधानमंत्री ने यहां एक रैली को संबोधित करते हुए कहा कि त्रिपुरा ने भाजपा सरकार के शासन में अभूतपूर्व बदलाव देखे हैं। मोदी ने कहा, कांग्रेस ने लूट ईस्ट की नीति अपना रखी थी, वहीं भाजपा ने इसे एक्ट ईस्ट नीति में बदल दिया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने उत्तर पूर्व के साथ न्याय नहीं किया और क्षेत्र को भ्रष्टाचार का अड्डा बना दिया, वहीं कम्युनिस्टों ने राज्य की संभावनाओं को कम कर दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार क्षेत्र में विकास के लिए कड़ी मेहनत कर रही है।

मोदी ने कहा कि उनकी सरकार ने भारत में गरीबों के लिए तीन करोड़ नए आवास बनाने का फैसला किया है। उन्होंने कहा, त्रिपुरा के लोगों को इससे बहुत फायदा मिलने जा रहा है। उन्होंने कहा कि भगवान राम का जन्मोत्सव अयोध्या में उनके ही मंदिर में 500 साल के बाद मनाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, 500 साल के लंबे इंतजार के बाद रामलला अंततः तंबू की जगह एक भव्य मंदिर में विराजित हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार उत्तर-पूर्व में कनेक्टिविटी बढ़ाने पर ध्यान दे रही है। मोदी ने कहा कि राज्य में राजमार्गों के उन्नयन के लिए 3,000 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि रेलवे पटरियों पर विद्युतीकरण का काम तेजी से किया जा रहा है। उन्होंने कहा, पहले, राज्य में मोबाइल टॉवर ठीक से काम नहीं करते थे, लेकिन अब 5जी कनेक्टिविटी में सुधार के लिए काम किया जा रहा है। यह मोदी सरकार है जिसने मोबाइल बिल को कम करके लगभग 400-500 रुपए प्रति माह तक ला दिया है। अगर कांग्रेस सत्ता में होती तो, आपका मोबाइल बिल 4,000 रुपए से 5,000 रुपए रहता। कांग्रेस और माकपा पर निशाना साधते हुए मोदी ने कहा, जांच एजेंसियों के इस्तेमाल को लेकर आलोचना करने वाले कांग्रेस के युवराज अब भ्रष्टाचार के आरोप में केरल के मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। किसी भ्रष्ट व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। पिछले 10 साल की अपनी सरकार की उपलब्धियों को केवल ट्रेलर बताते हुए मोदी ने कहा कि अगर भाजपा तीसरी बार सत्ता में आती है तो बहुत सारे काम होंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि अगले पांच साल तक सभी वर्गों को बिना भेदभाव के मुफ्त राशन मिलता रहेगा।

एल्गार परिषद मामले की आरोपी शोमा सेन मुंबई जेल से बाहर आईं

मुंबई। एल्गार परिषद-माओवादी संबंध मामले की आरोपी एवं नागपुर विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफेसर शोमा सेन को बुधवार दोपहर यहां एक जेल से रिहा कर दिया गया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उच्चतम न्यायालय ने उन्हें 2018 के मामले में पांच अप्रैल को जमानत दे दी थी। वरिष्ठ जेल अधिकारी ने कहा कि सेन सभी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद मध्य मुंबई की भायखला जेल से बाहर आ गईं। जेल के बाहर उनकी बेटी और रिश्तेदारों ने उनका स्वागत किया। सेन 31 दिसंबर, 2017 को पुणे में आयोजित एल्गार परिषद सम्मेलन से संबंधित मामले में गिरफ्तार किए गए कार्यकर्ताओं और शिक्षाविदों सहित 16 लोगों में से एक थीं। पुणे पुलिस ने आरोप लगाया था कि सम्मेलन को माओवादियों का समर्थन प्राप्त था और वहां भड़काऊ भाषण दिए गए थे, जिसके अगले दिन पुणे जिले में भीमा कोरेगांव युद्ध स्मारक के पास जातीय हिंसा भड़क उठी थी।

मोदी सरकार बहुत कम समय में नक्सलियों का सफाया कर देगी: गृह मंत्री शाह

अहमदाबाद। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को कहा कि नरेन्द्र मोदी सरकार बहुत कम समय में देश से नक्सलियों का पूरी तरह से सफाया कर देगी। छत्तीसगढ़ में सुरक्षा बलों द्वारा 29 माओवादियों को मार गिराने के एक दिन बाद उन्होंने एक बयान में कहा कि केंद्र सरकार आतंकवाद और नक्सलियों के खिलाफ लगातार अभियान चला रही है। शाह ने कहा, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि आने वाले समय में भी नक्सलियों के खिलाफ अभियान जारी रहेंगे और मोदी के नेतृत्व में हम बहुत कम समय में अपने देश से नक्सलवाद का सफाया कर देंगे।

गृह मंत्री ने कहा कि तीन महीने पहले छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बनने के बाद से 80 से अधिक नक्सलियों को मारा जा चुका है, 125 से अधिक को गिरफ्तार किया गया है और 150 से अधिक ने आत्मसमर्पण किया है। उन्होंने कहा कि 2014 के बाद से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों के शिविर स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि 2019 के बाद से, 250 से अधिक ऐसे शिविर स्थापित किए गए हैं। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित कांकेर जिले में मंगलवार को सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में 29 नक्सली मारे गए थे। अधिकारियों ने बताया कि भीषण गोलीबारी में तीन सुरक्षाकर्मी भी घायल हो गए थे और मौके से बड़ी मात्रा में हथियार जब्त किए गए थे।

अमित शाह ने मप्र के छिंदवाड़ा में राम मंदिर में पूजा की

छिंदवाड़ा (मप्र)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार सुबह मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा शहर में राम मंदिर में पूजा-अर्चना की। मंगलवार शाम को रोड शो करने के बाद वह रात भर छिंदवाड़ा में रुके थे। शाह ने अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर एक ट्वीट में कहा, राम नवमी के शुभ अवसर पर, मैंने छिंदवाड़ा में श्री राम मंदिर का दौरा किया और देश की निरंतर प्रगति और देशवासियों के कल्याण के लिए प्रार्थना की। प्रदेश भाजपा प्रवक्ता अजय धावले ने पीटीआई-भाषा को बताया कि केंद्रीय मंत्री शाह ने राम मंदिर के दर्शन से पहले बुधवार सुबह पार्टी के प्रमुख नेताओं से मुलाकात की। उन्होंने बताया कि पूजा-अर्चना के बाद शाह हेलिकॉप्टर से नागपुर के लिए रवाना हो गए। शाह ने मंगलवार को छिंदवाड़ा शहर में भाजपा उम्मीदवार विवेक बंटी साहू के समर्थन में रोड शो किया था, जिनका मुकाबला कांग्रेस के दिग्गज नेता कमल नाथ के बेटे और मौजूदा सांसद नकुल नाथ से है। छिंदवाड़ा संसदीय क्षेत्र में आम चुनाव के पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान है।

भाजपा का ममता पर रामनवमी का अपमान करने का आरोप, राहुल व अखिलेश पर हमला

नई दिल्ली। भाजपा ने बुधवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर रामनवमी उत्सव को वैमनस्यता से जोड़ने का आरोप लगाया और दावा किया कि उनकी टिप्पणियां देश की संस्कृति के प्रति इंडिया गठबंधन के नेताओं की अपमानजनक मानसिकता को दर्शाती हैं। रामनवमी पर लोगों को शुभकामनाएं देते हुए बनर्जी ने एक्स पर एक पोस्ट में शांति बनाए रखने, समृद्धि और विकास की अपील की। उनके पोस्ट पर भाजपा प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि शांति बनाए रखने की उनकी अपील का मतलब है कि वह त्योहार को अशांति या वैमनस्यता से जोड़कर देखती हैं।

भाजपा सांसद ने संवाददाताओं से कहा, यह पूरी तरह से रामनवमी के त्योहार का अपमान है। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी (सपा) के नेता अखिलेश यादव द्वारा संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में किए गए इस दावे को लेकर भी कटाक्ष किया कि लोकसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन उत्तर प्रदेश में जीत हासिल करेगा।

यादव ने कहा था कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश से परिवर्तन की बयार बह रही है और इंडिया गठबंधन गाजियाबाद से गाजीपुर तक प्रचंड जीत दर्ज करेगा। दोनों विपक्षी नेताओं में खुद उप्र से अपनी उम्मीदवारी की घोषणा करने का साहस नहीं है, लेकिन वे दूसरों को आश्वासन दे रहे हैं। हर कोई जानता है कि आएगा तो मोदी ही। त्रिवेदी ने कहा कि जहां राहुल गांधी ने 2019 में अमेठी से चुनाव हारने के बाद उत्तर प्रदेश छोड़ दिया, वहीं उनकी मां एवं रायबरेली से लोकसभा सदस्य रहीं सोनिया गांधी राज्यसभा चली गई हैं। राहुल गांधी 2019 में केरल के वायनाड से जीते थे और फिर से वहीं से चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा प्रवक्ता ने चुनावी बॉण्ड योजना को घोटाला बताने पर विपक्षी नेताओं की आलोचना की और कहा कि कांग्रेस तथा तृणमूल कांग्रेस ने इन बॉण्ड के माध्यम से सैकड़ों करोड़ रुपए एकत्र किए।

भारत की अनुमानित जनसंख्या 144 करोड़ 0-14 साल की आबादी 24 प्रतिशत

यूएनएफपीए रिपोर्ट

भाषा। नई दिल्ली

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत की अनुमानित जनसंख्या 144 करोड़ हो चुकी है, जिसमें 24 प्रतिशत लोग 0 से 14 साल के उम्र के हैं। यूएनएफपीए की विश्व जनसंख्या 2024 रिपोर्ट -इंटरवॉवन लाइव्स, थ्रेड्स ऑफ होप: एंडिंग इनइक्वैलिटीज इन सैक्सुअल एंड रिप्रॉडक्टिव हेल्थ एंड राइटे में अनुमान लगाया गया है कि भारत की जनसंख्या 77 वर्षों में दोगुनी हो जाएगी। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत 144.17 करोड़ की अनुमानित जनसंख्या के साथ विश्व स्तर पर सबसे आगे है, जबकि चीन को दूसरा स्थान प्राप्त है। वहां 142.5 करोड़ की आबादी है। भारत में साल 2011 में की गई जनगणना के दौरान यहां 121 करोड़ आबादी थी।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि भारत की करीब 24 प्रतिशत आबादी 0-14 वर्ष की हैं, जबकि 17 प्रतिशत 10-19 वर्ष के भीतर है। रिपोर्ट में अनुमान जताया गया है कि 10-24 साल के 26 प्रतिशत लोग हैं जबकि 68 फीसदी 15-64 आयु वर्ग के हैं। भारत की सात प्रतिशत आबादी 65 वर्ष या उससे अधिक आयु की है, जिसमें पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 71 वर्ष और महिलाओं की 74 वर्ष है।

रिपोर्ट में पाया गया कि यौन और प्रजनन स्वास्थ्य में 30 वर्षों की प्रगति ने दुनिया भर में सबसे वंचित समुदायों को नजरअंदाज किया है। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में साल 2006-2023 के बीच 23 प्रतिशत लोगों का बाल विवाह कराया गया था। रिपोर्ट में बताया गया कि भारत में मातृ मृत्यु में काफी गिरावट आई है, जो दुनिया भर में होने वाली ऐसी सभी मौतों का 8 प्रतिशत रह गया है।

रिपोर्ट में कहा गया, भारत की सफलता का श्रेय अक्सर किफायती, गुणवत्तापूर्ण मातृ स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच के साथ-साथ स्वास्थ्य परिणामों पर लैंगिक भेदभाव के प्रभाव को दूर करने के प्रयासों को दिया जाता है।

यूएनएफपीए ने पीएलओएस ग्लोबल पब्लिक हेल्थ द्वारा भारत में जिला-स्तरीय मातृ मृत्यु अनुपात के संबंध में एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि भारत के 640 जिलों में हाल ही में किए गए शोध से पता चला है कि लगभग एक तिहाई जिलों ने मातृ मृत्यु दर को कम करने का सतत विकास लक्ष्य हासिल किया है, जिसमें प्रति 100,000 जीवित जन्म पर मातृ मृत्यु दर 70 से कम है, लेकिन 114 जिलों में अभी भी यह अनुपात 210 या उससे अधिक है।

अहमदाबाद-वडोदरा एक्सप्रेसवे पर कार ने ट्रक में टक्कर मारी, 10 लोगों की मौत

नाडियाड (गुजरात)। गुजरात के खेडा जिले में नाडियाड कस्बे के समीप अहदाबाद-वडोदरा एक्सप्रेस वे पर बुधवार को एक तेज रफ्तार कार की ट्रक से टक्कर हो गई, जिसमें कार सवार 10 लोगों की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने यह जानकारी दी। नाडियाड देहात थाने के निरीक्षक किरीट चौधरी ने बताया, कार वडोदरा से अहमदाबाद की ओर जा रही थी कि तभी एक्सप्रेस वे पर वाहन ट्रक के पिछले हिस्से से जा टकराया। आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दो घायलों को एक एम्बुलेंस में पास के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। नाडियाड से विधायक पंकज देसाई ने कहा कि ऐसी संभावना हो सकती है कि कुछ तकनीकी गड़बड़ी के कारण ट्रक को एक्सप्रेसवे की बाईं ओर रोका गया हो और कार चालक को ब्रेक लगाने के लिए पर्याप्त वक्त नहीं मिला, जिसकी वजह से हादसा हो गया।

क्विक न्यूज

किसी भारतीय के चंद्रमा पर उतरने तक इसरो का चंद्र मिशन जारी रहेगा : एस. सोमनाथ

अहमदाबाद। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने बुधवार को कहा कि अंतरिक्ष निकाय अपनी चंद्रयान श्रृंखला तब तक जारी रखेगा जब तक देश का कोई अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर नहीं उतर जाता। अंतरिक्ष एजेंसी के चंद्रयान-3 अंतरिक्ष यान ने पिछले साल अगस्त में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग की और इसके साथ ही भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला पहला देश बन गया। सोमनाथ ने यहां एक कार्यक्रम से इतर संवाददाताओं से कहा, चंद्रयान-3 ने बहुत अच्छा काम किया है। आंकड़े एकत्र कर लिए गए हैं और वैज्ञानिक प्रकाशन अभी शुरू हुआ है। अब, हम चंद्रयान श्रृंखला को तब तक जारी रखना चाहते हैं जब तक कि कोई भारतीय चंद्रमा पर नही उतर जाता। उससे पहले हमें कई तकनीकों में विशेषज्ञता हासिल करनी होगी, जैसे वहां जाना और वापस आना। हम अगले मिशन में ऐसा करने की कोशिश कर रहे हैं। वह एस्ट्रोनॉटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर अहमदाबाद आए थे। सोमनाथ ने देश के पहले मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन - गगनयान के बारे में कहा कि इसरो इस साल एक मानवरहित मिशन, एक परीक्षण यान मिशन और एक एयरड्रॉप परीक्षण करेगा। उन्होंने कहा, एयरड्रॉप परीक्षण 24 अप्रैल को होगा। अगले साल दो मानव रहित मिशन होंगे और अगर सब कुछ ठीक रहा, तो अगले साल के अंत तक मानव मिशन होगा।

थलसेना प्रमुख जनरल पांडे ने उज्बेक सशस्त्र बल अकादमी में अत्याधुनिक आईटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। थलसेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने बुधवार को उज्बेकिस्तान की अपनी यात्रा के दौरान उज्बेक सशस्त्र बल अकादमी में एक अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। भारतीय सेना के सूत्रों ने कहा कि सितंबर 2018 में रक्षामंत्रियों की बैठक के दौरान की गई प्रतिबद्धता के बाद यह घटनाक्रम दोनो देशो के बीच रक्षा सहयोग में मील का एक पत्थर है। जनरल पांडे द्विपक्षीय सैन्य सहयोग के नए रास्ते तलाशने के लिए 15 से 18 अप्रैल तक उज्बेकिस्तान की यात्रा पर हैं। रक्षा मंत्रालय ने पूर्व में एक बयान में कहा था कि जनरल पांडे का कई रक्षा प्रतिष्ठानों का दौरा करने के अलावा मध्य एशियाई राष्ट्र के शीर्ष सैन्य अधिकारियों के साथ व्यापक बातचीत करने का कार्यक्रम है। सूत्रों ने कहा कि भारत और उज्बेकिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के तहत जनरल पांडे ने उज्बेक सशस्त्र बल अकादमी में अत्याधुनिक आईटी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि प्रयोगशाला अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित है, जिसमे दो व्याख्यान कक्ष, एक अत्याधुनिक साइबर सुरक्षा प्रयोगशाला, एक हार्डवेयर प्रोग्रामिंग प्रयोगशाला और एक मल्टीमीडिया कक्ष सहित कई सुविधाएं हैं। रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को सेना प्रमुख की उज्बेकिस्तान यात्रा को दोनो देशो के बीच रक्षा सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदमै बताया था।

मोदी लहर है, मोदी लहर रहेगी : नवनीत राणा

अमरावती (महाराष्ट्र)। महाराष्ट्र के अमरावती लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उम्मीदवार नवनीत राणा ने बुधवार को कहा कि देश में मोदी लहर है। नवनीत ने एक रैली में की गई उनकी टिप्पणी को तोड़-मरोड़कर पेश करने के लिए विपक्षी दलों को जिम्मेदार ठहराया। भाजपा उम्मीदवार ने रैली के दौरान कुछ ऐसा कहा था, जिससे प्रतीत हो रहा था कि वह मोदी लहर की मौजूदगी को लेकर सवाल उठा रही है।

नवनीत ने कहा, मोदी लहर है और मोदी लहर रहेगी। देश की प्रगति के लिए मोदी की जरूरत है। उन्होंने कहा, विपक्षी दलो ने मेरे भाषण के वीडियो के साथ काट-छांट करने की कोशिश की और मेरी प्रतिक्रिया के साथ छेड़-छाड़ की। शरद पवार नीत राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी और शिवसेना-उद्धव बाला साहेब ठाकरे (शिवसेना यूबीटी) ने एक दिन पहले नवनीत के बयान पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि वह सच बोल रही है। नवनीत ने सोमवार को अमरावती में एक रैली को संबोधित करते हुए कहा था, हमें इस चुनाव में ऐसे लड़ना होगा जैसे हम ग्राम पंचायत का चुनाव लड़ रहे हो। हमें सभी मतदाताओं को दोपहर 12 बजे तक मतदान बूथ पर लाना होगा और उनसे वोट करने के लिए कहना होगा। उन्होंने कहा था, अगर कोई यह सोचता हो कि मोदी लहर है तो याद रखिए कि 2019 लोकसभा चुनाव में मैं इतने विशाल (सत्तारूढ़ दल) तंत्र के बावजूद निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में निर्वाचित हुई थी।

यादवपुर विवि ने परिसर में रामनवमी उत्सव की अनुमति वापस ली

कोलकाता। यादवपुर विवि ने परिसर में रामनवमी उत्सव मनाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) को दी गई अनुमति वाम समर्थित छात्र संगठनों के विरोध के बीच बुधवार को वापस ले ली। सूत्रों ने बताया कि विश्वविद्यालय ने गेट नंबर 3 के पास पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न दो बजे तक रामनवमी मनाने की अनुमति दी गई थी। रजिस्ट्रार स्नेहामंजू बसु ने एक नोटिस में कहा कि छात्रों के विभिन्न समूहों से लिखित शिकायतें मिलीं कि इस तरह के कार्यक्रम से परिसर में शांति और सद्भाव में व्यवधान हो सकता है। नोटिस में कहा गया कि इसे देखते हुए उत्सव मनाने संबंधी अनुमति वापस ली जा रही है। इसमें उच्च शिक्षा विभाग के एक पत्र का भी हवाला दिया गया जिसमें लोकसभा चुनाव के मद्देनजर लागू आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) का उल्लेख किया गया।

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों ने भाजपा कार्यकर्ता की हत्या की

नारायणपुर। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित नारायणपुर जिले में नक्सलियों ने सत्ताधारी भाजपा के एक कार्यकर्ता की हत्या कर दी। पुलिस अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। पिछले एक साल में राज्य के माओवाद प्रभावित इलाकों में नक्सलियों द्वारा किसी भाजपा नेता या सदस्य की यह नौवीं हत्या है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि फरसगांव थाना क्षेत्र के दंडवन गांव में मंगलवार देर रात गांव के उपसरपंच पंचमदास की हत्या कर दी गई। कुछ नक्सली गांव पहुंचे और उन्होंने उपसरपंच पंचमदास की हत्या कर दी।

इस घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस दल को मौके पर भेजा गया और शव को पोस्टमार्टम के लिए ले जाया गया। उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों ने हमलावर नक्सलियों का पता लगाने के लिए इलाके में तलाशी अभियान शुरू किया है। नारायणपुर जिला बस्तर लोकसभा क्षेत्र में आता है जहां 19 अप्रैल को मतदान होगा।

नारायणपुर शहर में संवाददाताओं से बात करते हुए राज्य के वन मंत्री केदार कश्यप ने इस घटना की निंदा की और कहा कि इसकी जांच की जाएगी। पिछले एक साल में भाजपा नेताओं की (नक्सलियों द्वारा) हत्याएं बताती हैं कि कांग्रेस और नक्सलियों ने सांठगांठ करके इन घटनाओं को अंजाम दिया है। घटना (दंडवन हत्याकांड) की जांच की जाएगी और जो भी दोषी पाए जाएंगे, उनके खिलाफ कड़ी कार्वाई की जाएगी। इस वर्ष छह मार्च को पड़ोसी बीजापुर जिले में नक्सलियों ने एक भाजपा नेता की हत्या कर दी थी। इससे पहले एक मार्च को तोयनार गांव (बीजापुर जिला) में पार्टी के अन्य नेता की भी नक्सलियों ने तब हत्या कर दी थी जब वह वहां एक शादी में शामिल होने गए थे। पिछले साल नवंबर में विधानसभा चुनाव से पहले, भाजपा की नारायणपुर जिला इकाई के उपाध्यक्ष रतन दुबे की चुनाव प्रचार के दौरान हत्या कर दी गई थी।

भारत जनसांख्यिकीय लाभांश का फायदा नहीं उठा रहा है: रघुराम राजन

वाशिंगटन। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने मंगलवार को कहा कि भारत जनसांख्यिकीय लाभांश का फायदा नहीं उठा रहा है। जनसांख्यिकीय लाभांश से तात्पर्य कार्यबल अधिक होने और आश्रितों की संख्या कम होने से उत्पादकता बढ़ने और इसी क्रम में तेज आर्थिक वृद्धि से है। राजन ने इस बात पर जोर दिया कि मानव पूंजी में सुधार और उनके कौशल को बढ़ाने पर ध्यान देने की जरूरत है। राजन ने यहां जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय में 2047 तक भारत को एक उन्नत अर्थव्यवस्था बनाना: इसके लिए क्या करना होगा विषय पर चर्चा में कहा, मुझे लगता है कि हम इसके (जनसांख्यिकीय लाभांश) बीच में हैं, लेकिन समस्या यह है कि हम इसका फायदा नहीं उठा रहे हैं।

उन्होंने कहा, इसलिए मैंने कहा.. छह प्रतिशत वृद्धि। यदि आप सोचते हैं कि अभी हम इसी स्थिति में हैं, तो सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों से गड़बड़ी को दूर कर लें। वह छह प्रतिशत जनसांख्यिकीय लाभांश में ही है। यह उससे काफी कम है जहां चीन तथा कोरिया तब थे जब उन्होंने अपना जनसांख्यिकीय लाभांश का फायदा हासिल किया था। राजन भारत द्वारा चिप निर्माण पर अरबों डॉलर खर्च करने के आलोचक रहे हैं। उन्होंने कहा, इन चिप कारखानों के बारे में सोचें। चिप निर्माण पर इतने अरबों डॉलर की सब्सिडी दी जाएगी। उन्होंने कहा, जबकि चमड़ा जैसे रोजगार प्रधान कई क्षेत्र अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं।

राजन ने कहा, हम उन क्षेत्रों में नीचे जा रहे हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमारे पास नौकरियों की कमी की समस्या है। यह पिछले 10 साल में उत्पन्न नहीं हुई बल्कि पिछले कुछ दशकों से बढ़ रही है। हालांकि अगर आप उन क्षेत्रों की उपेक्षा करते हैं जिन्हें बढ़ाया जा सकता है.... मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमें अब चमड़ा क्षेत्र पर सब्सिडी देने की जरूरत है, लेकिन यह पता लगाएं कि वहां क्या गलत हो रहा है और उसे सुधारने का प्रयास करें।

एक सवाल के जवाब में राजन ने कहा कि बहुत सारे भारतीय नवप्रवर्तक अब सिंगापुर या सिलिकॉन वैली का रुख कर रहे हैं क्योंकि उन्हें वहां अंतिम बाजारों तक पहुंच बहुत आसान लगती है। इस बीच कार्यक्रम में मौजूद सेलेस्टा कैपिटल के प्रबंधक साझेदार अरुण कुमार ने कहा, भारत को वैश्वीकरण का फायदा मिल रहा है। इसकी आर्थिक समृद्धि भारत में और भारत से व्यापार तथा निवेश बढ़ाने में इसकी वैश्विक परस्पर निर्भरता से प्रेरित होगी, जिससे रोजगार सृजन, सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि तथा समृद्धि में मदद मिलेगी। आज वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की स्थिति विनिर्माण में बढ़ती भागीदारी के लिए भारत के पक्ष में काम करती है। उन्होंने कहा, वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में अधिक भागीदारी की सुविधा के लिए व्यापार सुगमता, व्यापार सुविधा में आसानी, आधुनिक बुनियादी ढांचे तथा संबंधित लॉजिस्टिक्स के निर्माण पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है।

झामुमो नेता ने पीएम के खिलाफ गलत बयान के लिए माफी मांगी

भाषा। रांची

झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के वरिष्ठ नेता नजरुल इस्लाम ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ अपमानजनक बयान देने को लेकर बुधवार को माफी मांग ली और कहा कि उनकी टिप्पणी का उद्देश्य किसी को ठेस पहुंचाना नहीं था। उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब एक दिन पहले ही भाजपा की झारखंड इकाई ने प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करने को लेकर नजरुल इस्लाम को गिरफ्तार किए जाने की मांग की थी। इस्लाम को एक वीडियो में यह कहते हुए सुना जा सकता है कि चुनाव में 400 सीट जीतने के बजाय प्रधानमंत्री 400 फुट नीचे दफनाए जाएंगे।

झामुमो नेता ने एक वीडियो बयान में कहा, एक राजनीतिक भाषण के दौरान मैं प्रधानमंत्री के 400 सीट जीतने के दावे के खिलाफ बोल रहा था। मेरे कहने का मतलब यह था कि उन्हें (भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को) 400 सीट नहीं मिलेंगी और वे सत्ता से बाहर हो जाएंगे।

उन्होंने कहा, मैं एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति और प्रोफेसर हूं। मैं प्रधानमंत्री के खिलाफ ऐसे शब्द नहीं बोल सकता। लेकिन, अगर किसी कारण से मेरी बातों से किसी को ठेस पहुंची हो तो मैं दिल से माफी मांगता हूं। इस्लाम ने रविवार को साहिबगंज में एक जनसभा में प्रधानमंत्री के खिलाफ यह टिप्पणी की थी। भाजपा की साहिबगंज इकाई ने बुधवार को इस्लाम के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। झामुमो ने कहा कि पार्टी किसी नेता की ऐसी टिप्पणी का समर्थन नहीं करती।

संप्रग सरकार की तुलना में भाजपा शासन के दौरान ईडी की तलाशी, जब्ती, दोषसिद्धि में तेज वृद्धि हुई

नई दिल्ली। धन शोधन रोधी कानून के तहत प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी के मामलों में 2014 से पहले के नौ वर्षों की तुलना में पिछले 10 साल में 86 गुना वृद्धि हुई है। पिछली समान अवधि की तुलना में गिरफ्तारी और संपत्तियों की जब्ती लगभग 25 गुना बढ़ गई है। आधिकारिक आंकड़ों से यह जानकारी मिली। जुलाई 2005 से मार्च 2014 तक के नौ वर्षों के मुकाबले अप्रैल 2014 से मार्च 2024 के 10 वर्षों के आंकड़ों का पीटीआई-भाषा द्वारा विश्लेषण किया गया। यह विश्लेषण धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) की विभिन्न धाराओं के तहत संघीय एजेंसी की कार्वाई में तेजी की एक तस्वीर प्रस्तुत करता है। पीएमएलए को 2002 में लाया गया था और कर चोरी, काले धन की उत्पत्ति और धन शोधन के गंभीर अपराधों की जांच के लिए एक जुलाई 2005 से लागू किया गया था।

विपक्षी दलों का आरोप है कि पिछले दशक के दौरान ईडी की कार्वाई भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की अपने प्रतिद्वंद्वियों और अन्य के खिलाफ दमनकारी रणनीति का हिस्सा है। वहीं, केंद्र सरकार और सत्तारूढ़ दल ने कहा है कि ईडी स्वतंत्र है, इसकी जांच तथ्यों पर आधारित है और उसे भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्वाई करने का अधिकार प्राप्त है। आंकड़ों से पता चलता है कि ईडी ने पिछले 10 वर्षों के दौरान पीएमएलए के 5,155 मामले दर्ज किए, जबकि पिछली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के कार्यकाल (2005-14) के दौरान कुल ।,797 शिकायतें या प्रवर्तन मामले की सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर या एफआईआर) दर्ज की गईं। इस तरह दोनों अवधि की तुलना करने पर पता चलता है कि मामलों में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई है। आंकड़ों से पता चलता है कि पहली बार 2014 के वित्तीय वर्ष में पीएमएलए के तहत किसी को दोषी ठहराया गया और अब तक 63 लोगों को धन शोधन रोधी कानून के तहत दंडित किया गया है।

ईडी ने 2014-2024 की अवधि के दौरान देश भर में धन शोधन मामलों में 7,264 छापे मारे, जबकि इससे पिछली अवधि में यह आंकड़ा केवल 84 था। इस तरह छापेमारी के मामलों में 86 गुना वृद्धि हुई। आंकड़ों में कहा गया है कि पिछले दशक के दौरान कुल 755 लोगों को गिरफ्तार किया गया और ।,21,618 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की गई, जबकि पूर्व की तुलनात्मक अवधि के दौरान क्रमशः 29 गिरफ्तारियां और 5,086.43 करोड़ रुपए की संपत्ति जब्त की गई थी। गिरफ्तारियां 26 गुना ज्यादा हुई हैं, जबकि संपत्तियों की जब्ती से जुड़े आंकड़े 24 गुना ज्यादा हैं। ईडी ने पिछले दशक के दौरान विभिन्न प्रकार की अचल और चल संपत्तियों के लिए ।,971 अनंतिम कुर्की आदेश जारी किए, जबकि पिछली तुलनात्मक अवधि में ऐसे 311 आदेश जारी किए गए थे।

पीएमएलए के निर्णायक प्राधिकरण से 2014-24 के दौरान लगभग 84 प्रतिशत कुर्की आदेशों की पुष्टि हुई, जबकि पिछली तुलनात्मक अवधि के दौरान उसी प्राधिकरण से 68 प्रतिशत मामलों को मंजूरी दी गई। पिछले दशक में अदालतों के समक्ष ।,281 अभियोजन शिकायतें दर्ज की गईं, जबकि संप्रग सरकार की अवधि के दौरान यह संख्या 102 थी। इस तरह आरोप पत्र दाखिल करने की संख्या में 12 गुना वृद्धि हुई। आंकड़ों से पता चलता है कि ईडी ने विभिन्न अदालतों से 36 मामलों में दोषसिद्धि के आदेश प्राप्त किए, जिससे 63 व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा चलाया गया और पिछले दशक के दौरान कुल 73 आरोप पत्रों का निपटारा किया गया।

आंकड़ों के मुताबिक, 2005-14 की अवधि के दौरान किसी भी आरोपी को दोषी करार नहीं दिया गया और न ही धन शोधन रोधी कानून के तहत किसी आरोप पत्र का निपटारा हो पाया। एजेंसी को 15,710.96 करोड़ रुपए की संपत्ति को (पीएमएलए के तहत अपराध की आय के रूप में) जब्त करने की अदालत की अनुमति भी मिल गई और इसने 16,404.19 करोड़ रुपए (जब्ती के तहत कुल राशि में से) की संपत्ति (बैंक फंड सहित) को भी बहाल कर दिया। ईडी को पीएमएलए के तहत नकदी जब्त करने का भी अधिकार है और आंकड़ों से पता चलता है कि एजेंसी ने पिछले 10 वर्षों के दौरान 2,310 करोड़ रुपए से अधिक की भारतीय और विदेशी मुद्रा जब्त की है, जबकि उससे पिछली अवधि के दौरान यह आंकड़ा 43 लाख रुपए था। ईडी ने भारत से भागकर विदेशों में छिपने वाले विभिन्न आरोपियों की धरपकड़ के लिए कुल 24 इंटरपोल रेड नोटिस भी अधिसूचित किए और 2014-24 के दौरान 43 प्रत्यर्पण अनुरोध भेजे। पिछली अवधि के दौरान एजेंसी द्वारा ऐसी कोई कार्वाई नहीं की गई थी।

पिछले दस साल में चार लोगों को भारत प्रत्यर्पित किया गया, जबकि कारोबारी विजय माल्या, नीरव मोदी और संजय भंडारी के खिलाफ भी इसी तरह के आदेश प्राप्त किए गए। तीनों ब्रिटेन में हैं और ईडी उन्हें देश वापस लाने की कोशिश कर रही है क्योंकि सभी आरोपी अपने खिलाफ जारी आदेशों को चुनौती दे रहे हैं।

एजेंसी के एक अधिकारी ने कहा, ए आंकड़े धन शोधन अपराधों की जांच के लिए ईडी द्वारा चलाए गए गहन अभियान को दर्शाते हैं। प्रवर्तन निदेशालय विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के दीवानी प्रावधानों के अलावा दो आपराधिक कानूनों-धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) और भगोड़े आर्थिक अपराधी अधिनियम (एफईओए) के तहत वित्तीय अपराधों की जांच करता है। एफईओए को 2018 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा उन लोगों को कानून के दायरे में लाने के लिए लागू किया गया था जिन पर गंभीर आर्थिक धोखाधड़ी का आरोप है और वे कानून से बचने के लिए देश से फरार हैं। आंकड़ों के अनुसार, ईडी ने देश में निर्दिष्ट विशेष पीएमएलए अदालतों के समक्ष ऐसी कुल 19 अर्जी दायर की, जिसके बाद 12 लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया है। ईडी ने 31 मार्च को पिछले वित्तीय वर्ष के अंत तक उक्त कानून के तहत 906 करोड़ रुपए की संपत्ति भी जब्त की है।

यूक्रेन के चेर्निहाइव में रूसी मिसाइल हमले में 17 लोगों की मौत

एपी। कीव

रूस की तरफ से दागी गई तीन मिसाइल बुधवार को उत्तरी यूक्रेन के चेर्निहाइव में आठ मंजिला इमारत पर गिरीं जिसमें 17 लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

यूक्रेन की आपातकालीन सेवा ने बताया कि हमले में दो बच्चों सहित कम से कम 61 लोग घायल हो गए। चेर्निहाइव राजधानी कीव से लगभग 150 किलोमीटर उत्तर में, रूस और बेलारूस की सीमा के पास स्थित है और इसकी आबादी लगभग 2,50,000 है। पश्चिमी देशों द्वारा यूक्रेन को अतिरिक्त सैन्य साजो सामान मुहैया नहीं कराए जाने से रूस के खिलाफ युद्ध में उसकी स्थिति कमजोर पड़ती जा रही है। युद्ध के तीसरे वर्ष में प्रवेश करने के साथ रूस यूक्रेन में लगातार बढ़त बना रहा है। हालांकि, सर्दियों के महीनों के दौरान, रूस युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर कोई प्रगति नहीं कर पाया।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने पश्चिमी देशों से उनके देश को और अधिक वायु रक्षा प्रणालियां प्रदान करने का अनुरोध किया है। उन्होंने चेर्निहाइव हमले के बारे में कहा कि अगर यूक्रेन को पर्याप्त वायु रक्षा उपकरण मिले होते और रूसी आतंक का मुकाबला करने के लिए दुनिया का दृढ़ संकल्प होता, तो ऐसा नहीं होता।

जेलेंस्की ने इस सप्ताह की शुरुआत में प्रसारित एक साक्षात्कार में पीबीएस को बताया था कि मिसाइल और ड्रोन हमले से बचाव करते हुए यूक्रेन के पास वायु रक्षा मिसाइलें खत्म हो गई हैं। हाल में रूस ने हमले में यूक्रेन के सबसे बड़े बिजली संयंत्रों में से एक को नष्ट कर दिया था।

यूक्रेन के लिए एक विषम तथ्य वाशिंगटन में उस सहायता पैकेज की मंजूरी का रुकना है जिसमें यूक्रेन के लिए लगभग 60 अरब अमेरिकी डॉलर शामिल हैं। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के स्पीकर माइक जॉनसन ने रविवार को कहा कि वह इस सप्ताह पैकेज को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे। वाशिंगटन स्थित थिंक टैंक इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ वॉर (आईएसडब्ल्यू) के अनुसार, यूक्रेन में सैन्य साजो-सामान की तेजी से किल्लत हो रही है।

आईएसडब्ल्यू ने मंगलवार को एक रिपोर्ट में कहा कि यूक्रेन को अमेरिकी सैन्य सहायता के प्रावधान में देरी के कारण रूस तेजी से बढ़त बना रहा है। रिपोर्ट में कहा गया कि अमेरिकी सहायता के बिना यूक्रेन युद्ध के मैदान में ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकता। आईएसडब्ल्यू ने कहा कि यूक्रेन को अभी सबसे ज्यादा जरूरत वायु रक्षा प्रणाली और तोपखाने की है।

रूस के रक्षा मंत्रालय ने बुधवार को कहा कि मास्को से लगभग 350 किलोमीटर पूर्व में मोर्दोविया क्षेत्र में एक यूक्रेनी ड्रोन को मार गिराया गया। यह जगह यूक्रेन की सीमा से 700 किलोमीटर दूर है।

मोर्दोविया हमले से लगभग एक घंटे पहले, रूस के नागर विमानन प्राधिकरण ने सुरक्षा चिंताओं के मद्देनजर देश के दो सबसे बड़े शहरों निजनी नोवगोरोद और तातारस्तान के कजान में हवाई अड्डों पर उड़ानें रोक दी थीं।

ईरान के हमले पर कार्वाई का निर्णय ले रहा इजराइलः ब्रिटिश विदेश मंत्री कैमरन

एपी। यरूशलम

ब्रिटेन के विदेश मंत्री डेविड कैमरन ने बुधवार को कहा कि सप्ताहांत में ईरान द्वारा किए गए मिसाइल और ड्रोन हमले के जवाब में इजराइल कार्वाई करने का निर्णय ले रहा है। इस बीच, ईरान ने चेतावनी दी कि उसके क्षेत्र में किसी छोटे से हमले का भी कठोर जवाब दिया जाएगा।

इजराइल ने ईरान के अभूतपूर्व हमले का जवाब देने का संकल्प लिया है लेकिन इस बारे में कुछ नहीं कहा है कि कार्वाई कब और कैसे की जाएगी।

गाजा में जारी युद्ध के चलते महीनों की अशांति के बाद नए घटनाक्रम से क्षेत्र में और अधिक अशांति की आशंका उत्पन्न हो गई है।

ईरान के हमले को नाकाम करने में मदद करने वाले इजराइल के सबसे करीबी सहयोगी अमेरिका तथा ब्रिटेन हालात और खराब न होने देने की कोशिश कर रहे हैं।

इस बीच, ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी ने वार्षिक सैन्य परेड को संबोधित करते हुए इजराइल को किसी भी जवाबी कार्वाई को लेकर चेतावनी दी। संभवतः इजराइल की जवाबी कार्वाई के डर से इस सैन्य परेड का टेलीविजन पर प्रसारण नहीं किया गया।

ईरान की आधिकारिक इरना समाचार एजेंसी ने रईसी के हवाले से कहा कि शनिवार का हमला एक सीमित हमला था, और अगर ईरान बड़ा हमला करना चाहता तो इजराइल में कुछ भी नहीं बचता।

कैमरन और जर्मन विदेश मंत्री एनालेना बेयरबॉक दोनों बुधवार को शीर्ष अधिकारियों से मिलने के लिए इजराइल में हैं। इजराइल के सबसे करीबी सहयोगियों में शामिल ब्रिटेन और जर्मनी ने संयम बरतने का आग्रह किया है।

कैमरन ने कहा कि यह स्पष्ट है कि इजराइल ईरान के खिलाफ कार्वाई करने का निर्णय ले रहा है, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि वह इसे इस तरह अंजाम देगा जो सख्त भी हो और इससे ज्यादा संघर्ष भी न बढ़े।

सुनक ने नेतन्याहू से संयम बरतने को कहा

भाषा। लंदन

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने ईरान के मिसाइल हमलों के मद्देनजर अपने इजराइली समकक्ष बेंजामिन नेतन्याहू से संयम बरतने को कहा है। ऐसा माना जाता है कि नेतन्याहू ने शनिवार को इजराइल पर ईरान के अभूतपूर्व प्रत्यक्ष हमले की स्थिति में ब्रिटेन को उसके मजबूत समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के कार्यालय-सह-आवास डाउनिंग स्ट्रीट की ओर से मंगलवार शाम को फोन कॉल की जानकारी दी गई।

इसमें बताया गया, प्रधानमंत्री (सुनक) ने कहा कि ईरान ने बहुत खराब तरीके से गलत अनुमान लगाकर कदम उठाया है और वैश्विक मंच पर वह अलग-थलग पड़ गया है।

अफगानिस्तान में तालिबान ने दो टीवी स्टेशनों पर रोक लगाई

एपी। इस्लामाबाद

तालिबान ने अफगानिस्तान में दो टीवी स्टेशनों का प्रसारण यह कहते हुए रोक दिया है कि वे राष्ट्रीय और इस्लामी मूल्यों को संजोने में विफल रहे हैं।

सूचना मंत्रालय के मीडिया उल्लंघन आयोग के अधिकारी हफीजुल्लाह बराकजई ने कहा कि एक अदालत काबुल स्थित इन दो स्टेशनों की फाइलों की पड़ताल करेगी। अदालत के फैसला सुनाने तक नूर टीवी और बरया टीवी काम नहीं कर सकते। अधिकारी ने कथित उल्लंघन पर कोई और विवरण नहीं दिया।

साल 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद कई पत्रकारों की नौकरी चली गई है और मीडिया प्रतिष्ठान धन की कमी के कारण बंद हो गए हैं या इनके कर्मचारियों ने देश छोड़ दिया है।

भारत और पाकिस्तान से बातचीत के जरिए समाधान निकालने को कहाः अमेरिका

भाषा। वाशिंगटन

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन ने आतंकवादियों को मारने के लिए सीमा पार करने संबंधी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के कथित बयानों पर कहा कि अमेरिका इस मसले में बीच में नहीं पड़ेगा लेकिन उसने भारत और पाकिस्तान को तनाव बढ़ाने से बचने और बातचीत के माध्यम से समाधान तलाशने का अनुरोध किया है।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने मंगलवार को संवाददाताओं से बातचीत में यह बात कही। उनसे आतंकवादियों के सफाए के लिए अन्य देशों में भारत के कथित अभियानों के बारे में प्रश्न पूछा गया था।

यह पूछे जाने पर कि क्या मोदी और सिंह की टिप्पणियों को कनाडा में (खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह) निज्जर की कथित हत्या, (घोषित आतंकवादी गुरपतवंत सिंह) पन्नू की न्यूयॉर्क में हत्या की साजिश और पाकिस्तान में हत्याओं के संदर्भ में इकबालिया बयान के रूप में देखा जा सकता है, इसपर मिलर ने कहा कि अमेरिका इस मसले में नहीं पड़ेगा।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, अमेरिका इसमें नहीं पड़ेगा लेकिन हम भारत और पाकिस्तान दोनों को तनाव से बचने और बातचीत के माध्यम से समाधान तलाशने का आग्रह करते हैं।

अमेरिका ने इस मामले में भारत पर प्रतिबंध लगाने के संबंध में विचार क्यों नहीं किया, इस प्रश्न के उत्तर में मिलर ने कहा, मैं प्रतिबंधों के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। अगर आप प्रतिबंधों के बारे में मुझसे पूछते हैं तो मेरा जवाब है कि हम इस पर सार्वजनिक तौर पर बात नहीं करते....।

दरअसल इस महीने की शुरुआत में रक्षा मंत्री सिंह ने सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए भारत के दृढ़ रुख का जिक्र करते हुए कहा था कि यदि आतंकवादी भारत में शांति भंग करने या आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने की कोशिश करते हैं तो उन्हें करारा जवाब दिया जाएगा और अगर वे पाकिस्तान भाग जाते हैं तो भारत पड़ोसी देश में घुस कर उन्हें मारेगा।

हाल ही में ब्रिटेन के अखबार द गार्डियन ने अपनी एक खबर में कहा था कि भारतीय खुफिया एजेंसियों ने 2019 के बाद से राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कठोर रुख अपनाते हुए पाकिस्तान में आतंकवादियों की हत्याएं कीं हैं। रक्षा मंत्री से इसी संबंध में प्रश्न किया गया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने भी सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए कथित तौर पर इसी प्रकार की कार्वाई की बात कई बार दोहराई है।

ब्रिटेन में धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाने को लेकर पहली संसदीय बाधा पार

एपी। लंदन

ब्रिटिश सरकार की धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाने संबंधी योजना के संबंध में मंगलवार को संसद में पहली बाधा पार हो गई है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक को 15 वर्ष और उससे कम उम्र के किसी भी व्यक्ति के लिए धूम्रपान पर प्रभावी प्रतिबंध लगाने संबंधी योजना के खिलाफ अपनी ही कंजर्वेटिव पार्टी के मुखर विरोध का सामना करना पड़ रहा है। सुनक ने पिछले साल तंबाकू और वेप्स विधेयक का प्रस्ताव रखा था।

इस विधेयक के तहत एक जनवरी, 2009 के बाद जन्मे किसी भी व्यक्ति को तंबाकू उत्पाद बेचना अवैध हो जाएगा। विधेयक को संसद से मंजूरी मिलने पर यह नया कानून दुनिया के कुछ सबसे सख्त धूम्रपान विरोधी कानूनों में से एक होगा। तंबाकू और वेप्स विधेयक के तहत, इस साल 15 वर्ष या उससे कम उम्र के बच्चों को कानूनी तौर पर कभी भी तम्बाकू नहीं बेचा जाएगा। इस कानून के लागू होने के बाद इंग्लैंड में सिगरेट की बिक्री की कानूनी उम्र हर साल उस वक्त तक एक साल बढ़ाई जाएगी, जब तक कि यह अंततः पूरी आबादी के लिए अवैध न हो जाए।

वर्तमान में पूरे ब्रिटेन में 18 वर्ष से कम उम्र के लोगों को सिगरेट या तंबाकू उत्पाद और वेप्स बेचना गैरकानूनी है। मंगलवार देर रात विधेयक पर चर्चा के बाद 383 सांसदों ने इसके पक्ष में मतदान किया, जबकि 67 ने इसका विरोध किया। इस तरह इस विधेयक को लेकर पहली संसदीय बाधा पार हो गई।

मुइज्जू के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप की लीक हुई रिपोर्ट से मालदीव में विवाद

भाषा। माले

मालदीव में संसदीय चुनाव से ठीक पहले, राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के 2018 से किए गए कथित भ्रष्टाचार की रिपोर्ट लीक होने के बाद विपक्षी दलों ने मामले की जांच और उन पर महाभियोग की मांग शुरू कर दी है, वहीं राष्ट्रपति ने आरोप को खारिज कर दिया है।

मालदीव में मजलिस (संसद) के लिए रविवार को चुनाव होने हैं और मुख्य विपक्षी मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी (एमडीपी) और मुइज्जू की पीपुल्स नेशनल कांग्रेस (पीएनसी) के बीच आरोप-प्रत्यारोप तेज हो गया है।

स्थानीय मीडिया की खबरों में कहा गया है कि देश में राजनीतिक तूफान सोमवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक गुमनाम हैंडल हसन कुरुसी द्वारा एक किए गए एक पोस्ट से शुरू हुआ। पोस्ट में मालदीव पुलिस सेवा और मालदीव मौद्रिक प्राधिकरण की वित्तीय खुफिया इकाई द्वारा तैयार किए गए दस्तावेजों सहित खुफिया रिपोर्ट लीक कर दी गई, जो कथित तौर पर राष्ट्रपति मुइज्जू से संबंधित है।

समाचार पोर्टल मालदीव रिपब्लिक के अनुसार 2018 की इन रिपोर्ट में राष्ट्रपति मुइज्जू के निजी बैंक खाते में धन अंतरण में अनियमितताओं का दावा किया गया है। रिपोर्ट में वित्तीय कदाचार के 10 महत्वपूर्ण संकेतकों को रेखांकित किया गया है। समाचार पोर्टल ने कहा कि इन संकेतकों से राजनीति से जुड़े व्यक्तियों के साथ संलिप्तता, गबन, रकम के लेनदेन को छिपाने के लिए कॉर्पोरेट संस्थाओं के उपयोग आदि का पता लगता है।

इन आरोपों से देश में राजनीतिक तूफान पैदा हो गया और विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर प्रतिक्रियाएं आने लगीं। मालदीव डेमोक्रेटिक पार्टी और पीपुल्स नेशनल फ्रंट ने पूरे मामले की जांच की मांग की। पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद जमील अहमद ने लीक हुई खुफिया रिपोर्ट के बाद मुइज्जू पर महाभियोग चलाने की मांग की।

समाचार पोर्टल ने दावा किया कि पहली बार वित्तीय खुफिया इकाई की रिपोर्ट लीक हुई है। उसने कहा कि रिपोर्ट या आरोपों की वैधता के संबंध में सरकारी निकायों की कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। मुइज्जू ने मंगलवार देर रात भ्रष्टाचार के आरोपों पर जवाब देते हुए कहा कि विपक्ष उन्हें फंसाने की कितनी भी कोशिश करे, उसे कामयाबी नहीं मिलेगी क्योंकि उन्होंने कोई गलती नहीं की है।

खराब मौसम के कारण पाकिस्तान में मृतकों की संख्या 63 हुई

एपी। पेशावर

पाकिस्तान में बिजली गिरने और भारी बारिश की वजह से 14 लोगों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों के मुताबिक, इसके साथ ही पिछले चार दिनों से जारी बेहद खराब मौसम के कारण कम से कम 63 लोग अपनी जान गंवा चुके हैं।

आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के प्रवक्ता खुर्शीद अनवर ने बताया कि ज्यादातर मौतें पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम में स्थित खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में हुई हैं। प्रांत में इमारत के ढहने से 32 लोगों की मौत हो गई, जिसमें 15 बच्चे और पांच महिलाएं शामिल थीं। अनवर ने बताया कि उत्तर पश्चिम में दर्जनों लोग घायल हुए हैं और 1370 मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में बिजली गिरने और मकान ढहने की घटनाओं में 21 लोगों की मौत गई जबकि बलूचिस्तान में 10 लोगों की मौत की खबर है। अधिकारियों ने अचानक आई बाढ़ के बाद आपात स्थिति की घोषणा कर दी है। बलूचिस्तान में बुधवार को भी बचाव और राहत कार्य जारी है हालांकि बारिश का खतरा अभी भी बना हुआ है।

पाकिस्तान मौसम विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी जहीर अहमद बाबर ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण अप्रैल के महीने में पाकिस्तान में भारी बारिश हो रही है।

इजराइल में ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बीजेपी ने पार्टी को मजबूत बनाने के लिए बैठक की

भाषा। यरूशलम

भारत में संसदीय चुनाव के पहले चरण के मतदान से पहले, इजराइल में ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बीजेपी (ओएफबीजेपी) के सदस्यों ने पार्टी की चुनावी संभावनाओं को मजबूत बनाने के लिए रणनीतियों पर चर्चा की खातिर यहां बैठक की।

वंदे मातरम और अबकी बार 400 पार जैसे नारों के बीच इजराइल में ओएफबीजेपी के लगभग 80 सदस्यों ने मंगलवार शाम बैठक की। यह बैठक उत्तरी इज़राइल के तटीय शहर हर्जलिया में प्रवासी भारतीय पुरस्कार विजेता रीना पुष्करणा के रेस्तरां में हुई।

बैठक में, पिछले 10 साल के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार की उपलब्धियों का विस्तृत विवरण दिया गया। इनमें संविधान की धारा 370 को निरस्त करना, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, गुजरात में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का निर्माण और नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) प्रमुख थे।

सभा के दौरान वंदे मातरम, अबकी बार 400 पार , फिर एक बार मोदी सरकार और जय श्री राम के नारे लगाए गए। बैठक में सदस्यों को भारत में अपने रिश्तेदारों और मित्रों के साथ संवाद करने के लिए कहा गया ताकि उन्हें भाजपा को मत देने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और 400 संसदीय सीट पर जीत का लक्ष्य हासिल करने में उसे मदद दी जा सके।

पुष्करणा इजराइल में ओएफबीजेपी की अध्यक्ष हैं। उन्हें प्रवासी भारतीय पुरस्कार और "भारत-इजराइल संबंधों को मजबूत करने" में उनकी दशकों की सेवा के लिए बधाई दी गई। उन्होंने पीटीआई से कहा कि संगठन अगले सप्ताह इजराइल में एक रैली की योजना बना रहा है।

सभा में कई नई योजनाओं की जानकारी भी साझा की गई जिन्हें मोदी सरकार शुरू करने की योजना बना रही है।

पाकिस्तान अदालत ने दो संसदीय सीटों पर निर्वाचन रद्द किया

भाषा। लाहौर

पाकिस्तान में लाहौर उच्च न्यायालय की अलग-अलग पीठों ने पंजाब प्रांत की दो संसदीय सीटों – गुजरांवाला और लोधरान से पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएलएन) के दो उम्मीदवारों की नेशनल असेंबली में हुई जीत की अधिसूचना को रद्द कर दिया है। इस तरह पार्टी ने दोनों सीटों को गंवा दिया है। डॉन न्यूज की खबर के मुताबिक, मंगलवार को लाहौर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शाहिद करीम ने नेशनल असेंबली-81 (गुजरांवाला) से जीते अजहर कय्यूम नाहरा के खिलाफ एक आदेश पारित किया।

न्यायाधीश ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की अगुवाई वाली पीटीआई द्वारा समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार चौधरी बिलाल इजाज की याचिका पर यह फैसला सुनाया। इजाज के वकील ने मंगलवार को दलील दी कि उनके मुवक्किल को शुरू में 7,791 वोटों से निर्वाचित घोषित किया गया था, लेकिन पाकिस्तान निर्वाचन आयोग (ईसीपी) ने प्रतिवादी नाहरा के अनुरोध पर दोबारा गिनती में उन्हें (नाहरा) 3,100 वोटों के अंतर से विजई घोषित कर दिया।

भीषण लू के कारण आंग सान सू ची को जेल से घर पर नजरबंदी में भेजा गयाः म्यांमा

एपी। बैंकाक

म्यांमा की सैन्य सरकार ने बुधवार को कहा कि अपदस्थ नेता आंग सान सू ची को भीषण लू के बीच स्वास्थ्य संबंधी कारणों से जेल से स्थानांतरित करके घर में नजरबंदी में रखा गया है।

सैन्य सरकार ने पारंपरिक नववर्ष के दौरान इस सप्ताह तीन हजार से अधिक कैदियों को माफी दी है।

सेना के प्रवक्ता मेजर जनरल जनरल ज़ॉ मिन तुन ने मंगलवार देर रात विदेशी मीडिया के प्रतिनिधियों को बताया कि सू ची (78) और उनकी सरकार के कार्यकाल के दौरान राष्ट्रपति रहे विन मिंट (72) उन बुजुर्ग कैदियों में शामिल हैं जिन्हें तेज गर्मी के कारण जेल से घर में नजरबंदी में रखा गया है। हालांकि इस कदम के बारे में म्यांमा में सार्वजनिक तौर पर घोषणा नहीं की गई है।

सू ची को घर में नजरबंद रखने का कदम ऐसे वक्त पर उठाया गया है जब सेना को लोकतंत्र समर्थकों और उनके जातीय अल्पसंख्यक गुरिल्ला बलों से लड़ाई में बड़ी हार का सामना करना पड़ रहा है।

म्यांमा में 2021 में सेना ने निर्वाचित सरकार को बेदखल कर सत्ता अपने हाथ में ले ली और सू ची को कैद कर लिया था। सेना के इस कदम के बाद देशभर में प्रदर्शन हुए थे जिसमें सेना ने लोकतंत्र व्यवस्था बहाल करने की मांग को लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रही जनता के खिलाफ बलपूर्वक कार्वाई की थी।

देश की नेता सू ची राजधानी नेपीताव में मुख्य जेल के विशेष रूप से निर्मित प्रकोष्ठ में विभिन्न मामलों में 27 साल की जेल की सजा काट रही हैं। म्यांमा के मौसम विभाग ने कहा कि राजधानी में मंगलवार दोपहर को तापमान 39 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। पूर्व राष्ट्रपति विन मिंट म्यांमा के बागो क्षेत्र के ताउंगू में आठ साल की जेल की सजा काट रहे हैं।

ऐसी खबरें भी आई हैं कि जेल में सू ची की तबियत बिगड़ रही है। पिछले वर्ष सितंबर में भी खबरें मिलीं कि सू ची को निम्न रक्तचाप की शिकायत है, उन्हें भूख नहीं लग रही और चक्कर आते हैं लेकिन उन्हें कारागार प्रणाली से इतर, बाहर से किसी भी तरह की इलाज की सुविधा मुहैया कराने से मना कर दिया गया था। हालांकि इन खबरों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की जा सकी।

लंदन में रहने वाले सू ची के छोटे बेटे किम एरिस ने एक साक्षात्कार में कहा था कि उन्होंने सुना है कि उनकी मां बेहद बीमार हैं, उन्हें मसूड़ों में दिक्कत है और वह कुछ खा-पी नहीं पा रही हैं।

एरिस लंदन में रहते हैं। उन्होंने कहा था कि म्यांमा की सैन्य सरकार पर उनकी मां और अन्य राजनीतिक कैदियों को रिहा करने के लिए दबाव डाला जाना चाहिए।

भारत में यकीनन यह मोदी युग हैः अमेरिकी स्तंभकार सदानंद धूमे

भाषा। वाशिंगटन

दक्षिण एशिया मामलों के एक प्रख्यात अमेरिकी विशेषज्ञ और स्तंभ लेखक का कहना है कि भारत में यह यकीनन मोदी युग है और देश में होने जा रहे लोकसभा चुनाव में सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थिति स्पष्ट तौर पर मजबूत है और वह तीसरी बार सत्ता में वापसी करेगी।

वॉल स्ट्रीट जर्नल के लिए दक्षिण एशिया मामलों के स्तंभकार तथा थिंक टैंक अमेरिकन इंटरप्राइज इंस्टीट्यूट से जुड़े सदानंद धूमे ने पीटीआई को दिए एक साक्षात्कार में यह बात कही।

धूमे ने कहा कि भारत में यह मोदी युग है।

उन्होंने कहा, भारतीय संदर्भों में निस्संदेह यह मोदी युग है। जैसे 2015 से अमेरिकी राजनीति में ट्रंप युग रहा है, भले ही वह सत्ता में हों या नहीं हों। भारत में लगभग 2013 से स्पष्ट तौर पर मोदी युग है...।

उन्होंने कहा, आप चाहें उन्हें पसंद करें या उनसे घृणा करें लेकिन वह राष्ट्रीय चर्चा के केन्द्र में हैं। अगर आप इंदिरा गांधी के समय से लेकर अब तक की राजनीति पर नजर दौड़ाएं तो आप पाएंगे कि कोई भी ऐसा नेता नहीं है जो राष्ट्रीय चर्चा में इस तरह से केन्द्र में रहा हो।

धूमे ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार ने आर्थिक मोर्चे पर काफी अच्छा काम किया है।

उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता काफी ऊंची बनी हुई है। यदि आप सर्वेक्षणों को देखें, तो यह 80ः के आसपास है जो विश्व नेताओं के लिए यदि उच्चतम नहीं तो सबसे अधिक में से एक है। एक बात यह भी है कि कई मायनों में विपक्ष वास्तव में ध्वस्त हो गया है। पहले 2014 में और फिर 2019 में कांग्रेस लगातार दो निराशाजनक प्रदर्शनों के बाद फिर से संभल नहीं हो पाई है।

धूमे ने कहा कि ऐतिहासिक रूप से भारत लंबे समय से एक ऐसा देश रहा है जिसमें केवल एक शक्तिशाली राष्ट्रीय पार्टी रही है। यदि आप 60, 70, 80 के दशक को देखें, तो उस पर कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व था और अब उस पर भाजपा का प्रभुत्व है, उस हद तक नहीं जितना कभी कांग्रेस का प्रभुत्व था।

उनका कहना था, भारत में मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस अपना उत्तराधिकारी नेतृत्व तैयार करने के लिए कोई व्यवस्था नहीं बना पाई है, जैसा कि दुनिया भर में सफल राजनीतिक दलों ने किया है। अमेरिका में चाहे वह लेबर पार्टी हो या कंजर्वेटिव पार्टी या डेमोक्रेटिक पार्टी। जब आप चुनाव हारते हैं तो आम तौर पर आपको नया नेतृत्व मिल जाता है।

धूमे ने कहा, लेकिन कांग्रेस नहीं जानती कि यह कैसे करना है क्योंकि यह एक परिवार संचालित पार्टी बन गई है।

भारत के संसदीय चुनाव पिछले कुछ समय की तुलना में सबसे महत्वपूर्ण होंगेः अमेरिकी प्रोफेसर

भाषा। वाशिंगटन

भारतीय मूल के एक प्रतिष्ठित अमेरिकी प्रोफेसर ने मंगलवार को यहां कहा कि भारत में इस सप्ताह शुरू होने वाले संसदीय चुनाव पिछले कुछ समय की तुलना में सबसे महत्वपूर्ण चुनाव होंगे।

जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर इरफान नूरुद्दीन ने पीटीआई-भाषा को दिए साक्षात्कार में कहा कि भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों में गिरावट के संबंध में आलोचना "थोड़ी ज्यादा" लगती है, लेकिन कर अधिकारियों का उपयोग करके "नेताओं को निशाना बनाने" के मामलों की अधिक पड़ताल की जरूरत है। प्रतिष्ठित जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय में भारतीय राजनीति विषय के प्रोफेसर हमाद बिन खलीफा अल सानी नूरुद्दीन ने कहा, पिछले कुछ समय की तुलना में ए चुनाव हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। एक ओर, आपके पास एक बहुमत वाली सरकार है जो अपने बहुमत का विस्तार करना चाह रही है, लेकिन इससे भारत के साथ-साथ विदेश में भी इस बात को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं कि भारत को लोकतांत्रिक पतन, विरोध जताने को लेकर डर, धमकी, विशेष रूप से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जैसी चर्चित हस्ती की गिरफ्तारी और मीडिया की स्वतंत्रता को लेकर चिंता का सामना करना पड़ सकता है।

उन्होंने कहा, लेकिन अंततः यह चुनाव भारतीय लोगों के लिए है। और मुझे लगता है कि दुनिया की नजरें मतदान की दर और इस बात पर रहेंगी कि चुनाव कितने प्रतिस्पर्धी हैं ताकि परिणाम चाहे जो भी हो, भारत के लोकतंत्र में विश्वास एक बार फिर से बहाल हो सके।

नूरुद्दीन ने कहा, "भारत में लोकतंत्र के बारे में चिंताएं कुछ ज्यादा ही बढ़ी हुई लगती हैं क्योंकि इस समय हमारे पास अब भी एक प्रतिस्पर्धी पार्टी परिदृश्य है, जिसमें कई पार्टियां काफी स्वतंत्र रूप से सरकार की आलोचना कर रही हैं"।

उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र का हिस्सा है। प्रोफेसर ने कहा, दूसरी ओर, मुझे लगता है कि विशेष रूप से कुछ खास राजनेताओं और सार्वजनिक हस्तियों को निशाना बनाने के लिए कर अधिकारियों के उपयोग के बारे में चिंता एक ऐसी चीज है जिसकी अधिक पड़ताल की आवश्यकता है।

टी20 विश्वकप के लिए भारतीय टीम में नए चेहरों की संभावना नहीं

भाषा। नई दिल्ली

अमेरिका में होने वाले आगामी टी20 विश्व कप के लिए इस महीने के अंत तक जब भारतीय टीम को अंतिम रूप दिया जाएगा तो इसमें आईपीएल में अच्छा प्रदर्शन करने वाले किसी नए खिलाड़ी को चुने जाने की संभावना नहीं है लेकिन कुछ परखे हुए क्रिकेटरों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने अस्थाई 15 सदस्ईय टीम घोषित करने के लिए एक मई की तारीख तय की है जिससे अजीत अगरकर और उनके साथियों को टीम के प्रत्एक सदस्य के फिट होने की स्थिति में कुछ स्पष्ट विकल्प चुनने होंगे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने गोपनीयता की शर्त पर पीटीआई से कहा, इसके लिए कोई प्रयोग या फिर मैदान के प्रदर्शन से चयन नहीं होगा। भारत के लिए जो खिलाड़ी खेलते हैं और जिन्होंने टी20 अंतरराष्ट्रीय तथा आईपीएल (इंडियन प्रीमियर लीग) में निरंतर अच्छा प्रदर्शन किया है, उन्हें चुना जाएगा। इससे साफ लगता है कि शुभमन गिल और यशस्वी जायसवाल में से कोई एक टीम में जगह बनाने से चूक सकता है लेकिन अगर अंतिम एकादश में दोनों को चुना जाता है तो फिर दो फिनिशर रिंकू सिंह और शिवम दुबे में से किसी एक को ही जगह मिल सकती है। वहीं दूसरे विकेटकीपर के स्थान के लिए भी फैसला करीबी हो सकता है जिसमें संजू सैमसन को जितेश शर्मा, केएल राहुल और ईशान किशन से प्रतिस्पर्धा मिलेगी। राहुल और किशन शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी करते हैं और इस आईपीएल में इन दोनों ने अभी तक मध्यक्रम में बल्लेबाजी का प्रयास नहीं किया है जिससे चयनकर्ताओं के लिए निचले क्रम में उनके प्रदर्शन का विश्लेषण करना मुश्किल होगा। हार्दिक पंड्या की गेंदबाजी फिटनेस हालांकि चिंता का विषय बनी हुई लेकिन उनके चयन को लेकर कोई संदेह नहीं दिखता। उन्हीं की तरह विराट कोहली को शामिल करने पर भी कोई संदेह नहीं है। वहीं कप्तान रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, रविंद्र जडेजा, ऋषभ पंत, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज और कुलदीप यादव का चयन निश्चित है। ए 10 खिलाड़ी अगर फिट हैं तो निश्चित रूप अमेरिका की उड़ान भरेंगे। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने सिराज को आराम दिया है क्योंकि वह लगातार खेल रहे हैं और उनके कार्यभार प्रबंधन की जरूरत है। गिल और जायसवाल के बीच में चयन की बात की जाए तो इनमें से गुजरात टाइटन्स के कप्तान ने ज्यादा रन जुटाए हैं। लेकिन जायसवाल की बात की जाए तो चयन समिति आईपीएल में उनके कुछ कम स्कोर को देखते हुए उनकी अनदेखी नहीं कर सकती। साथ ही वह शीर्ष चार में केवल एकमात्र बाएं हाथ के बल्लेबाज हैं जो अच्छी चीज है। लेकिन अगर गिल लगातार रन बनाते रहते हैं तो चीजें काफी मुश्किल हो जाएंगी। वर्ना चयनकर्ता दोनों को शामिल कर सकते हैं तथा शिवम और रिंकू में से किसी एक को बाहर कर सकते हैं। रिजर्व स्पिनर के स्थान के लिए तीन क्रिकेटरों में प्रतिद्वंद्विता होगी जिसमें अक्षर पटेल, युजवेंद्र चहल और रवि बिश्नोई शामिल हैं। अक्षर जहां बाएं हाथ के स्पिनर हैं तो उपयोगी बल्लेबाज भी हैं। चहल ने अपने नौ साल के अंतरराष्ट्रीय करियर में अभी तक एक भी टी20 विश्व कप नहीं खेला है, लेकिन वह गेंदबाजी कौशल में अन्य दोनों से कहीं आगे हैं। लेकिन बार बार महत्वपूर्ण टीम से उन्हें बाहर किया जाना जून में होने वाले टूर्नामेंट में उनके चयन पर बड़ा सवाल खड़ा करता है।

एक पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और अब प्रसारक ने इम्पैक्ट प्लेयर नियम पर दिलचस्प जानकारी देते हुए कहा कि यह नियम टीम चयन में नुकसान पहुंचा रहा है। उन्होंने कहा, एक शानदार 12 खिलाड़ियों की टीम के क्रिकेट मुकाबले का यह इम्पैक्ट प्लेयर नियम आईपीएल के दर्शकों के लिए बहुत ही अच्छा है लेकिन भारतीय क्रिकेट के लिए यह नुकसानदायक है। इसने आलराउंडर की भूमिका को खत्म कर दिया है इसलिए आधे फिट हार्दिक पंड्या भी काफी अहम है क्योंकि वह गेंदबाजी कर सकते हैं। उन्होंने कहा, अगर यह नियम नहीं होता तो चेन्नई सुपर किंग्स के एमएस धोनी (रुतुराज गायकवाड़ नहीं) बतौर कप्तान दुबे को गेंदबाजी नहीं कराने का जोखिम उठा सकते थे? चयनकर्ताओं को दुबे की गेंदबाजी फॉर्म नहीं पता। उन्होंने कहा, इसी तरह राहुल तेवतिया जैसा खिलाड़ी अच्छा फिनिशर होने के बावजूद दौड़ में नहीं है जबकि वह अच्छा लेग ब्रेक गेंदबाज भी है। वह इस नियम के कारण अब गेंदबाजी नहीं करता। इससे किसका नुकसान है? राष्ट्रीय टीम का ही ना। रियान पराग, मयंक यादव, अभिषेक शर्मा और हर्षित राणा जैसे सभी नए खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। लेकिन पता चला है कि चयन समिति उन्हें विश्व टी20 जैसे उच्च स्तर के टूर्नामेंट में परखने के बजाय द्विपक्षीय क्रिकेट से ही सहज बनाने की प्रक्रिया का अनुकरण करेगी। जिम्बाब्वे और श्रीलंका के खिलाफ सफेद गेंद की दो श्रृंखला होंगी जिसमें ए युवा खिलाड़ी भारत के लिए पदार्पण की कतार में होंगे। नीतिश रेड्डी गेंदबाजी आलराउंडर हैं, वह पिछले साल श्रीलंका का दौरा करने वाली इंडिया इमर्जिंग टीम का हिस्सा थे। वह भी इसी राह पर चल सकते हैं।यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या बीसीसीआई मयंक यादव, हर्षित राणा और आकाश मधवाल जैसे खिलाड़ियों को नेट गेंदबाज के तौर पर ले जाती है या नहीं क्योंकि इससे उन्हें अच्छा मौका मिलेगा।

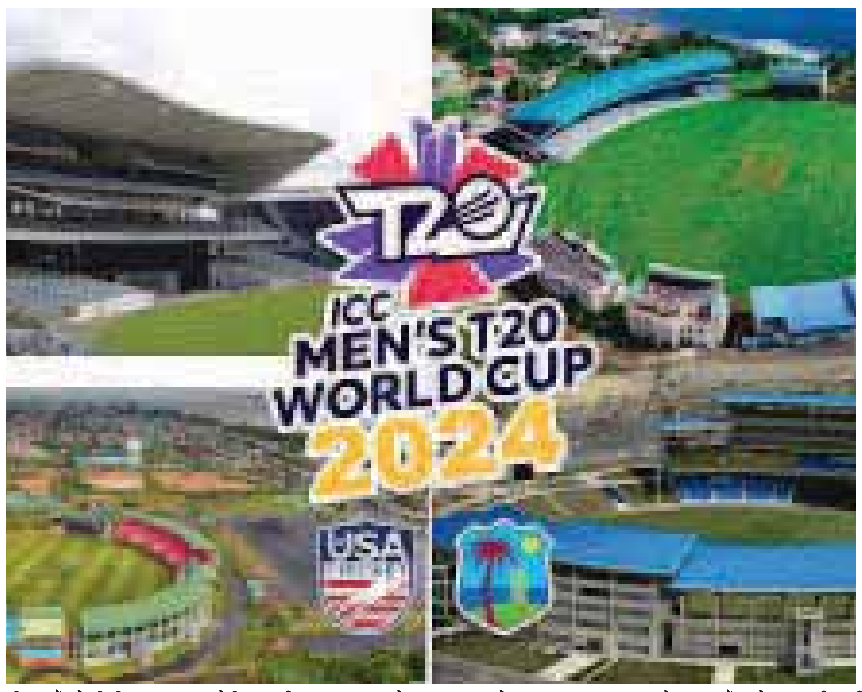

दौड़ में शामिल संभावित खिलाड़ी

विशेषज्ञ बल्लेबाज (6): रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, रिंकू सिंह आलराउंडर (4): हार्दिक पंड्या, रविंद्र जडेजा, शिवम दुबे, अक्षर पटेल। विशेषज्ञ स्पिनर (3): कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, रवि बिश्नोई। विकेटकीपर बल्लेबाज (3): ऋषभ पंत, केएल राहुल और संजू सैमसन ।तेज गेंदबाज (4): जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, अर्शदीप सिंह और आवेश खान।

दिल्ली ने गुजरात को 6 विकेट से हराया

पंत और गेंदबाज चमके 8.5 ओवर में हासिल कर ली जीत, लीग में गुजरात का यह सबसे छोटा स्कोर

भाषा। अहमदाबाद

दिल्ली कैपिटल्स ने कप्तान ऋषभ पंत और गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन की बदौलत बुधवार को यहां कम स्कोर वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मैच में गुजरात टाइटन्स को छह विकेट से शिकस्त दी। दिल्ली कैपिटल्स ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला करते हुए गुजरात टाइटन्स को 17.3 ओवर में 89 रन पर ढेर कर दिया जो इस सत्र में किसी भी टीम का सबसे कम स्कोर है। गुजरात टाइटन्स का यह आईपीएल में अब तक का सबसे कम स्कोर भी था। पिछले कुछ मैचों में दिल्ली कैपिटल्स के गेंदबाज असरदार नहीं रहे थे लेकिन आखिरकार इस मैच में जलवा दिखाने में सफल रहे। मुकेश कुमार सबसे ज्यादा सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 14 रन देकर तीन विकेट झटके जबकि इशांत शर्मा ने आठ रन देकर दो और ट्रस्टिन स्टब्स ने अपने एक ओवर में दो विकेट हासिल किए।गुजरात टाइटन्स की बल्लेबाजी काफी खराब रही, उसके लिए केवल तीन खिलाड़ी दोहरे अंक तक पहुंचे जिसमें से राशिद खान ने सबसे ज्यादा 24 गेंद में 31 रन बनाए जिन्होंने टीम की पारी का एकमात्र छक्का भी लगाया।दिल्ली कैपिटल्स ने यह लक्ष्य महज 8.5 ओवर में चार विकेट पर 92 रन बनाकर हासिल कर लिया जिससे उसके रन रेट में भी इजाफा हुआ। पंत की कप्तानी लाजवाब रही, जिन्होंने सही समय पर गेंदबाजों को लगाने के अलावा स्टंप के पीछे शानदार प्रदर्शन किया और फिर 11 गेंद में नाबाद 16 रन बनाकर जीत दिलाई।यह विकेटकीपर बल्लेबाज विकेट के पीछे काफी फुर्तीला रहा, उन्होंने विकेट के पीछे कैच लपकने के अलावा शानदार स्टंपिंग भी की और टी20 विश्व कप को देखते हुए उनका प्रदर्शन भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छा संकेत है। दिल्ली कैपिटल्स के लिए जेक फ्रेजर मैकगुर्क ने 20 रन, शाई होप ने 19 रन और अभिषेक पोरेल ने 15 रन का योगदान दिया। बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद कप्तान शुभमन गिल (08) ने खलील अहमद की गेंद पर पारी का पहला शॉट लगाया। गिल ने फिर इशांत की गेंद को ऑफ साइड पर गैप से निकालकर चौका लगाया। लेकिन अगली ही फुल लेंथ गेंद पर गिल सीधे कवर पर पृथ्वी साव को कैच देकर आउट हो गए। साई सुदर्शन (12) ने लगातार दो चौके से शुरूआत की जिसमें एक्स्ट्रा कवर पर एक बेहतरीन चौका भी शामिल था। पंत ने इशांत के बजाय मुकेश कुमार को गेंदबाजी के लिए लगाया। इस गेंदबाज ने अपने पहले ओवर की पांचवीं गेंद पर ऋद्धिमान साहा (02) का विकेट झटक लिया। चोटिल डेविड वार्नर की जगह खेल रहे सुमित कुमार ने शानदार क्षेत्ररक्षण का नमूना पेश किया और नॉन-स्ट्राइकर छोर पर सीधे थ्रो से सुदर्शन को रन आउट कर दिया। तीन विकेट लेने के बाद दिल्ली कैपिटल्स के गेंदबाज अच्छी लय में आ गए और कप्तान पंत ने भी दो कैच और दो स्टंप आउट कर उदाहरण पेश किया। पंत ने इशांत की गेंद पर खतरनाक डेविड मिलर (02) का कैच लपककर गुजरात टाइटन्स को चौथा झटका दिया। पांच ओवर के बाद घरेलू टीम का स्कोर चार विकेट पर 30 रन था। इशांत ने मिलर को बाईं ओर के कोण लेती गेंद फेंकी जिस पर पंत ने कैच लिया लेकिन जोरदार अपील के बावजूद अंपायरों ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

पंत ने हालांकि रिव्यू करने का फैसला किया और अल्ट्राएज में पता चला कि मिलर ने बल्ला गेंद से छुआया था। इसके बाद गुजरात टाइटन्स की मुसीबत बढ़ती ही जा रही थी। पंत ने स्टब्स को गेंदबाजी के लिए लगाया जिन्होंने पहले अभिनव मनोहर को और फिर शाहरूख खान को आउट किया। बाएं हाथ के स्पिनर अक्षर पटेल की गेंद राहुल तेवतिया के पैड पर लगी और इस गेंदबाज की अपील के बाद अंपायर ने अपनी उंगली उठा दी।

टाइम पत्रिका में 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में शामिल हैं पहलवान साक्षी मलिक

नई दिल्ली। ओलंपिक पदक विजेता भारतीय पहलवान साक्षी मलिक को टाइम पत्रिका ने 2024 के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में शामिल किया है। कुश्ती में भारत की एकमात्र महिला ओलंपिकपदक विजेता साक्षी को भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह द्वारा महिला पहलवानो के कथित यौन उत्पीड़न के खिलाफ उनकी लड़ाई के लिए इस सूची में जगह दी गई है। सूची में अन्य भारतीयो में अभिनेत्री आलिया भट्ट, इंडो-ब्रिटिश अभिनेता देव पटेल और माइक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सत्या नडेला शामिल है। साक्षी ने दो बार की विश्व चैम्पियनशिप की कांस्य पदक विजेता विनेश फोगाट और तोक्यो ओलंपिक के कांस्य विजेता बजरंग पूनिया के साथ यहां जंतर-मंतर पर बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया था। इन्होने देश की महिला पहलवानो को डराने धमकाने और कथित तौर पर यौन उत्पीड़न करने के लिए उनकी गिरफ्तारी की मांग की थी।

हमें अपनी गलतियों से सीखना होगा: श्रेयस

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने इंडियन प्रीमियर लीग मैच में मंगलवार को यहां राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ 223 रन के स्कोर का बचाव करने में नाकाम रहने के बाद कहा कि उनकी टीम को गलतियो से सीखना होगा और मजबूत वापसी करनी होगी।नाइट राइडर्स के 224 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रॉयल्स की टीम 13वे ओवर मे छह विकेट पर 121 रन बनाकर संकट मे थी लेकिन जोस बटलर (60 गेंद मे नाबाद 107 रन, नौ चौके, छह छक्के) के नाबाद शतक से अंतिम गेंद पर आठ विकेट पर 224 रन बनाकर जीत दर्ज करने मे सफल रही।सुनील नारायण ने इससे पहले ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 56 गेंद मे छह छक्को और 13 चौको से 109 रन की पारी खेली जिससे नाइट राइडर्स ने छह विकेट पर 223 रन बनाए। अय्यर ने मैच के बाद कहा, जो हुआ उसे समझाना मुश्किल है, इसका सामना करना होगा और आगे बढ़ना होगा।

रिंकू ने विशेषज्ञ सलामी बल्लेबाज के रूप में नारायण की सफलता का श्रेय गंभीर को दिया

कोलकाता। रिंकू सिंह का मानना है कि आईपीएल के मौजूदा सत्र मे कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के लिए सुनील नारायण से पारी का आगाज कराना मास्टरस्ट्रोक (चीजें बदलने वाला कदम) साबित हुआ है और वेस्टइंडीज के इस खिलाड़ी को ऊपरी क्रम में भेजने का श्रेय टीम के मार्गदर्शक गौतम गंभीर को जाना चाहिए।नारायण ने मंगलवार को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ 56 गेंद मे 109 रन बनाकर अपना पहला टी20 शतक बनाया। मौजूदा सत्र मे बल्लेबाजी क्रम मे शीर्ष पर उनकी फॉर्म उल्लेखनीय रही है। उन्होने निचले क्रम मे बल्लेबाजी करते हुए पिछले तीन सत्र मे केवल 154 रन बनाए थे जबकि इस सत्र मे बतौर सलामी बल्लेबाज छह मैच मे 276 रन बना चुके है।ईडन गार्डन्स मे यादगार शतक बनाने के बाद नारायण ने 2017 के बाद पहली बार पारी का आगाज करने का मौका देने के लिए पूर्व कप्तान गंभीर को श्रेय दिया।

दर्शकों का बर्ताव हार्दिक पंड्या को प्रेरित ही करेगा: श्रेयस गोपाल

मुल्लांपुर। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पंड्या को मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में दर्शकों से लगातार हूटिंग का सामना करना पड़ रहा है और बुधवार को उनके साथी श्रेयस गोपाल ने कहा कि इससे वह प्रेरित ही होंगे और मजबूती से वापसी कर अच्छा प्रदर्शन करेंगे। पंड्या को आईपीएल 2024 के लिए मुंबई इंडियंस का कप्तान घोषित किया गया जिससे उन्होंने खेल प्रेमियों के पसंदीदा रोहित शर्मा की जगह ली जिन्होंने फ्रेंचाइजी को पांच ट्राफियां दिलाई। यह चीज खेल प्रेमियों को नागवार गुजरी और उन्होंने सभी स्टेडियमों में पंड्या की हूटिंग कर अपनी निराशा व्यक्त की।

गोपाल ने अपने मित्र पंड्या के बारे में कहा कि मुंबई इंडियंस का यह कप्तान मानसिक रूप से बहुत मजबूत है जिससे वह दर्शकों के व्यवहार से घबराता नहीं। पंजाब किंग्स के खिलाफ मुकाबले की पूर्व संध्या पर प्रेस कांफ्रेंस में गोपाल ने कहा, मैं हार्दिक को एक दशक से जानता हूं और उसमें ज्यादा कुछ नहीं बदला है। वह मजबूत खिलाड़ी है और इस तरह की चीज उसे प्रेरित ही करेगी।

अपने आईपीएल अभियान को पटरी पर लाने के इरादे से उतरेंगे पंजाब और मुंबई

मुल्लांपुर। पंजाब किंग्स और मुंबई इंडियंस निचले हाफ में चल रही दो टीम की जंग में गुरुवार को यहां जब आमने-सामने होंगे तो दोनों इंडियन प्रीमियर लीग में अपने लड़खड़ाते अभियान को फिर से पटरी पर लाने के लिए बेताब होंगे।छह-छह मैचों के बाद दोनों टीमों के समान चार अंक है। दोनों की नेट रन देकर में दशमलव अंकों का अंतर है। पंजाब माइनस 0.218 के नेट रन रेट से सातवें जबकि मुंबई इंडियंस (माइन 0.234) आठवें स्थान पर है।पंजाब और मुंबई दोनों ने चार-चार मैच गंवाए है। दोनों ने अपने पिछले मैच हारे हैं और इस मैच में जीत के साथ वापसी करने की कोशिश करेंगे। पंजाब के लिए अपने शीर्ष क्रम से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराने की चुनौती बढ़ गई है क्योंकि नियमित कप्तान शिखर धवन कंधे की चोट के कारण सात से 10 दिन के लिए बाहर हो गए हैं। इस सत्र में पंजाब की टीम के लिए अंजान भारतीय खिलाड़ियों शशांक सिंह और आशुतोष शर्मा ने अच्छा प्रदर्शन किया है लेकिन ए दोनों निचले क्रम में बल्लेबाजी करते हैं और उन्होंने एक से अधिक बार शीर्ष क्रम के खराब प्रदर्शन की भरपाई की है।प्रभसिमरन सिंह का प्रदर्शन चिंता का विषय है। वह छह मैच में 19.83 की औसत से 119 रन ही बना पाए हैं। भारत के विकेटकीपर बल्लेबाज जितेश शर्मा के लिए भी यही कहा जा सकता है। विश्व कप टीम के लिए चयन निकट आने के साथ जितेश अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित होंगे जो अब तक छह मैच में 17.66 की औसत से मात्र 106 रन बना सके हैं।पंजाब को सैम कुरेन (126 रन और आठ विकेट) और कागिसो रबादा (नौ विकेट) की अपनी विदेशी गेंदबाजी जोड़ी के लिए अधिक समर्थन ढूंढना होगा। अर्शदीप सिंह (नौ विकेट) और हर्षल पटेल (सात विकेट) की भारतीय तेज गेंदबाजी जोड़ी बल्लेबाजों के लिए आसान शिकार रही है। मुंबई इंडियंस को पता है कि उनके पास स्थिति को पलटने के लिए पर्याप्त क्षमता है लेकिन उन्हें लगातार एकजुट होकर प्रदर्शन करने की जरूरत है।

पलक और सुरभि ओलंपिक ट्रायल्स के लिए 10 मी एयर पिस्टल निशानेबाजों की सूची में

नई दिल्ली। रियो डि जिनेरियो मे पेरिस कोटा जीतने वाली युवा निशानेबाज पलक गुलिया को गुरुवार से यहां कर्णी सिंह रेंज मे शुरू होने वाले ओलंपिक ट्रायल्स के लिए पांच महिला 10 मीटर एयर पिस्टल निशानेबाजो मे शामिल किया गया। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने पेरिस ओलंपिक के लिए टीम का चयन करने के लिए मार्च मे पिस्टल और राइफल ट्रायल्स के लिए निशानेबाजो की सूची की घोषणा की थी लेकिन महिलाओ के 10 मीटर एयर पिस्टल वर्ग मे नाम की घोषणा नही की थी क्योकि रियो मे अंतिम ओलंपिक क्वालिफिकेशन चैम्पियनशिप अप्रैल के मध्य मे होनी थी। पलक ने रियो मे कांस्य पदक के साथ देश के लिए 20वां ओलंपिक कोटा हासिल किया था।

मनिका, श्रीजा आईटीटीएफ विश्व कप के ग्रुप चरण से बाहर

नई दिल्ली। भारत की अनुभवी टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा और श्रीजा अकुला बुधवार को मकाऊ के गैलेक्सी एरेना मे आईटीटीएफ विश्व कप मे क्रमशः चीन की वांग मन्यु और गत चैंपियन चेन मेंग के खिलाफ दूसरे दौर के ग्रुप चरण मे हारकर बाहर हो गईं। विश्व रैंकिंग मे 39वें स्थान पर काबिज श्रीजा मौजूदा ओलंपिक चैंपियन और विश्व रैंकिंग मे चौथे स्थान पर काबिज खिलाड़ी से I-3 (4-11 4-11 15-13 2-11) से हार गईं। वह ग्रुप चार मे मेंग के बाद दूसरे स्थान पर रही। मनिका भी दुनिया की नंबर दो खिलाड़ी के खिलाफ 0-4 (6-11 4-11 9-11 4-11) से हारकर दूसरे स्थान पर रहकर बाहर हो गईं। दोनो भारतीय खिलाड़ियो ने इससे पहले मंगलवार को अपने-अपने पहले दौर के ग्रुप चरण के मैच जीते थे।पुरुष और महिला एकल वर्ग मे 16-16 ग्रुप है। ग्रुप चरण मे चार मैच होते है। इसमे जीत और हार का अनुपात अंतिम रैंकिंग निर्धारित करता है। इसी रैंकिंग के आधार पर खिलाड़ी नॉकआउट दौर मे जगह बनाते है।

अब से हर अभ्यास सत्र अहम

ओलंपिक के 100 दिनो की उलटी गिनती पर हरमनप्रीत ने कहा

नई दिल्ली। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने बुधवार को कहा कि पेरिस ओलंपिक के लिए 100 दिन बचे है और ऐसे मे हर दिन, हर अभ्यास और प्रशिक्षण सत्र का इस्तेमाल इसकी तैयारियो को बेहतर करने के लिए किया जाएगा। तोक्यो ओलंपिक का कांस्य पदक विजेता भारत मौजूदा विश्व रैंकिंग मे छठे स्थान पर है। हरमनप्रीत ने कहा कि वे पेरिस मे अपने तोक्यो परिणाम मे सुधार करना चाहते है। इस स्टार ड्रैग-फ्लिकर की टिप्पणी ऑस्ट्रेलिया के हालिया दौरे मे भारत के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद आई, जहां मेजबान टीम ने उन्हें 0-5 से हराया था। हरमनप्रीत ने हॉकी इंडिया की एक विज्ञप्ति मे कहा, हम अभी ऑस्ट्रेलिया के मुश्किल दौरे से लौटे है। एक छोटे से ब्रेक के बाद हम फिर से मैदान मे उतरेंगे। पेरिस ओलंपिक मे केवल 100 दिन बचे है और टीम मे उत्साह बढ़ रहा है। भारतीय कप्तान ने कहा, स्वर्ण पदक जीतने के हमारे साझा लक्ष्य से प्रेरित होकर हमारी टीम की एकजुटता लगातार बढ़ रही है।

कैंडिडेट्स शतरंज: करूआना से भिड़ेंगे गुकेश प्रज्ञानानंदा का सामना होगा नाकामुरा से

टोरंटो। रूस के इयान नेपोमनियाची के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर चल रहे भारत के डी गुकेश कैंडिडेट्स शतरंज टूर्नामेंट के 11वें दौर में यहां अमेरिका के शीर्ष वरीयता प्राप्त फाबियानो करूआना से भिड़ेंगे जबकि आर प्रज्ञानानंदा का मुकाबला अमेरिका के हिकारू नाकामुरा से होगा। टूर्नामेंट में केवल चार दौर का खेल बाकी है और भारत के इन दोनों किशोर खिलाड़ियों गुकेश और प्रज्ञानानंदा के पास अच्छा मौका है। विदित गुजराती ने भी मुकाबले में खुद को बनाए रखा है और उन्हें बस थोड़ा बेहतर प्रदर्शन करने की जरूरत है। शतरंज की वैश्विक संचालन संस्था फिडे के ध्वज तले खेल रहे नेपामनियाची टूर्नामेंट में एकमात्र अजेय खिलाड़ी हैं लेकिन उन्हें अगले दो दौर में कड़े प्रतिद्वंद्वियों से निपटना है। अगले दौर में विदित और नेपामनियाची आमने-सामने होंगे जबकि इसके बाद रूस के खिलाड़ी को प्रज्ञानानंदा से भिड़ना है। ए दो मैच संभवत: टूर्नामेंट की दिशा तय करेंगे और अगली विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर का फैसला करने के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं। गुकेश के लिए करूआना के खिलाफ मुकाबला महत्वपूर्ण होगा क्योंकि भारतीय खिलाड़ी सफेद मोहरों से खेलेगा। इतालवी अमेरिकी करूआना लगातार छठी बार कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में हिस्सा ले रहे हैं लेकिन उन्होंने इसे केवल एक बार जीता है।

दूसरे चरण में बार्सीलोना को हराकर पीएसजी चैंपियन्स लीग सेमीफाइनल में

बार्सीलोना (स्पेन)। एक घंटे से अधिक समय तक एक अतिरिक्त खिलाड़ी से खेल रहे पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) ने दूसरे चरण में बार्सीलोना को हराकर चैंपियन्स लीग फुटबॉल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई। काइलियान एमबापे ने दो गोल दागे जिससे पीएसजी ने मंगलवार को 4-। से जीत दर्ज की और घरेलू मैदान पर पहले चरण में हार के बावजूद 6-4 के कुल स्कोर से सेमीफाइनल में जगह बनाई। फ्रांस के स्टार खिलाड़ी एमबापे के क्लब के साथ आखिरी सत्र में टीम की पहले यूरोपीय खिताब की उम्मीद बरकरार है।बार्सीलोना के डिफेंडर रोनाल्ड अराउजो को 29वें मिनट में ब्रेडली बार्कोला के खिलाफ फाउल के लिए लाल कार्ड दिखाया गया जिसके बाद टीम को बाकी मुकाबला 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा। बार्सीलोना को 12वें मिनट में राफिन्हा ने बढ़त दिलाई जिसके बाद 40वें मिनट में ओसमाने डेम्बेले ने स्कोर।-। कर दिया। विटिन्हा ने 54वें मिनट में गोल करके पीएसजी को 2-। से आगे किया।

एटलेटिको को हराकर डोर्टमंड चैंपियन्स लीग के सेमीफाइनल में

डोर्टमंड (जर्मनी)> मार्सेल सेबिटजर ने एक गोल करने के अलावा दो गोल करने मे मदद की जिससे बोरूसिया डोर्टमंड ने मंगलवार को यहां एटलेटिको मैड्रिड को दूसरे चरण के मुकाबले मे हराकर चैंपियन्स लीग फुटबॉल टूर्नामेंट के सेमीफाइनल मे जगह बनाई। मैड्रिड मे पहले चरण का मुकाबला I-2 से गंवाने के बाद डोर्टमंड ने दूसरे चरण का मुकाबला 4-2 से जीता और कुल 5-4 से स्कोर से दो चरण का मुकाबला जीतकर सेमीफाइनल मे प्रवेश करने मे सफल रहा। जूलियन ब्रेंट ने डोर्टमंड को बढ़त दिलाई जिसके बाद सेबिटजर के पास पर मियान मैटसन ने गोल करके स्कोर 2-0 कर दिया।एटलेटिको के कोच डिएगो सिमियोन ने मध्यांतर के समय तीन बदलाव किए।

सीएमवाईके प्रिंटेक के लिए तथा उसी की ओर से मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा टिन टिन प्रिंटेक प्रा.लि. सी-33 अमौसी इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज लखनऊ से मुद्रित एवं चौथी मंजिल, सहारा शापिंग सेंटर, फैजाबाद रोड, लखनऊ (फोन: 0522-4036600) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक: शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: विजय प्रकाश सिंह।
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।